रामचरितमानस का पाठ

(प्रथम भाग)

लेखक

माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०

अध्यापक, हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

प्रकाशक

साहित्य कुटीर, प्रयाग

प्रकाशक—
शालिग्राम गुप्त,
साहित्य कुटीर,
१६२, ऐलेनगंज.
प्रयाग

प्रथम संस्करण, १९४६

मूल्य ४)

इस भाग के प्रारंभिक आठ पृष्ठ दीक्षित प्रेस, प्रयाग,
और शेष इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग में छपे।

112371

मुद्रक—
मगनकृष्ण दीक्षित,
दीक्षित प्रेस,
प्रयाग

पूज्य गुरु

श्री डा० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्० (पेरिस)

की सेवा में

सादर और सस्नेह

अर्पित

UNIVERSITY LIBRARY
22 MAR 1951

प्रस्तावना

पंद्रह वर्ष हुए, अपने तुलसी-विषयक अध्ययन के प्रसंग में मैंने 'रामचरितमानस की सब से प्राचीन प्रति' शीर्षक एक लेख जनवरी, १९३५ की 'हिंदुस्तानी' में प्रकाशित किया था, जिसमें मैंने अयोध्या के श्रावण-कुंज नामक स्थान में सुरक्षित सं० १६६१ की कही जाने वाली—किंतु जैसा आगे दिखाया गया है वास्तव में सं० १६९१ की—बाल-कांड की एक प्रति का आलोचनात्मक परिचय दिया था। तभी से 'रामचरितमानस' की पाठ-समस्या पर मेरा ध्यान रहा है।

इस बीच सं० १९९३ में श्री विजयानंद त्रिपाठी तथा सं० १९९५ में श्री नंददुलारे वाजपेयी द्वारा संपादित 'रामचरितमानस' के संस्करण लीडर प्रेस तथा गीता प्रेस से प्रकाशित हुए, और वैशाख सं० १९९९ में स्वर्गीय श्री शंभुनारायण चौबे का 'मानस-पाठभेद' शीर्षक लेख 'नागरी-प्रचारिणी पत्रिका' में निकला, जिसमें उन्होंने श्री भागवतदास छत्री द्वारा संपादित मानस के एक प्राचीन संस्करण से कई प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों और संस्करणों के मुख्य पाठभेद प्रकाशित किए।

मेरा कार्य एक भिन्न प्रकार का है। उसका लक्ष्य यह है कि 'रामचरितमानस' के जितने भी पाठ हमें प्राप्त हैं, उनकी वास्तविक स्थिति का निर्धारण करते हुए ग्रंथ के मूल पाठ तक पहुँचने का प्रयास किया जाए। इसमें कहाँ तक कृतकार्य हुआ हूँ, यह आगे की खोजें बताएँगी। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि इस कार्य में मैंने ऐतिहासिक और वैज्ञानिक सिद्धांतों का आश्रय लेकर यथाशक्ति सत्य का अनुसंधान करने का यत्न किया है, और इसके लिए अपनी और दूसरों की पूर्व की मान्यताओं का भी जहाँ आवश्यकता हुई है, निराकरण करने में कोई संकोच नहीं किया है। प्रस्तुत कृति केवल उस पाठान्वेषण को सामने रखती है। इस अन्वेषण द्वारा निर्धारित पाठ को मूल में और पाठांतरों को पाद-टिप्पणी में देते हुए पाठ-शोध संबंधी आवश्यक वक्तव्य के साथ 'रामचरितमानस' का संस्करण स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

मैं भारत कला भवन काशी, और उसके अध्यक्ष श्री राय कृष्णदास, स्वर्गीय श्री शंभुनाथ चौबे, स्वर्गीय श्री कमलाकर द्विवेदी, काशी-नरेश महाराज श्री विभूतिनारायण सिंह, श्रावण कुंज के महंत स्वर्गीय श्री जनक-किशोरी शरण, राजापुर के स्वर्गीय श्री मुन्नीलाल उपाध्याय, मिर्ज़ापुर के श्री हरिदास दलाल, बहोरिकपुर के स्वर्गीय श्री धनंजय शर्मा, और मुँगरा-बादशाहपुर की हिंदू सभा का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने समय-समय पर अपनी अमूल्य प्रतियों का उपयोग करने की सुविधाएँ प्रदान की हैं। इन सभी महानुभावों की कृपा के बिना यह कार्य असंभव था। स्वर्गीय श्री शंभुनाथ चौबे का मैं पुनः आभारी हूं जिनके 'मानस-पाठभेद' शीर्षक उल्लिखित लेख से मुझे दो अप्राप्य संस्करणों के पाठ भी प्राप्त हुए हैं। श्री एल० डी० स्वामीकन्नू पिलाई का आभारी हूँ, जिनकी 'इंडियन क्रॉनॉलोजी' की सहायता से मैंने तिथियों की गणना की है, और श्री डा० सूर्यकांत शास्त्री का आभारी हूँ जिनकी 'रामायण शब्द-सूची' का उपयोग इस ग्रंथ के पाठ-विवेचन खंड में मैंने पग-पग पर किया है। युक्त प्रांतीय पेपर कंट्रोल विभाग का भी मैं आभारी हूँ, जिसने इसके प्रकाशन की सुविधाएँ प्रदान की हैं।

अंत में और सबसे अधिक मैं श्रद्धेय डा० धीरेन्द्र वर्मा, श्री डा० बाबूराम सक्सेना, और श्री डा० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ, जिन्होंने इस ग्रंथ के भूमिका खंड को देखकर यत्र-तत्र कुछ सुझाव देने की कृपा की है।

हिंदी ही नहीं, कदाचित् समस्त आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में विस्तृत पाठ-निरूपण का यह पहला प्रयास है, इसलिए इसमें त्रुटियाँ होना अवश्यंभावी है। इधर कुछ अन्य महान् हिंदी कृतियों की पाठ-समस्या सुलझाने में लगा हुआ हूँ, और यथावसर उन्हें भी सामने रक्खूँगा। आशा है कि संग्रहकर्त्ताओं, विद्वानों और समालोचकों का इस कार्य में आवश्यक सहयोग प्राप्त होगा।

प्रयाग,
२४ दिसंबर, १९४९

माताप्रसाद गुप्त

विषय-सूची

१. भूमिका

प्रतियाँ (पृ० ३) ; प्रतियों की बहिरंग परीक्षा (पृ० ७) ; प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध (पृ० १७) ; प्रतियों की पाठ-संरक्षा (पृ० २४) ; प्रतियों का पाठ-संबंध (पृ० ५२) ; अंतर और उसका समाधान (पृ० ५४) ; संपादन (पृ० ६०) ; सिद्धांत और अपवाद (पृ० ६२) ।

परिशिष्ट—प्रतिलिपि-तिथियों की गणना (पृ० ६९) ।

२. पाठ-चक्र

आवश्यक सूचनाएँ (पृ० ७७)

बालकांड (पृ० ८०) ; अयोध्या कांड (पृ० १०७) ; अरण्य कांड (पृ० ११८) ; किष्किंधा कांड (पृ० १२५) ; सुंदर कांड (पृ० १२९) ; लंका कांड (पृ० १३५) ; उत्तर कांड (पृ० १६९) ।

परिशिष्ट (क)—अतिरिक्त पाठ-चक्र (पृ० १८८) ।

परिशिष्ट (ख)—सं० १७०४ की प्रति के प्रक्षिप्त अंश (पृ० २०१) ।

UNIVERSITY LIBRARY
27 MAR 1951
ALLAHABAD

१

भूमिका

प्रतियाँ

'रामचरितमानस' की हस्तलिखित प्रतियाँ—और उनके आधार पर संपादित संस्करण—उत्तरी भारत में इतने हैं कि उन सबका उपयोग करना किसी भी एक व्यक्ति के बस की बात नहीं है। अनेकानेक प्रतियाँ मेरी ही निगाह से गुज़र चुकी हैं, किन्तु यहाँ उन्हीं का उल्लेख उपयुक्त होगा जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत हुई हैं। साथ ही, कुछ अन्य ऐसी प्रतियों का भी उल्लेख किया जा सकता है जो यद्यपि वस्तुतः महत्त्व-पूर्ण नहीं हैं, किन्तु जो 'मानस' के पाठ-शोध के लिए आवश्यक मानी गई हैं। इस प्रसंग में केवल स्वर्गीय पं० शंभुनारायण चौबे का उल्लेख यथेष्ट होगा, जिन्होंने बड़े परिश्रमपूर्वक 'मानस-पाठभेद' शीर्षक एक लेख में इसी विचार से कई प्रतियों के पाठांतर दिये हैं।[१] सुविधा के लिए नीचे बाईं ओर संकेत-संख्याएँ देते हुए उन प्रतियों की संकेत-संख्याएँ अतः प्रायः उन्हीं के अनुसार दी जा रही हैं, जिनका उन्होंने भी उक्त लेख में उपयोग किया है।

(१) सं० १७२१ वि० की प्रति—यह प्रति इस समय नागरी-प्रचारिणी-सभा, काशी के कलाभवन में सुरक्षित है। इस प्रति का अयोध्याकांड मात्र नहीं है। प्रति सुलिखित है। आकार ११" × ४½" है। यह प्रति अलग-अलग पत्रों पर अपनी लम्बाई में लिपिबद्ध है।

(२) सं० १७६२ की प्रति—यह प्रति नागरी-प्रचारिणी-सभा, काशी के भूतपूर्व पुस्तकाध्यक्ष उपर्युक्त स्वर्गीय पं० शंभुनारायण चौबे के पास थी। प्रति पूर्ण है और सुलिखित है। आकार १०" × ६" है। यह अलग-अलग पत्रों पर अपनी चौड़ाई में लिपिबद्ध है।

(३) छकनलाल की प्रति—यह प्रति इस समय स्वर्गीय महा-महोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी के सुयोग्य पुत्र श्री कमलाकर द्विवेदी के पास मुहल्ला खजुरी, काशी में है। प्रति सुलिखित है। आकार लगभग

१—'नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका' वर्ष ४७, अङ्क १

१३" × ८" है। यह अलग-अलग पत्रों पर अपनी लम्बाई में लिपिबद्ध है। कहा जाता है कि यह प्रति सं० १७१४ की एक प्राचीन प्रति की प्रतिलिपि-परंपरा में है।

(४) रघुनाथदास की प्रति—विक्रम की पिछली शताब्दी के प्रारम्भ में काशी में एक बाबा रघुनाथदास थे, जिनके पास 'रामचरितमानस' की एक हस्तलिखित प्रति थी, जो उस समय आदर की दृष्टि से देखी जाती थी। उसका पाठ लेकर सं० १९२६ तथा उसके लगभग काशी से 'मानस' के कुछ संस्करण प्रकाशित हुए थे। मूल प्रति इस समय अप्राप्य है, उसके आधार पर संपादित इन मुद्रित संस्करणों का ही उपयोग उसके स्थान पर किया जा सकता है।[१]

(५) बंदन पाठक की प्रति—विक्रम की पिछली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में एक प्रसिद्ध रामायणी पं० बंदन पाठक थे। सं० १९४९ में सुधानिवास यंत्रालय, काशी से इन्हीं बंदन पाठक जी की एक हस्तलिखित प्रति के आधार पर 'मानस' का एक संस्करण प्रकाशित हुआ था। मूल प्रति इस समय अप्राप्य है, उसके अभाव में इस संस्करण का ही उपयोग किया जा सकता है।[२]

(६) सं० १७०४ की प्रति—यह प्रति इस समय काशिराज के निजी संग्रहालय में है। इसका आकार लगभग १०" × ४½" है। प्रति सुलिखित है और अलग-अलग पत्रों पर लम्बाई में लिखी हुई हैं। दुर्भाग्यवश इसमें कई पत्रे खंडित हैं। इन पत्रों के स्थान पर नए पत्रे लिखकर रख दिये गये हैं, जो यह हैं : बाल० पत्रा ३०, ५१—६५, १०८, १४२—१७५, १८०, १८४, १९०, २०४, २१५—२१९ तथा उत्तर० पत्रा ४३—७२

(७) कोदंवराम की प्रति—कहा जाता है कि 'रामचरितमानस' का एक पाठ 'बीजक' के नाम से गोस्वामी जी की एक शिष्य-परंपरा में

१—विशेष विवरण 'नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका' वर्ष ४३, अङ्क ३, पृ० २८४-८७, पं० शंभुनारायण चौबे के 'रामचरितमानस' शीर्षक लेख में देखिए।

२—विशेष विवरण : वही, पृ० २९०।

बहुत दिनों तक सुरक्षित रहा है। उस 'बीजक' की उत्तरोत्तर चौथी प्रति के आधार पर केसरिया (जिला चंपारन) के स्वर्गीय कोदवराम जी ने 'मानस' का एक पाठ तैयार किया था, जो पहले-पहल सं० १९५३ में वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हुआ था। वह संस्करण इस समय अप्राप्य है, किन्तु सं० १९९५ में पुनः उसी संस्करण के अनुसार उक्त प्रेस ने 'मानस' का एक संस्करण प्रकाशित किया है। उक्त चौथी प्रतिलिपि इस समय अप्राप्य है,[1] अभाव में सं० १९५३ या सं० १९९५ के संस्करणों का ही उपयोग किया जा सकता है।

(५अ) मिर्ज़ापुर की कुछ प्रतियाँ—मिर्ज़ापुर की प्रतिलिपि की हुई कुछ प्रतियाँ है, जिनका पाठ प्रायः एक ही है। इनमें से एक वहाँ के कोतवाली रोड के बाबू कैलाशनाथ के सं० १८८१ की है और एक मेरे ही पास सं० १८७८ की है।[2] आकार में बाबू कैलाशनाथ की प्रति लगभग १३½″ × ७″ और मेरी प्रति लगभग १२″ × ६″ है। दोनों प्रतियाँ अपनी लम्बाई में लिखी हुई हैं और सुलिखित हैं। बाबू कैलाशनाथ की प्रति का बालकांड नहीं है, मेरी प्रति पूर्ण है।

(६अ) सं० १६६१ की प्रति—यह प्रति श्रावणकुञ्ज, वासुदेवघाट, अयोध्या में है। यद्यपि प्रति पूरी करके रक्खी हुई है, किन्तु प्राचीन अंश बालकांड मात्र है। आकार लगभग ९½″ × ३½″ है। प्रति सुलिखित है, और अलग-अलग पत्रों पर लम्बाई में लिखी हुई है। केवल पाँच पत्रे बालकांड में नये हैं : बाल-पत्रा १—४ तथा ९६

(८, बा०) सं० १९०५ की प्रति—यह प्रति हिन्दूसभा, मुँगरा बादशाहपुर (जिला जौनपुर) के पुस्तकालय में है। इसका आकार

१—कोदवराम जी का स्वर्गवास हो चुका है। सुनने में आया है कि उनके घर पर एक हस्तलिखित प्रति 'मानस' की अवश्य है, किन्तु अरक्षित दशा में और खंडित है; और अधिक इसके विषय में नहीं ज्ञात हो सका है।

२—इसी पाठ की एक अन्य प्रति रायबहादुर पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी के पास भी है। यह प्रति संपूर्ण है और अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक बड़े आकार के पृष्ठों में अपनी चौड़ाई में लिखी हुई है।

८ "× ५½" है। प्रति सुलिखित है और अपनी चौड़ाई में लिपिबद्ध है। यह पूर्ण है और केवल बालकांड की है।

(८, अयो०) राजापुर की प्रति—यह प्रति राजापुर (ज़िला बाँदा) के पं० मुन्नीलाल उपाध्याय और उनके कुलवालों के पास है। इसका आकार लगभग १०" × ४½" है। प्रति पूर्ण और सुलिखित है। लिखावट अलग-अलग पत्रों पर लम्बाई में हुई है। अंत में कोई तिथि या पुष्पिका नहीं दी हुई है। दुर्भाग्यवश सामान्यत: इसके दर्शन मात्र हो पाते हैं और पूरी प्रति का पारायण या मिलान करने की अनुमति नहीं दी जाती। इसकी एक प्रतिलिपि स्वर्गीय लाला सीताराम को किसी प्रकार प्राप्त हो गई थी। उसी के अनुसार उन्होंने सं० १९६४ में देहरादून से अयोध्याकांड मात्र का एक संस्करण प्रकाशित कराया था। मूल प्रति का उपयोग सम्भव न होने के कारण इस संस्करण का उपयोग किया जा सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह केवल अयोध्याकांड की प्रति है।

(८, अर०) सं० १६४१ की प्रति—यह प्रति बदली कटरा, मिर्ज़ापुर, के श्री हरीदास दलाल के पास है। इसका आकार लगभग ९½" × ४½" है। प्रति पूर्ण तथा सुलिखित है और अलग-अलग पत्रों पर अपनी लम्बाई में लिखी हुई है। यह केवल अरण्यकांड की प्रति है।

(८, सुं०) सं० १६६४ की प्रति—यह प्रति मुँगरा बादशाहपुर (ज़िला जौनपुर) के सन्निकट बहोरकपुर ग्राम के निवासी स्वर्गीय धनञ्जय शर्मा से मुझे प्राप्त हुई थी। इसका आकार ९" × ५" है। प्रति पूर्ण तथा सुलिखित है और अलग-अलग पत्रों पर अपनी लम्बाई में लिखी हुई है। यह केवल सुंदरकांड की प्रति है।

(८, लं० १) सं० १६९७ की प्रति—यह प्रति भी मुझे उपर्युक्त धनञ्जय जी से प्राप्त हुई थी। इसका आकार १२½" × ६½" है। प्रति पूर्ण तथा सुलिखित है और अलग-अलग पत्रों पर अपनी लम्बाई में लिखी हुई है। यह केवल लंकाकांड की प्रति है।

(८, लं० २) सं० १७०२ की प्रति—यह प्रति भी मुझे उपर्युक्त धनञ्जय जी से प्राप्त हुई थी। इसका आकार ९½" × ४" है। यह प्रति भी सुलिखित है और अलग-अलग पत्रों पर अपनी लम्बाई में लिखी हुई है।

इसमें अंत के यह पत्रे नहीं हैं : पत्रा १०७-१०९। यह भी लंकाकांड मात्र की प्रति है।

(८, उ०) सं० १६९३ की प्रति—यह प्रति भी मुझे उपर्युक्त धनञ्जय जी से प्राप्त हुई थी। इसका आकार ९″ × ६½″ है। प्रति पूर्ण तथा सुलिखित है और पुस्तक के रूप में अपनी चौड़ाई में लिखी हुई है। यह केवल उत्तरकांड की प्रति है।

(९, बा०) सं० १६४३ की प्रति--यह प्रति कासगंज (ज़िला एटा) के पं० भद्रदत्त शर्मा वैद्य के पास है। इसका आकार ११¼″ × ६″ है। पहला पत्रा तथा बीच के कुछ पत्रे खंडित हैं, किन्तु अंतिम सुरक्षित है। लिखावट अच्छी नहीं है और प्रति की लम्बाई में हुई है। यह केवल बालकांड की प्रति है।

(९, अर०) सं० १६४३ की प्रति—यह प्रति भी उपर्युक्त भद्रदत्त जी के पास है। आकार लगभग १२″ × ६½″ है। इस प्रति के भी कई पत्रे खंडित हैं, जिनमें पहला भी है। अंतिम पत्रा अवश्य सुरक्षित है। लिखावट साधारण है और प्रति की लम्बाई में हुई है। यह केवल अरण्यकांड की प्रति है।

(९, सुं०) सं० १६७२ की प्रति—यह दुलही (ज़िला लखीमपुर) के एक पंडित जी के पास है। आकार अनुमानतः ९″ × ४½″ है। प्रति पूर्ण है। लिखावट अच्छी है और प्रति की लम्बाई में हुई है। यह केवल सुंदरकांड की प्रति है।

प्रतियों की बहिरङ्ग परीक्षा

(१) सं० १७२१ की प्रति—इस प्रति में पुष्पिका केवल उत्तरकांड की समाप्ति पर दी हुई है और वह इस प्रकार है :—

संवत् १७२१ वर्षे जेठ बदी दशमी।

तिथि के साथ वार या अन्य कोई ऐसा विवरण नहीं है जिससे गणना द्वारा तिथि की शुद्धता जानी जा सके। अन्यथा प्रति प्राचीन ज्ञात होती है और इतनी पुरानी हो सकती है।

(२) सं० १७६२ की प्रति—इसकी समाप्ति की पुष्पिका इस प्रकार है :

सं० १७६२ समये अषाढ़ मासे सुकुल पक्षे पंचम्यां। लिखिते फेरू राजपूत। जो देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते। सुभमस्तु।

प्रति के कुछ अन्य कांडों के अंत में भी प्राय: इसी प्रकार की पुष्पिका दी हुई है। केवल तिथियों में अन्तर है। तिथि के साथ वार या अन्य कोई ऐसा विस्तार कहीं नहीं दिया हुआ है जिससे गणना द्वारा तिथियों की शुद्धता देखी जा सके। प्रति प्राचीन अवश्य है और इतनी पुरानी हो सकती है।

(३) छक्कनलाल की प्रति—इस प्रति के विभिन्न कांड सं० १९१६ से १९२१ तक के लिखे हुए हैं। कुछ पृष्ठों को छोड़कर समस्त प्रति महा-महोपाध्याय स्वर्गीय सुधाकर द्विवेदी के पिता श्री कृपाल द्विवेदी की लिखी हुई है। पुष्पिकाओं में आनेवाली तिथियाँ अपने समस्त विस्तार के साथ दी हुई हैं, किन्तु वे इतनी आधुनिक हैं कि गणना प्राय: अनावश्यक है।

(४) रघुनाथदास की प्रति—यह प्रति मुद्रित है और इसके सम्बन्ध में ऊपर के ढंग की समस्याएँ नहीं उठतीं।

(५) बंदन पाठक की प्रति—इस प्रति की समस्या भी रघुनाथदास की प्रति जैसी है।

(७) कोदवराम की प्रति—यह भी मुद्रित है, इसलिए ऊपरवाली समस्याएँ इसके सम्बन्ध में भी नहीं उठतीं; किन्तु, इसकी भूमिका में 'बीजक' पाठ की जिस परम्परा का उल्लेख किया गया है, वह अवश्य विश्वसनीय नहीं ज्ञात होती। इसमें निम्नलिखित दोहे आते हैं, जो पं० शिवलाल पाठक रचित 'मानस-मयंक' में भी मिलते हैं।[1]

ब्रह्म किशोरीदत्त को ग्रंथकार ही दीन्ह।
अल्पदत्त पढ़ि ताहि सों चित्रकूट मों लीन्ह।
रामप्रसादहिं सो दई लहि तातें शिवलाल।
दत्त फणीशहिं जानि निज सो दीन्ही सुख माल।

अत: परम्परा इस प्रकार है :—१. ग्रंथकार—२. किशोरीदत्त—३. अल्पदत्त—४. रामप्रसाद—५. शिवलाल—६. फणीशदत्त। उसमें यह

१—'मानस-मयंक', पृ० २६

भी कहा गया है कि फणीशदत्त (शेषदत्त) ने सं० १९०१ में जीवलाल से यह चौथी प्रतिलिपि कराई थी और उसी से कोदवराम का यह पाठ ग्रहण किया गया है। यदि यह माना जावे कि ६०-६२ वर्ष की अवस्था में—अथवा सं० १६५० के लगभग भी—किशोरीदत्त को कवि ने 'मानस' की प्रति दी तो सं० १९०१ तक २५१ वर्ष होते हैं—और इस लम्बे समय के बीच ग्रंथकार के अतिरिक्त केवल पाँच पीढ़ियाँ बताई गई हैं, इसलिए 'मानस-मयंक' के अनुसार प्रत्येक पीढ़ी प्रायः पचास वर्ष की होती है। यह असंभव ही है। गुरु-शिष्य परम्परा की पीढ़ियाँ औसतन् बीस वर्ष की पाई जाती हैं; और अधिक से अधिक यह औसत पच्चीस वर्ष की हो सकती है। पचास वर्ष की औसत तो किसी दशा में नहीं हो सकती। इसलिए यह कथन अप्रामाणिक ज्ञात होता है।

एक बात और भी इस प्रसंग में विचारणीय है। शिवलाल जी ने 'मानस-मयंक' में 'मानस' से जो उद्धरण दिये हैं, उनका पाठ कोदवराम के पाठ से कुछ स्थलों पर भिन्न और 'बीजक'-परंपरा की कुछ अन्य प्रतियों के पाठ से मिलता है।[1] उदाहरण के लिए लंकाकांड के निम्नलिखित स्थल लिये जा सकते हैं :—

कोदवराम में	'मयंक' तथा एक अन्य प्रति[1] में
६-२-४ करिहौं इहाँ शंभु स्थापना।	थापना
६-३-४ मम कृत सेतु जो दरसन करिहहिं।	करिहीं
६-३-४ सो बिनु स्रम भवसागर तरिहहिं।	तरिहीं
६-५-८ जा कहुँ फिरत निशाचर पावहिं।	जहं
६-७ मम अहिबात न जात।	अचल होइ अहिबात

१—पता लगाने पर केसरिया (ज़िला चंपारन) से यह ज्ञात हुआ है कि 'बीजक' पाठ की एक प्रति वहाँ के कर्मवीर गांधी पुस्तकालय में है। उक्त प्रति के लंकाकांड मात्र का पाठ—और पाठ-भेद लंकाकांड में सबसे अधिक हैं—वहाँ से मैंने मँगवा लिया है। यहाँ पर आशय उसी प्रति से है।

६-१०-२ तोहिं कवन सिखाई ।	केहिं तोहिं सिखाई
६-१० तदपि न तेहि कछु त्रास ।	मन
६-११ एहि बिधि कृपारूप गुन,	करुनासील
६-१२ तव मूरति बिधुउर बसी,	बसति,
सोइ स्यामता भास ।	अभास
६-१२ दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु,	दिसा बिलोकि
६-१६-६ एहि बिधि कहेउ मोरि प्रभुताई ।	मिस कहहु
६-१८-३ खेलत रहा सो होइ गइ भेंटा ।	होइ
६-३२-६ कछु तेहिं लै निज सिरन्हि सँवारे ।	बहु कर
६-३५ मंदोदरि तब रावनहिं,	मंदोदरी निसाचरहिं
६-३७ दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर,	मारे
अजहूँ परतिय देहु ।	अजहुँ पूर पिय
६-३७ कृपासिंधु रघुनाथ भजि	रघुपतिहि
६-५८ बिनु फर सायक मारेउ	सर कपि
६-९७ तेइ जिमि तोरथ कर पाप ।	जिमि कर्म मूढ़ के पाप
६-११०-९ यह खल मलिन सदा	रावन पाप मूल

अतः निर्विवाद रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि कोदवराम का पाठ ही अपनी परंपरा का प्रामाणिक पाठ है । बल्कि ऐसा ज्ञात होता है कि कोदवराम के पाठ में पंडितों ने अपनी ओर से भी पाठ-सुधार कर यत्न किया है, क्योंकि साधारणतः 'मानस-मयंक' तथा उक्त अन्य प्रति के पाठ ही कुछ अन्य शाखाओं की प्रतियों और कुछ अन्य संस्करणों में भी मिलते हैं ।

(६) सं० १७०४ की प्रति—इस प्रति के उत्तरकांड का अंतिम अंश नया लिखा हुआ है और उसमें कोई पुष्पिका नहीं है । बालकांड का भी अन्तिम अंश बाद का है, किन्तु उसमें पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है :—

।। संवत् १७०४ ।। समए पौष सुदि दुइजि ।।२।। लिखितं रघू तिवारी कास्यां मध्ये लोलार्क समीपे ।।

यह शब्दावली रघू तिवारी की हस्तलिखित तो नहीं है, क्योंकि इसकी लिखावट शेष प्रति के प्राचीन अंश की लिखावट से भिन्न है; किन्तु यह संभव है कि शब्दावली रघू तिवारी की ही हो और उनकी लिखी हुई प्राचीन प्रति से ज्यों की त्यों उतार ली गई हो। किन्तु इस विषय में निश्चयपूर्वक कहना कठिन है।

अयोध्याकांड की पुष्पिका में एक विशेषता है, जिसकी ओर ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक होगा। पहले की पुष्पिका थी :--

।। संवत् १६६५ समए अग्रहन सूदि प्रतिपदा लिखितं तुलसीदाशेन ।। किन्तु बाद को "१६६५" के ऊपर कुछ हल्की ही स्याही से "१७०४" तथा "तुलसीदाशेन" के ऊपर उसी प्रकार "रघु तीवारी" बनाया गया है। यह क्रिया इतने भद्दे ढङ्ग पर हुई है कि पहले की लिखावट अब भी प्रायः पढ़ी जा सकती है।

अरण्य, किष्किंधा, सुंदर तथा लंकाकांडों की पुष्पिकाएँ क्रमशः इस प्रकार हैं :--

।। संवत् १७०४ सए पउष शूदी अष्टमी लिखितं रघु तीवारी कास्यां ।।
।। संवत् १७०४ समए पउष शूदी द्वादसी लिखितं रघु तीवारी कास्यां ।।
।। संवत् १७०४ समए माघ बदि पंचमी लिखितं रघु तीवारी कास्यां ।।
।। संवत् १७०४ समए माघ शूदी प्रतिपदा लिखितं रघु तीवारी कास्यां ।।

इन पुष्पिकाओं से अयोध्याकांड की पुष्पिका में कोई विशेष अंतर लिखने के ढङ्ग में नहीं है, केवल अयोध्याकांड की पुष्पिका में "कास्यां" नहीं है। तिथियों के साथ दिन या अन्य कोई ऐसा विवरण किसी भी पुष्पिका में नहीं है जिससे गणना द्वारा तिथियों की शुद्धता देखी जा सके--और अयोध्याकांड की पुष्पिका के सम्बन्ध में भी यही बात दिखाई पड़ती है। अयोध्याकांड का मूल-पाठ और पुष्पिका उसी व्यक्ति की लिखावटें हैं जिस व्यक्ति की लिखावट शेष कांडों के प्राचीन अंश और पुष्पिकाएँ हैं, साथ ही अयोध्याकांड की पुष्पिका भी उतनी ही अशुद्ध

लिखी हुई है जितनी अन्य कांडों की हैं। इसलिए यह प्रकट है कि अयोध्याकांड भी तुलसीदास की लिखावट नहीं है। अन्यथा प्रति के प्राचीन अंश—और अयोध्याकांड भी—पर्याप्त रूप से प्राचीन ज्ञात होते हैं। अयोध्याकांड के सम्बन्ध में या तो यह हो सकता है कि वास्तव में कोई प्रति तुलसीदास की लिखी सं० १६६५ की रही हो जिससे प्रतिलिपि करते समय उसकी पुष्पिका भी उतर आई हो, अथवा यह हो सकता है प्रतिलिपिकार केवल धोखा देना चाहता रहा हो—यह चाहता रहा हो कि उसकी प्रति तुलसीदास का हस्तलेख समझ ली जावे और इसलिए उसने यह जाल किया हो। दोनों अनुमानों में से कौन-सा ठीक है, यह कहना कठिन है।

(५ अ) मिर्जापुर की प्रतियाँ—बाबू कैलाशनाथ की प्रति के उत्तरकांड की पुष्पिका यह है :

॥ श्री संवत् १८८१ मिति भाद्र शुक्ल २ बार गुरु दसखत बेनीराम कायस्थ कै मुकाम मिर्ज्जापुर मध्य सहर महादेव के इमली तर ॥

मेरी प्रति के उत्तरकांड की पुष्पिका इस प्रकार है :

॥ पौष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां भृगुवासरे संवत् १८७८ शाके १७४३ लिपि छकाराम तेवारी विष्णुदासस्यदासः ॥

अन्य कांडों के अंत में भी इसी प्रकार पुष्पिकाएँ दी हुई हैं। तिथियों की गणना करने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती है, क्योंकि वे आधुनिक हैं। प्रतियाँ अपनी तिथियों के समान ही प्राचीन लगती हैं।

(६ अ) १६६१ की प्रति—इसकी पुष्पिका इस प्रकार है :

॥ संवत् १६६१ वैशाख शुदि ६ बुधे ॥

तिथि की गणना करने पर परिणाम यह आता है :[१]

विगत सं० १६६१—मंगलवार
वर्त्तमान सं० १६६१—बुधवार

१—देखिए इसी खंड का परिशिष्ट।

इस परिणाम में यह ध्यान देने योग्य है कि तिथि वर्त्तमान संवत् में ठीक आती है, विगत संवत् में नहीं, जब कि उस समय मध्यदेश भर में विगत संवत् का ही प्रचलन था। इस कारण तिथि की शुद्धता पर सन्देह किया जाना स्वाभाविक है। इस प्रकार का सन्देह मुझे पहले हुआ करता था, इसलिए इधर जब पुनः तिथि की लिखावट और ध्यानपूर्वक देखी, तो ज्ञात हुआ कि पहले संवत् १६९१ लिखा हुआ था, बाद में ९ का ६ बनाकर प्रति को कवि के जीवनकाल की बनाया गया है। १६६१ के दोनों ६ के ऊपर रेफ़ का चिह्न (`) है, जो ग्रंथ भर में कहीं भी ६ के ऊपर नहीं लगा है। रेफ़ का यह चिन्ह ग्रंथ भर में ९ में ही मिलता है, जो सर्वत्र रेफ़ लगाकर ही बनाया गया है। यद्यपि जाल बड़ी सफ़ाई से किया गया है, किन्तु भली भाँति देखने पर संवत् १६६१ के पहले ६ के ऊपर के रेफ़ और दूसरे ६ के ऊपर के रेफ़ में क़लमें और स्याहियाँ दोनों भिन्न हो जाती हैं और इसके अतिरिक्त दूसरे ६ के नीचे के भाग की क़लम और स्याही पहले ६ के नीचे के भाग की क़लम और स्याही से भिन्न हो जाती हैं। पहले ६ और दूसरे ६ के ऊपर के पेट में भी अंतर है। पहले ६ का ऊपर का पेट दूसरे ६ के ऊपर के पेट के पेट की अपेक्षा छोटा है। गणना करने पर भी १६९१ की तिथि विगत संवत् में ठीक आती है,[1] इस कारण यह मानना पड़ेगा कि वास्तविक तिथि १६९१ ही है, १६६१ नहीं।

पुष्पिका में लिपिकार का नाम नहीं आया है। वह पत्रे के एक ओर पृष्ठ के अंत तक पहुँचकर समाप्त हो गई है और दूसरी ओर एक मोटा कागज़ चिपकाकर लिखा हुआ है कि इसके लिपिकार भगवानदास थे, जिनकी लिखी हुई 'विनयपत्रिका' की सं० १६६६ की एक प्रति रामनगर में चौधरी छुन्नीसिंह के यहाँ है, और यह कि लिपिकार का नाम पत्रे के इस ओर लिखा हुआ था, किन्तु पत्रा अनवरत उपयोग के कारण फटा जा रहा था, इस कारण उस पर यह मोटा कागज़ चिपका दिया गया। मैंने इस पत्रे को सूर्य की ओर उठाकर देखा, तो इसमें कहीं भी लिपिकार का नाम या पुष्पिका विषयक कोई अन्य उल्लेख

१—देखिए इसी खंड का परिशिष्ट।

नहीं दिखाई पड़ा। केवल नीचे के भाग में चिपके हुए काग़ज़ की ओर पत्रे पर "सुनाय के लोभाय बस में किया" दिखाई पड़ा, जिसकी ठीक-ठीक संगति नहीं ज्ञात होती।

ऊपर के ही लेखक ने यह भी लिखा है कि प्रति स्वत: कवि द्वारा संशोधित है, क्योंकि संशोधनों की लिखावट राजापुर की लिखावट से मिलती है—और कुछ स्थलों पर जहाँ पूरी पंक्तियों के संशोधन आये हैं, उसने इस प्रकार का स्पष्ट संकेत भी किया है। इन स्थलों पर संशोधनों की लिखावट राजापुर की प्रति की लिखावट से—और गोस्वामी जी का हस्तलेख कही जानेवाली दूसरी लिखावटों से भी—कहाँ तक मिलती है, इसकी जाँच विधिपूर्वक की जा चुकी है,[१] और वहाँ हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि लेखक का यह दावा निराधार है। अब तो यह और भी सिद्ध हो जाता है कि संशोधन कवि कृत नहीं था, क्योंकि उसका देहावसान सं० १६८० में ही हो चुका था, जब कि इस प्रति का लिपिकाल सं० १६९१ है।

(८, बा०) सं० १९०५ की प्रति—प्रति की पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ मिती फागुन बदी ८ बार बिहफै सन् १२५६ संवत १९०५ ॥

तिथि आधुनिक है, गणना इसलिए अनावश्यक प्रतीत होती है। प्रति इतनी प्राचीन अवश्य ज्ञात होती है।

(८, अयो०) राजापुर की प्रति—इस प्रति में कोई पुष्पिका नहीं दी हुई है। सामान्यत: यह गोसाईं जी के हाथ की लिखी मानी जाती रही है, किन्तु ऐसा मानने के लिए कोई कारण नहीं दिखाई पड़ता। लिखावट के आधार पर तो यह कहा ही नहीं जा सकता,[२] प्रति में अशुद्धियाँ इतनी हैं कि इस कथन पर और भी विश्वास नहीं होता।

(८, अर०) सं० १६४१ की प्रति—पुष्पिका इस प्रकार है :

१—देखिए 'इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्टडीज़' १९३७, पृ० २३३-४०; 'हिन्दुस्तानी' १९३७, पृ० ३६७-३७४; तथा लेखक का 'तुलसीदास', पृ० १६३-७०।

२—वही।

॥ सं० १६४१ लिखा रामदास किंकर तुलसीदासजी कौ भदैनी में आसन गंगा तटे ॥

पुष्पिका की लिखावट लेखन-शैली के ध्यान से शेष प्रति के लेखक की नहीं लगती है : तिथि के अंकों में से केवल ६ मूल पाठ और पुष्पिका में एक-सा लिखा है, अन्यथा १ और उससे भी अधिक ४ दोनों में अलग-अलग ढंग से लिखे हुए हैं, "तुलसीदास" नाम में आनेवाले चारों अक्षरों की लिखावटों में भी दोनों में यथेष्ट अंतर है, "अ" मूल में जिस प्रकार बना है, पुष्पिका में उससे नितांत भिन्न ढंग पर बना है। साथ ही तिथि में केवल संवत् का आना और अन्य किसी विस्तार का न आना भी संदेह की पुष्टि करता है।

(८, सुं०) सं० १६६४ की प्रति—पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ संवत् १६६४ मीति कार्तिक शुक्ल १४ ॥ शनिवारे दसखत लाल जगूलाल का दंडवत ॥

गणना करने पर तिथि विगत संवत् में ठीक आती है, किन्तु ध्यानपूर्वक देखने पर यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि १६६४ का पहले ६ का अंक ८ से बनाया हुआ है, ८ के बड़े पेट में नीचे—उसे ६ बनाने के लिए—एक और पेट बढ़ाने के कारण पहले ६ का आकार अन्यत्र आए हुए ६ से बड़ा हो गया है, और यह अंतर १६६४ में आए हुए दोनों ६ की तुलना करने से ही प्रकट हो जाता है। १८६४ की तिथि भी गणना करने पर विगत संवत् में ठीक उतरती है। इसलिए वास्तविक प्रतिलिपि-तिथि १८६४ ही है, १६६४ नहीं, प्रति भी इतनी ही पुरानी ज्ञात होती है।

(८, लं० १) सं० १६९७ की प्रति—पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ संवतु १६९७ ॥ मास माघ बदि ८ रवउ ॥

इस तिथि में भी कदाचित् उसी प्रकार ८ का ६ बनाया गया है जिस प्रकार ऊपर की तिथि में और इसी कारण इस तिथि का ६ भी ग्रंथ में अन्यत्र आये हुए ६ की तुलना में बड़ा हो गया है; किन्तु यह ध्यान योग्य है कि १६९७ तथा १८९७ में से कोई भी तिथि गणना से विगत संवत् में ठीक नहीं आती।

(८, लं० २) सं० १७०२ की प्रति—पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ संबत १७०२ मीती जेस्ठ सुदी ५ बार सुक्रवार के पोथी लंकाकांड समाप्त॥

तिथि गणना से विगत और वर्त्तमान किसी संवत् में ठीक नहीं उतरती। ध्यान से देखने पर यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि ८ के अंक के स्थान पर उसका मुँह बंद करके ७ बनाया गया है—वास्तविक तिथि १८०२ थी, क्योंकि १७०२ में आये हुए ७ की शैली ग्रंथ भर में आये हुए ७ की शैली से भिन्न है : ग्रंथ भर में जितनी बार भी ७ आया है, उसकी नोक ऊपर की ओर मुड़ी हुई है और पुष्पिका में वह नीचे की ओर है। १८०२ की तिथि गणना करने से भी विगत संवत् में ठीक आती है।

(८, उ०) सं० १६९३ की प्रति—पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ लिखा मिती सावन बदी ७ सन् १०४२ सं० १६९३ साल के॥

इस पुष्पिका में सन् के ० के स्थान पर २ था और संवत् के ६ के स्थान पर ८ था, किंतु २ की दुम मिटाकर उसका मुँह बन्द कर दिया गया है, और ८ में, जैसा ऊपर की कुछ जाली तिथियों में हमने देखा है, नीचे एक और पेट बढ़ा दिया गया है। ध्यान से देखने पर यह बनावटें स्पष्ट ज्ञात होती हैं। तिथि में दिन अथवा अन्य कोई आवश्यक विस्तार न होने के कारण उसकी गणना नहीं की जा सकती। प्रति अपनी वास्तविक तिथि के अनुसार ही पुरानी भी ज्ञात होती है।

(९, बा०) सं० १६४३ की प्रति—पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ संवत् १६६४ शाके १५०८...वासी नन्ददास पुत्र कृष्णदास हेत लिखी रघुनाथदास ने कासीपुरी में॥

यह ध्यान देने योग्य है कि पुष्पिका की इस शब्दावली पर स्याही और क़लम फेरी हुई है, इसकी लिखावट शेष प्रति की लिखावट से मेल नहीं खाती है, १६४३ के ६ तथा ४ और इसी प्रकार "शाके" और १५०८ के बीच इतनी जगहें छूटी हुई हैं कि दूसरे अंक तथा अक्षर भी लिखे जा सकते थे और तिथि का मास दिवसादि कोई विस्तार भी नहीं है। अतः तिथि और यह पुष्पिका प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती। प्रति का पाठ भी बहुत अशुद्ध है।[१]

१—विशेष विवरण के लिए देखिए लेखक का 'तुलसीदास' पृ० ८१, ८६ तथा १८५।

(९, अर०) सं० १६४३ की प्रति—पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ श्री तुलसीदास गुरु की आज्ञा सों उनके भ्रातासुत कृष्णदास सोरो क्षेत्र निवासी हेत लिपितं लछिमनदास कासी जी मध्ये सं० १६४३ आषाढ़ शुद्ध ४ शुक्रे इति ॥

यह कुल पुष्पिका पहले लाल स्याही से लिखी गई थी और बाद में इसी पर काली स्याही फेरी गई है, जिससे लिखावट की जाँच शेष प्रति की लिखावट की तुलना में ठीक-ठीक नहीं हो सकती। इसमें १६४३ के ६ को देखने पर यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह ८ में नीचे एक पेट बढ़ाकर बनाया हुआ है, क्योंकि वह इसीलिए अन्यत्र आये हुए ६ की अपेक्षा लंबा हो गया है; उस पर क़लम फेरकर उसको और अंकों की अपेक्षा कुछ मोटा भी कर दिया गया है। १६४३ तथा १८४३ दोनों की तिथियाँ विगत संवत् में गणना से ठीक उतरती हैं। पाठ की दृष्टि से प्रति बहुत अशुद्ध है।[१]

(९, सुं०) सं० १६७२ की प्रति—पुष्पिका में "सं० १६७२" मात्र ग्रंथ की समाप्ति पर आता है। यह अपर्याप्त उल्लेख प्रति की प्राचीनता के विषय में गहरा संदेह उत्पन्न करता है।

प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध

ऊपर की बहिरंग परीक्षा से ज्ञात हुआ होगा कि केवल चार प्रतियाँ—१७२१, १७६२, १६९१ तथा १७०४—वास्तव में प्राचीन कही जा सकती हैं, शेष प्रकट या अप्रकट रूप से प्राय: आधुनिक हैं। विचित्रता की बात यह है कि यह चारों प्रतियाँ परस्पर प्रतिलिपि-सम्बन्ध से संबद्ध हैं।

१७२१ तथा १७६२—यद्यपि दोनों प्रतियों में हरताल लगाकर पाठ-संशोधन किया गया है, किन्तु फिर भी पूर्व का पाठ संशोधन के इन स्थलों पर प्राय: मिल जाता है और देखा यह जाता है कि १७२१ में यह पूर्व का पाठ जहाँ पर अशुद्ध है, वहाँ पर १७६२ में भी अशुद्धि है। इस प्रकार के अशुद्धि-साम्य के स्थल अनेक हैं, यहाँ केवल वही स्थल दिये

१—विशेष विवरण के लिए देखिए 'तुलसीदास' पृ० ८१, ८६ तथा १८८

जा रहे हैं जहाँ पर या तो भूल से कोई अक्षर, शब्द, शब्द-समूह या पंक्ति छूटी हुई अथवा बढ़ी हुई है :—

(१) १७२१ में बालकांड में दोहा-संख्या २२६ के स्थान पर भूल से २२९ लिख उठी है और इसी कारण कांड के अंत तक वास्तविक दोहा-संख्या में ३ की वृद्धि हो गई है। १७६२ में भी यह बात हुई है।

(२) १७२१ में बालकांड का दोहा ९९ भूल से दोहा ९८ के साथ ही एक बार और लिख उठा है, १७६२ में भी इसी प्रकार हुआ है। प्रसंग से यह प्रकट है कि उसका वास्तविक स्थान दोहा-संख्या ९९ है।

(३) १-११२ सामान्य पाठ है : रामकृपातें पारबति सपनेहु तव मन माहिं। 'कृपातें पारबति' के स्थान पर १७२१ में 'कृपारबति' लिख गया है, १७६२ में भी ऐसा ही हुआ है।

(४) १-१२१-६ सामान्य पाठ है : बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी। १७२१ में 'अधम' के स्थान पर 'अधरम' लिख उठा है, १७६२ में भी यह भूल मिलती है।

(५) १-१६७-८ सामान्य पाठ है : जलधि अगाध मौलि बह फेनू। १७२१ में 'जलधि' के स्थान पर 'जल' मात्र लिखा है, १७६२ में भी ऐसा ही है।

(६) १-२१०-छं० सामान्य पाठ है : अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुग नैनन्हि जलधार बही। १७२१ में 'नैनन्हि' के स्थान पर 'नैन्हि' लिख गया है, १७६२ में भी ऐसा ही हुआ है।

(७) १-२२८-५—६ सामान्य पाठ है : मज्जन करि सर सखिन्ह समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता। पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बर मांगा। १७२१ में ऊपर के अंतिम तीन चरण दोबारा उसी स्थान पर लिख उठे हैं और अंतिम चरण प्रथम चरण की शब्दावली के भ्रम से 'निज अनुरूपिह्न समेता' लिख उठा है, १७६२ में भी ठीक इसी प्रकार हुआ है।

(८) १-२७५-६ सामान्य पाठ है : खर कुठार मैं अकरुन कोही। १७२१ में 'अकरुन' के स्थान पर 'अकारुन' लिख गया है, १७६२ में भी ऐसा ही हुआ है।

(९) १-३५६-३ सामान्य पाठ है : उपबरहन बर बरनि न जाहीं। १७२१ में 'बर' लिखने से रह गया है, १७६२ में भी ऐसा ही हुआ है।

(१०) ६-११-४ सामान्य पाठ है : तापर रुचिर मृदुल मृगछाला। १७२१ में 'रुचिर मृदुल' के स्थान पर 'रुचि मृदुरल' लिख गया है, १७६२ में भी ऐसा ही हुआ है।

(११) ७-२७-छं० सामान्य पाठ है : प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे। १७२१ में 'पुरट' शब्द लिखने से रह गया है, १७६२ में भी ऐसा ही हुआ है।

(१२) १-३१५-७ सामान्य पाठ है : मरकत कनक बरन बरजोरी। १७२१ में लिख गया है : 'मरकत कनक बरजोरी', बीच के तीन अक्षर 'न बर' छूट गए हैं, १७६२ में भी ऐसा ही हुआ है।

इन अशुद्धि-साम्यों के आधार पर १७२१ तथा १७६२ का प्रतिलिपि-सम्बन्ध प्रकट है। प्रश्न अब यह है कि—

(अ) दोनों किसी सामान्य आदर्श की प्रतिलिपियाँ हैं ?

(आ) १७२१ की प्रति १७६२ की प्रतिलिपि है ? अथवा,

(इ) १७६२ की प्रति १७२१ की प्रतिलिपि है ?

यदि १७२१ तथा १७६२ में प्रायः ऐसी ही अशुद्धियाँ होतीं जो दोनों में उपर्युक्त ढङ्ग पर समान रूप से पाई जातीं, तो यह मानना पड़ता कि दोनों एक ही सामान्य आदर्श की प्रतिलिपियाँ है, किन्तु बात यह नहीं है। १७२१ में उपर्युक्त ढङ्ग की कोई ऐसी अशुद्धि नहीं है जो १७६२ में न हो, किन्तु १७६२ में उपर्युक्त ढङ्ग की ऐसी अशुद्धियाँ अवश्य हैं जो १७२१ में नहीं हैं जिससे दोनों प्रतियों की तिथियों के अनुरूप ही यह सिद्ध होता है कि १७६२ की प्रति १७२१ की प्रतिलिपि है। १७६२ की इस प्रकार की कुछ अशुद्धियाँ निम्नलिखित हैं :—

(१) १-१५७-४ सामान्य पाठ है : रिस बस भूप चलेउ संग लागा। १७६२ में 'बस' शब्द लिखने से रह गया है।

(२) १-१७८ सामान्य पाठ है : सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोइ। १७६२ में 'दल' शब्द आने से रह गया है।

(३) १-२४१-२ सामान्य पाठ है : गुनसागर नागर बर बीरा। १७६२ में 'नागर' शब्द आने से रह गया है।

१६९१ तथा १७०४—१६९१ तथा १७०४ में भी उपर्युक्त ढङ्ग का अशुद्धि-साम्य देखा जा सकता है :—

(१) १-१२-७ सामान्य पाठ है : समुझि बिबिध बिनती अब मोरी। 'अब' दोनों प्रतियों में लिखने से रह गया है।

(२) १-७८-४ निम्नलिखित शब्दावली—जो एक पंक्ति के बराबर होती है—दोनों में नहीं आ पाती है : 'किन कहहू। सुनत रिषिन्ह के बचन भवानी। बोली गूढ़ मनोहर बानी। कहत मरमु'

(३) १-१७९-८ सामान्य पाठ है : एक बार कुबेर पर धावा। 'पुर' शब्द दोनों प्रतियों में आने से रह गया है।

(४) १-१९४ सामान्य पाठ है : गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटेउ प्रभु सुखकंद। 'प्रभु' शब्द दोनों प्रतियों में आने से रह गया है।

(५) १-२२३ सामान्य पाठ है : जाहिं जहां जहं बंधु दोउ तहं तहं परमानन्द। 'जहां जहं' के स्थान पर दोनों प्रतियों में पाठ है 'जहं जहं'।

(६) १-२८१ सामान्य पाठ है : बेषु बिलोके कहेसि कछु बालक हूं नहिं दोषु। 'बालक हूं' के स्थान पर दोनों प्रतियों में 'बालक' मात्र है।

(७) १-२९२-३ सामान्य पाठ है : तिन्ह कहं कहिय नाथ किमि चीन्हे। 'कहं' शब्द दोनों प्रतियों में आने से रह गया है।

(८) १-३२५-२—३ निम्नलिखित अर्द्धालियाँ दोनों प्रतियों में आने से रह गई हैं :—

जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी।
राम सीय सुंदर प्रतिछांहीं। जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं।

फलतः यह प्रकट है कि १६९१ तथा १७०४ परस्पर प्रतिलिपि-संबंध से संबद्ध हैं। प्रश्न अब यह है कि :—

(अ) दोनों एक ही सामान्य आदर्श की प्रतिलिपियाँ हैं ?

(आ) १६९१ की प्रति १७०४ की प्रतिलिपि है ? अथवा,

(इ) १७०४ की प्रति १६९१ की प्रतिलिपि है ?

दोनों प्रतियों का मिलान करने पर यह ज्ञात होता है कि किसी एक

की समस्त अशुद्धियाँ दूसरी में नहीं पाई जातीं, इसलिए यह कहना ठीक न होगा कि कोई भी दूसरे की प्रतिलिपि है। वस्तु-स्थिति यह है कि ऊपर की सामान्य अशुद्धियों के अतिरिक्त भी दोनों में अलग-अलग ऊपर के ही ढंग की ऐसी अशुद्धियाँ पाई जाती हैं, जो एक-दूसरे में परस्पर नहीं मिलतीं।

१६९१ की ऐसी निजी अशुद्धियों में से कुछ यह हैं :—

(१) १-१२६ सामान्य पाठ है : गहेसि जाइ मुनि चरन कहि सुठि आरत मृदु बैन। १६९१ में 'मृदु' शब्द आने से रह गया है।

(२) १-१४९-६ सामान्य पाठ है : तासु प्रभाउ जान हिअ सोई। १६९१ में 'हिअ' का 'अ' लिखने से रह गया है।

(३) १-१८५-छं० सामान्य पाठ है : जो भवभय भंजन मुनिमन रंजन गंजन बिपति बरूथा। १६९१ में 'गंजन' शब्द आने से रह गया है।

(४) १-३०२-१ निम्नलिखित अर्द्धाली १६९१ में आने से रह गई है :—

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसें। सुरपुर संग पुरंदर जैसें।

(५) १-३१९-२ सामान्य पाठ है :—

बेद बिदित अरु कुल आचारू। कीन्ह भली बिधि सब ब्यवहारू। १६९१ में 'आचारू' के स्थान पर भी 'ब्यवहारू' लिखा है।

१७०४ की निजी अशुद्धियों में से कुछ निम्नलिखित हैं :—

(१) १-६३-६ सामान्य पाठ है : पाछिल दुख न हृदय अस ब्यापा। १७०४ में पाठ है : पाछिल दुख हृदय न अस ब्यापा।

(२) १-२१०-१० सामान्य पाठ है : धनुषजज्ञ सुनि रघुकुलनाथा। हरषि चले मुनिवर के साथा। १७०४ में 'सुनि' के स्थान पर 'करि' लिख गया है।

(३) १-२४०-६ निम्नलिखित अर्द्धाली १७०४ में लिखने से रह गई है :

चले सकल गृहकाज बिसारी। बाल जुवान जरठ नर नारी।

(४) १-२६२-७ निम्नलिखित अर्द्धाली भी १७०४ में लिखने से रह गई है :—

रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुष भंग धुनि जात न जानी।

फलतः यह प्रकट है कि १६९१ तथा १७०४ स्वतन्त्र रूप से किसी सामान्य आदर्श की प्रतिलिपियाँ हैं।

१७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४—ऊपर जिस प्रकार का सम्बन्ध हमने १६९१ तथा १७०४ में देखा है, उसी प्रकार का सम्बन्ध १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४ में भी दिखाई पड़ता है। दोनों ही शाखाओं में उपर्युक्त ढंग की अशुद्धियाँ मिलती हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :—

(१) १-१२१-६ सामान्य पाठ है : बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी। 'अधम' के स्थान पर दोनों शाखाओं में 'अधरम' लिख गया है।

(२) २-२२५-२ निम्नलिखित अर्द्धाली दोनों शाखाओं में आने से रह गई है :—

भरतहिं सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं रामु मिटिहि दुख दाहू।

(३) २-२२६-छं० सामान्य पाठ है : तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे। 'चित' दोनों शाखाओं में आने से रह गया है।

(४) २-२९६-२ निम्नलिखित अर्द्धाली दोनों शाखाओं में आने से रह गई है :—

गए जनक रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रबिकुल दीपा।

(५) २-३२५-७ निम्नलिखित अर्द्धाली भी दोनों शाखाओं में आने से रह गई है :—

भरत रहनि समुझति करतूती। भगति बिरति गुन बिमल बिभूती॥

प्रश्न अब यह हो सकता है कि—

(अ) १६९१/१७०४ तथा १७२१/१७६२ किसी सामान्य आदर्श की प्रतिलिपि-परंपरा में है?

(आ) १७२१/१७६२ १६९१/१७०४ की प्रतिलिपि-परंपरा में है? अथवा,

(इ) १६९१/१७०४ १७२१/१७६२ की प्रतिलिपि-परंपरा में है?

१७२१/१७६२ यदि १६९१/१७०४ की प्रतिलिपि-परंपरा में होती, तो उसमें दोनों शाखाओं की उपर्युक्त सामान्य अशुद्धियाँ तथा १६९१ और १७०४ की सामान्य अशुद्धियाँ भी प्रायः समस्त मिलनी चाहिए थीं। किंतु, ऐसा नहीं है। इसी प्रकार यदि १६९१/१७०४ की प्रति १७२१/१७६२ की प्रतिलिपि-परंपरा में होती, जो तिथियाँ यदि ठीक हों तो असंभव ही

है, तो उसमें दोनों शाखाओं की उपर्युक्त सामान्य अशुद्धियों के अतिरिक्त १७२१ तथा १७६२ की सामान्य अशुद्धियाँ भी प्रायः समस्त मिलनी चाहिए थीं। किंतु ऐसा भी नहीं है। वस्तुतः, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, है यह कि दोनों शाखाओं में कुछ सामान्य अशुद्धियाँ हैं और कुछ दोनों शाखाओं की अपनी-अपनी अशुद्धियाँ हैं। फलतः यह प्रकट है कि १६९१/१७०४ तथा १७२१/१७६२ किसी सामान्य आदर्श की प्रतिलिपि-परंपरा में हैं। किंतु दोनों शाखाओं का यह सामान्य आदर्श भी कवि हस्त-लिखित नहीं है, यह ध्यान देने योग्य है, क्योंकि दोनों शाखाओं की उपर्युक्त सामान्य अशुद्धियाँ केवल किसी अक्षर या शब्द को ग़लत पढ़ या लिख जाने से उत्पन्न नहीं हैं, वरन् उनमें पूरी-पूरी अर्द्धालियाँ या शब्द छूटे हुए हैं।

ऊपर लिखे परिणामों को हम चित्र के रूप में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं :—

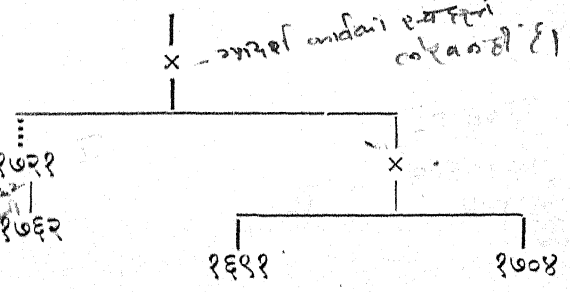

किंतु यदि हम १६९१/१७०४ तथा १७२१/१७६२ के इस सम्बन्ध को थोड़ी देर के लिए अलग रख दें और दोनों के शुद्ध पाठ मात्र की तुलना करें, तो दोनों शाखाओं में इतना अंतर ज्ञात होगा कि ऊपर की किसी अन्य शाखा की प्रति तथा १६९१/१७०४ में न मिलेगा। दोनों शाखाओं में पाठ-विषयक यह अंतर क्यों है? इसका एक ही समाधान संभव है : दोनों में से किसी एक शाखा का पाठ बीच में किसी स्थिति पर किसी तीसरी शाखा के पाठ के अनुसार बनाया गया है। किंतु कौन-सी शाखा किस अन्य शाखा से इस प्रकार प्रभावित हुई है, इस प्रश्न पर हम आगे लौटेंगे।

ऊपर की अन्य प्रतियों में इस प्रकार का प्रतिलिपि-संबंध प्रमाणित नहीं होता, यद्यपि वह असम्भव नहीं कहा जा सकता।

प्रतियों की पाठ-संरक्षा

ऊपर आई हुई प्रतियों का पाठ किस हद तक सुरक्षित है, इस दृष्टि से इन्हें और भी निकट से देखने की आवश्यकता है।

(1) **१७२१ की प्रति**—इसमें पूर्व के पाठ में हस्तक्षेप बहुत किया गया है। इस समस्त पाठ-विकृति को हम दो मुख्य वर्गों में रख सकते हैं :—

१. वह जो १७६२ के पूर्व हो चुकी थी, जैसा १७६२ की प्रति में प्राथमिक पाठ के रूप में इसके मिलने से प्रमाणित है। और,

२. वह जो १७६२ के अनन्तर हुई, जैसा १७६२ की प्रति में प्राथमिक पाठ के रूप में उसके न मिलने से प्रमाणित है।

पहले प्रकार के संशोधन भी तीन मुख्य उपवर्गों में रक्खे जा सकते हैं।

(अ) वह जो ऊपर गिनाई हुई प्राय: किसी प्रति में नहीं मिलते और सामान्यत: अशुद्ध हैं।

(आ) वह जो यद्यपि १६९१/१७०४ शाखा में नहीं मिलते, किन्तु किसी अन्य शाखा में मिलते हैं और सामान्यत: अशुद्ध हैं। और,

(इ) वह जो १६९१/१७०४ में प्राथमिक पाठ के रूप में मिलते हैं, और सामान्यत: शुद्ध हैं।

१ (अ) वर्ग के संशोधनों में से कुछ निम्नलिखित हैं :—

(१) १-१५-७ पूर्व का पाठ था : सोउ महेस मोहिं पर अनुकूला। करहिं कथा मुदमंगल मूला। 'सोउ' के स्थान १७२१ में पाठ 'होउ' कर दिया गया है। अगले ही चरण में कहा गया है—

सुमिरि सिवासिव पाइ पसाऊ। बरनउं रामचरित चितचाऊ।

'प्रसाद' की प्राप्ति इतने शीघ्र हो जाती है, इसलिए प्रार्थनावाची 'होउ, की अपेक्षा पूर्ण निर्भरता तथा समर्थ दानी की पूर्ण अनुकूलतावाची 'सोउ' अधिक समीचीन लगता है।

(२) १-१९४ पूर्व का पाठ था : गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रभु प्रगटेउ सुखकन्द। १७२१ में 'प्रभु प्रगटेउ' के स्थान पर 'प्रगटेउ प्रभु' कर दिया गया

है। अर्थ में इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है और न कोई अन्य विशेषता आती है।

(३) ३-१७-६ पूर्व का पाठ था : होइ बिकल सक मनहिं न रोकी। 'मनहिं न' के स्थान पर १७२१ में 'मन नहिं' कर दिया गया है। दोनों पाठ प्रयोग-सम्मत हैं यथा :—

मम पद मनहिं बांध बरि डोरी। ५-४८५
जितहु मनहिं अस सुनिय जग रामचन्द्र के राज। ७-२२
नाना भांति मनहिं समुझावा। ७-५९-१
भये मगन मन सके न रोकी। ७-३३-२

(४) ६-१२० पूर्व का पाठ था : सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरषित राम। 'तन पुलकित' के स्थान पर १७२१ में 'पुलकित तन' कर दिया गया है। इस परिवर्तन से भी अर्थ में कोई अंतर नहीं पड़ता और न अन्य कोई विशेषता आती है।

(५) ७-४-१ पूर्व का पाठ था : इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर। कपिन्ह देखावत नगर मनोहर। 'मनोहर' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'सुधाकर' कर दिया गया है। 'नगर' के साथ 'सुधाकर' की असंगति प्रकट है। 'दिवाकर' तथा 'मनोहर' का तुक अवश्य अच्छा नहीं है, किन्तु इस प्रकार के हीन तुक अन्यत्र भी मिलते हैं, यथा :—

रघुबीर निज मुख जासु गुनगन कहत अग जग नाथ जो।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सद्गुन सिंधु सो। ७-२ छं०

(६) ७-७०-८ पूर्व का पाठ था: तृस्ना केहि न कीन्ह बौराहा। केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा। 'बौराहा' तथा 'दाहा' के स्थान पर १७२१ में क्रमशः 'बौरहा' तथा 'दहा' कर दिया गया है। 'बौरहा' अथवा उसका कोई रूप ग्रंथ में अन्यत्र नहीं मिलता, 'बौराह' तथा उसी के रूप मिलते हैं, यथा :—

बर बौराह बरद असवारा। १-९५-८
कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेहिं तुम्हहि सुंदरता दई। १-९६ छं०

'दाहना' और 'दहना' दोनों के रूप अवश्य ग्रंथ में मिलते हैं, यथा :—

बहइ न हाथ दहइ रिस छाती। १-२८०-१
दहइ कोटि कुल भूसुर रोपू। २-१२६-४
कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहे। २-२०५-५
अनल दाहि पीटत घनन्हि परसु बदन यह दंड। ७-३७

(७) ७-७० पूर्व का पाठ था : मृगलोचनि लोचनसर को अस लाग न जाहि। 'मृगलोचनि लोचनसर' के स्थान पर १७२१ में 'मृगलोचनि के नैनसर' कर दिया गया है। 'लाग' के एकवचन रूप से उसके कर्त्ता का एकवचन रूप 'मृगलोचनि लोचनसर' ही समीचीनि ज्ञात होता है, बहुवचन रूप 'मृगलोचनि के नैनसर' नहीं।

(८) ७-९२-८ पूर्व का पाठ था : भारधरन सतकोटि अहीसा। 'भारधरन' के स्थान पर १७२१ में 'धराधरन' कर दिया गया है। प्रसंग भर में कर्मों का उल्लेख नहीं, गुणों का ही उल्लेख हुआ है और वे गुण-यह हैं : सुभगतनुता, अरिमर्दनत्व, विलास, अवकाश, बल, प्रकाश, शीतलता, त्रास-शमनशीलता, दुस्तरता, दुरंतता, दुराधर्षिता, अगाधता, करालता, पावनता, अघनाशकता, अचलता, गंभीरता, कामदायकता, चतुरता, निपुणता, पालकता, संहारकता, धनवानत्व, प्रपंचपटुता। इन गुणों के साथ 'भारधारकता' ही ठीक लगता है, 'धरा धारकता' नहीं। फिर 'धरा धारण' के लिए तो एक ही शेष यथेष्ट हैं, शतकोटि शेषों की उसके लिए कौन सी संगति हो सकती है ?

(९) ६-८१-७ पूर्व का पाठ था : निसिचर भट बहु गाड़हिं भालू। ऊपर डारि देहिं बहु बालू। 'डारि' के स्थान पर १७२१ में 'ढारि' बना दिया गया है। 'ढारना'='ढालना' या उड़ेलना की असंगति प्रकट है, 'डारना'='डालना' ही संगत लगता है।

(१०) ७-२३-५ पूर्व का पाठ था : लता बिटप मांगे मधु चवहीं। 'चवहीं' के स्थान पर 'बहहीं' कर दिया गया है। 'लता-बिटप' से 'मधु' का 'चूना' ही बुद्धिसम्मत है, 'बहना' नहीं।

(११) ७-१२७-७ पूर्व का पाठ था : सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी। १७२१ में 'पाकी' को भी 'जाकी' बना दिया गया है। 'जाकी' पहले चरण में आ चुका है, इसलिए परिवर्तित

पाठ में पुनरुक्ति दोष प्रकट है। इसके अतिरिक्त दूसरे चरण में भी 'जांकी' पाठ मानने पर 'सोइ' की संगति नहीं रहती। 'पाकी' पाठ की समीचीनता प्रकट है, अर्थ है 'पुण्यरत मति ही धन्य है, और वही पक्की मति है।'

(१२) ३-४२-१ पूर्व का पाठ था : सुनहु उदार परम रघुनायक। 'परम' के स्थान पर १७२१ में 'सहज' बना दिया गया है। 'उदार' के विशेषण के रूप में 'परम' तथा 'सहज' दोनों संगत लगते हैं। तुलनीय प्रयोग का अभाव है।

(१३) १-८६ पूर्व का पाठ था : सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही। 'अनल' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'अनिल' कर दिया गया है। सखात्व 'मारुत' और 'अनल' का प्रसिद्ध ही है, इसलिए "कामाग्नि (मदन अनल) का सच्चा सखा त्रिविध समीर चलने लगा" को संगति प्रकट है। 'मदन' और समस्त 'अनिल' का सखात्व इस प्रकार का नहीं है, त्रिविध समीर ही मदन का सखा हो सकता है।

(१४) ३-२७ पूर्व का पाठ था : बिपुल सुमन सुर बरसहिं गावहिं प्रभुगुन गाथ। 'प्रभु' के स्थान पर १७२१ में 'सुर' कर दिया गया है। 'सुर' तो दोहे के प्रथम चरण में ही आ चुका है, इसलिए दूसरे पाठ में पुनरुक्ति-दोष प्रकट है और सार्थकता भी 'प्रभुगुन' में ही है, केवल 'गुन' में नहीं।

(१५) ३-३४-२ के अनंतर तीन अर्द्धालियाँ बढ़ाई गई हैं। यह स्पष्ट रूप से प्रक्षिप्त लगती हैं।

(१६) ४-८-६ पूर्व का पाठ था : तनु भा कुलिस गई सब पीरा। 'गई सब' के स्थान पर १७२१ में 'सबै गै' कर दिया गया है। 'सब' 'पीरा' का विशेषण है, अतः उसका 'पीरा' के सन्निकट होना दूर होने की अपेक्षा अधिक समीचीन है।

(१७) ५-१४-१ पूर्व का पाठ था : हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी। 'बाढ़ी' 'ठाढ़ी' के स्थान पर क्रमशः 'गाढ़ी' 'बाढ़ी' कर दिया गया है। दूसरे पाठ की असंगति तथा पहले की समीचीनता प्रकट है।

(१८) ६-४-५ पूर्व का पाठ था : मकर नक्र नाना झख व्याला। सत जोजन तन परम बिसाला। १७२१ में 'तन' के स्थान पर पाठ 'अति' कर दिया गया है। 'परम' के होते हुए 'अति' तो बेकार है ही, सार्थकता के लिए 'तन' कर्त्ता का होना भी आवश्यक है।

(१९) ६-४१-८ पूर्व का पाठ था : निसिचर सिखर समूह ढहावहिं। कूदि घरहिं कपि फेरि चलावहिं। 'ढहावहिं' के स्थान पर भी १७२१ में पाठ 'चलावहिं' कर दिया गया है। दूसरे पाठ में 'चलावहिं' की पुनरुक्ति प्रकट है। इसके अतिरिक्त निशिचर गढ़ के ऊपर थे, बन्दर नीचे। निशिचरों का 'ढहाना' 'नीचे ढकेलना' और बन्दरों का उन्हें 'चलाना' 'ऊपर फेंकना' ही बुद्धि-सम्मत है।

(२०) ५-१६ पूर्व का पाठ था :—

सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हिं खाइ परम लघु ब्याल॥

'साखामृग' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'साखामृगन' कर दिया गया है। पहले पाठ की संगति प्रकट है—हनुमान् विनम्रतावश कह रहे हैं : "हे माता ! मैं साखामृग हूँ, मुझे कोई विशाल बल या बुद्धि नहीं प्राप्त है—इत्यादि।" कोई सामान्य कथन करने का प्रसंग नहीं है और न वैसे कथन के लिए 'साखामृगन' शुद्ध है, 'साखामृगन्हि' 'साखामृगों को' ही उस दशा में शुद्ध होगा।

१ (आ) वर्ग के संशोधनों में से कुछ निम्नलिखित हैं :—

(१) १-२-५ पूव का पाठ था : साधु चरित सुभ सरिस कपासू। १७२१ में 'सरिस कपासू' के स्थान पर 'चरित कपासू' कर दिया गया है। 'चरित' चरण में ही पहले आ चुका है, इसलिए दूसरे पाठ में पुनरुक्ति प्रतीत होती है। पहला पाठ इससे मुक्त है, और उसकी संगति प्रकट है।

(२) १-१२-८ पूर्व का पाठ था : एतेहु पर करिहहिं ते असंका। मोहिंते अधिक जे जड़ मतिरंका। १७२१ में दूसरे चरण के 'जे' के स्थान पर 'ते' कर दिया गया है। 'जे'-'ते' पाठ की समीचीनता प्रकट है, 'ते'-'ते' पाठ अर्थहीन लगता है।

(३) ३-२९-१ पूर्व का पाठ था : हा जगदेक बीर रघुराया। १७२१ में 'जगदेक' को 'जग एक' बनाया गया है। प्रसंग से यह प्रकट है कि अर्थ होना चाहिए 'जगत् के एक ही—निराले—बीर'। यह अर्थ समास-युक्त पाठ 'जगदेक' से तो निकलता ही है, यथा :—

मायातीतं सुरेशं खलबध निरतं ब्रह्म बृंदैक देवं। ६-०-श्लो० १
दूसरे पाठ से 'एक' शब्द पर बल देने से भी निकल सकता है।

(४) ६-१४-८ पूर्व का पाठ था : जानि मनुज जनि हठ मन धरहू। १७२१ में 'मन' के स्थान पर पाठ 'उर' कर दिया गया है। दूसरे पाठ से अर्थ में कोई अंतर नहीं पड़ता और न कोई अन्य विशेषता आती है।

(५) ६-२१-४ पूर्व का पाठ था : अंगद बचन सुनत सकुचाना। हां बाली बानर मैं जाना। 'हां बाली' के स्थान पर १७२१ में पाठ बनाया गया है 'रहा बालि'। 'जाना'='जानता था' क्रिया के साथ 'रहा' अशुद्ध है। पहला ही पाठ समीचीन लगता है।

(६) ६-१६ पूर्व का पाठ था :—

फूलै फरै न बेंत जदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरुख हृदय न चेत जौ गुरु मिलहिं बिरंचि सत॥

'सत' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'सम' कर दिया गया है। 'सत' में असंभावना की जो व्यंजना है वह 'सम' में नहीं, और प्रसंग से असंभावना ही की व्यंजना वांछनीय है, यह प्रकट है।

(७) ६-३५-१ पूर्व का पाठ था : कपि बल देखि सकल हिय हारे। उठा आपु जुवराज प्रचारे। 'जुवराज' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'कपि के' कर दिया गया है। 'कपि' पहले चरण में आ ही चुका है, इसलिए दूसरे पाठ में पुनरुक्ति प्रकट है। पहला पाठ इस त्रुटि से मुक्त है।

(८) ६-४३-३ पूर्व का पाठ था : निज दल बिचल सुना हनुमाना। 'बिचल' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'बिकल' कर दिया गया है, किन्तु प्रसंग विचलित होने का है, केवल विकल होने का नहीं :—

भय आतुर कपि भागन लागे। यद्यपि उमा जीतिहहिं आगे। ६-४३-१

(९) ६-४५ पूर्व का पाठ था :—

भुजबल रिपुदल दलमले देखि दिवस कर अंत।
कूदे जुगल प्रयास बिनु आए जहँ भगवंत॥

१७२१ में 'दलमले' के स्थान पर पाठ 'दलमलि' बना दिया गया है। 'कूदे' के समान ही 'दलमले' बहुवचन रूप की समीचीनता 'जुगल' कर्त्ता के साथ प्रकट है। 'दलमलि' भी प्रसंग में खप सकता है, किंतु उससे अर्थ की या किसी अन्य प्रकार की कोई विशेषता पाठ में नहीं आती।

(१०) १-१२६ पूर्व का पाठ 'मयन' और 'बयन' था, उसको १७२१ में 'मैन' तथा 'बैन' बनाया गया है। इस परिवर्तन से भी पाठ में कोई विशेषता नहीं आती।

(११) १-१०३-८ पूर्व का पाठ 'षन्मुख' था, उसको १७२१ में 'षटमुख' बनाया गया है। इस परिवर्तन से भी पाठ में कोई विशेषता नहीं आती।

(१२) ६-१०८-१० पूर्व का पाठ था : देखन भालु कीस सब आए। 'भालुकीस' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'कीस भालु' कर दिया गया है। इस परिवर्तन से भी पाठ में कोई विशेषता नहीं आती।

(१३) ५-२७-६ पूर्व का पाठ था। मास दिवस महुँ नाथ न आवा। तौ पुनि मोहिं जिअत नहिं पावा। १७२१ में 'आवा' तथा 'पावा' के स्थान पर क्रमशः 'आवैं' और 'पावैं' कर दिया गया है। दोनों पाठ व्याकरण-सम्मत हैं, यथा :—

जौ नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई। २-८२-१
जौं हरि हर कोपहिं मनमाहीं। १-१६६-४

अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा। जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा। १-१७१-३
बड़भागी बन अवध अभागी। जौं रघुबंस तिलक तुम्ह त्यागी। २-५६-५

किंतु 'आवैं' 'पावैं' रूप प्रयोग-सम्मत नहीं है—सर्वत्र 'आवहिं' 'पावहिं' है।

१(इ) वर्ग के परिवर्तनों में से कुछ इस प्रकार हैं :—

(१) १-९-२ पूर्व का पाठ था : हंसहिं बक दादुर चातक ही। हंसहि

मलिन खल बिमल बतकही। 'दादुर' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'गादुर' कर दिया गया है। 'हंस' से तुलना के लिए जिस प्रकार पक्षिवर्ग से 'बक' लिया गया है, उसी प्रकार 'चातक' से तुलना के लिए पक्षिवर्ग के 'गादुर' = 'चमगादुर' का लिया जाना समीचीन लगता है। 'चातक' और 'गादुर' की परस्पर विपरीत रहन-सहन और आचरण भी प्रसिद्ध हैं : चातक मरते समय तक अपनी चोंच ऊपर आकाश की ओर उठाये रहता है—उसकी वृत्ति ऊर्ध्वमुखी रहती है; और 'गादुर' सदैव अपना मुँह नीचे की ओर लटकाये रहता है—उसकी वृत्ति इसीलिए अधोमुखी मानी जाती है। 'चातक' और 'दादुर' में इस प्रकार की समानता और विपरीतता नहीं है। समानता इन दोनों में यही है कि दोनों वर्षा के जल से सुखी और अन्यथा उसके लिए पिपासार्त रहते हैं और विषमता यह है कि चातक की बोली मधुर होती है और दादुर की कर्कश।

(२) १-१४२-८ पूर्व का पाठ था : तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु बहु बिधि प्रतिपाला। दूसरे चरण के 'बहु' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'सब' बनाया गया है। पहले चरण में 'बहु' आ चुका है, इसलिए पहले पाठ में पुनरुक्ति प्रकट है, दूसरा इस त्रुटि से मुक्त है। इसके अतिरिक्त 'सब बिधि प्रतिपाला' में जो बल है, वह 'बहु बिधि प्रतिपाला' में नहीं है और प्रसंग से 'अधिकतम' की व्यंजना ही अभीष्ट लगती है, क्योंकि आगे के शब्द हैं : होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथ पनु। १-१४२

(३) १-३४६-५ पूर्व-का पाठ था : अच्छत अंकुर रोचन लाजा। मंजुल मंगल तुलसि बिराजा। 'मंगल' शब्द के स्थान पर १७२१ में पाठ 'मंजरि' बना दिया गया है। यहाँ पर वर्णन उन मंगल-द्रव्यों का किया जा रहा है जो रानियाँ परिछन के लिए सज रही थीं। दोनों पाठों से अर्थ लगता है। आगे कुछ और मंगल-द्रव्यों का उल्लेख कर देने के अनंतर कहा गया है : मंगल सकल सजहिं सब रानी। १-३४६-७

इसलिए विवेचनीय स्थल पर 'मंगल' शब्द आवश्यक नहीं है, किंतु उसके होने से भी कोई बाधा नहीं पहुँचती, क्योंकि 'तुलसी' और 'तुलसी-मंजरी' में वास्तविक भेद नहीं है।

(४) १-१९६-५ पूर्व का पाठ था : परमानंद प्रेम सुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं सकल रस भूले। 'सकल रस' के स्थान पर १७२१ में पाठ बनाया गया है 'मगन मन'। पहला पाठ संगत नहीं लगता, क्योंकि 'रस' शब्द का प्रयोग कवि ने केवल शृङ्गारादि पार्थिव रसों के लिए ही नहीं, वरन् 'राम भक्ति रस', 'राम ध्यान रस', 'बाल केलि रस', 'ज्ञान बिराग भगति रस' आदि अनेक समासों में अपार्थिव रसों के लिए भी किया है। दूसरे पाठ की संगति प्रकट है; अर्थ होगा : "परमानंद (राम) के अनुराग-सुख में फूले हुए, मन में मगन (प्रसन्न) और इसीलिए भूले हुए अयोध्या की गलियों में हम दोनों (शिव तथा भुशुंडि) चक्कर लगाते रहते थे।"

(५) १-३५३-४ पूर्व का पाठ था : बिप्रबधूं सब भूप बोलाईं। चीर चारु भूषन पहिराईं। १७२१ में 'चीर' के स्थान पर पाठ 'चैल' कर दिया गया है। यद्यपि 'मानस' में तुलनीय प्रयोग नहीं मिलते,[१] दोनों समानार्थी प्रतीत होते हैं।

(६) ६-४२-७ पूर्व का पाठ था : जो रन बिमुख सुना मैं काना। सो मैं हतब कराल कृपाना। 'सुना मैं काना' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'फिरा मैं जाना' बनाया गया है। ऊपर की ही अर्द्धाली में 'सुनी तेहिं काना' आ चुका है :—

निज दल बिचल सुनी तेहिं काना।

इसलिए पहले पाठ में पुनरुक्ति है, जो असंभव नहीं जान-बूझकर कवि ने की हो और दूसरा उससे मुक्त है।

(७) ७-२१-७ पूर्व का पाठ था : सब निरदंभ धरमरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी। 'पुनी' के स्थान पर १७२१ में पाठ बनाया गया है 'घृनी'। 'पुनी' = 'तदनंतर' की प्रसंग में कोई आवश्यकता नहीं है, 'घृनी' = 'दयालु' ही ठीक लगता है। 'पुनी' से 'पुण्यात्मा' का आशय लेने पर वह पाठ अवश्य संगत हो सकता है।

१—'गीतावली' में 'चैल' का प्रयोग पीताम्बर के लिए हुआ है :

पीत निर्मल चैल मनहु मरकत सैल पृथुल दामिनि रही छाइ तजि सहज ही।

(८) १-१२-४ पूर्व का पाठ था : तिन्हमहं प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंध्वक धोरी। 'धंध्वक' को १७२१ में 'धंधक' बनाया गया है। पहला अर्थहीन है, दूसरा ही सार्थक है, अर्थ होगा 'धंधा करनेवाला'।

(९) १-२३-३ पूर्व का पाठ था : प्रौढ़ि सुजन जनि जानहु जन की। कहेउं प्रतीति प्रीति रुचि मन की। 'कहेउं' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'कहउं' बनाया गया है। ऊपरवाली अर्द्धाली से ही यह वक्तव्य प्रारंभ किया गया है, और आगे की पंक्तियों में भी इसी का प्रतिपादन विभिन्न तर्कों का आश्रय लेते हुए किया गया है, इसलिये भूतकाल के रूप 'कहेउं' के स्थान पर वर्त्तमानकाल का रूप 'कहउं' अधिक समीचीन लगता है।

(१०) १-३५ पूर्व का पाठ था : जस मानस जेहि बिधि भएउ जग प्रचार जिहि हेतु। 'जिहि' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'जेहि' बनाया गया है। 'जिहि' ग्रन्थ में अन्यत्र कहीं नहीं आया है, 'जेहि' ही प्रयोग सम्मत है।

(११) १-३८-१ पूर्व का पाठ था : जो गावहिं यह चरित संभारे। तेइ येहि ताल चतुर रखवारे। 'जो' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'जे' बनाया गया है। 'गावहिं' तथा 'तेइ' के बहुवचन से 'जे' बहुवचन पाठ ही सिद्ध है, 'जो' एकवचन पाठ नहीं।

(१२) १-५८-७ पूर्व के पाठ में नीचे लिखी अर्द्धालियों में से बीच की नहीं थी, वह बाद में बढ़ाई गई है :

बरनत पंथ बिबिध इतिहासा। बिस्वनाथ पहुंचे कैलासा॥
तहं पुनि संभु समुझि पन आपन। बैठे बट तर करि कमलासन॥
संकर सहज सरूप संभारा। लागि समाधि अखंड अपारा॥

ध्यान से देखने पर यह स्पष्ट ज्ञात होगा कि बीच की अर्द्धाली का पहला चरण पूर्व के कथन तथा दूसरा चरण बाद के कथन के अनिवार्य अंग हैं।

(१३) १-८५ पूर्व का पाठ था : जो राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महुं। 'जो' के स्थान पर १७२१ में 'जे' कर दिया गया है। 'राखे' तथा 'ते' के बहुवचन से 'जे' बहुबचन पाठ सिद्ध है, 'जो' एकवचन पाठ अशुद्ध है।

(१४) १-८८ पूर्व का पाठ था :

सकल सुरन्ह के हृदयं अस संकर परम उछाहु ।
निज नयनन्हि देखा चही नाथ तुम्हार बिवाहु ।।

'चही' का १७२१ में 'चहैं' बनाया गया है। दोनों में अंतर प्रथम पुरुष और अन्य पुरुष में कथन का प्रतीत होता है : 'सुरन्ह' बहुवचन कर्त्ता के साथ बहुवचन क्रिया 'चहैं' = 'चहहिं' समीचीन है, और 'बिवाहु' कर्त्ता के साथ 'चही' = 'चहिअ' एकवचन ।

(१५) १-९६ पूर्व का पाठ था :

भई बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि ।
करि प्रलाप रोदति बदति सुता सनेहु संभारि ।।

'प्रलाप' के स्थान पर १७२१ में 'बिलाप' बना दिया गया है । 'प्रलाप' ग्रन्थ में 'बकवास' या 'बकझक' के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है, यथा :

बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर करहिं प्रलापु । १-२७४

एहि बिधि करत प्रलाप कलापा । आए अवध भरे परितापा । २-८६-७

रोने के प्रसंग में 'बिलापु' का ही प्रयोग ग्रन्थ भर में मिलता है, इसलिए वही प्रयोग-सम्मत है ।

(१६) १-११०-६—७ पूर्व के पाठ में १७२१ में नीचे लिखी बीच की दो अर्द्धालियाँ नहीं थीं, वे बाद में बढ़ाई गई हैं :

पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा । बालचरित पुनि कहहु उदारा ।
कहहु जथा जानकी बिवाही । राज तजा सो दूषन काही ।
बन बसि कीन्हे चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावन मारा ।
राज बैठि कीन्ही बहु लीला । सकल कहहु संकर सुखसीला ।

प्रकट है कि बीच की अर्द्धालियाँ प्रसंग में अनिवार्य हैं ।

(१७) १-११२-५ पूर्व का पाठ 'तिपुरारी' था, १७२१ में वही बाद में 'त्रिपुरारी' बनाया गया है । ग्रन्थ भर में सर्वत्र 'त्रिपुरारी' ही आया है, इसलिये वही प्रयोग-सम्मत है ।

(१८) १-१५९ दोहे का निम्नलिखित अंश पूर्व के पाठ में छूटा हुआ था, १७२१ में वह बाद में बढ़ाया गया है :

आपुनु आवै ताहि पहिं ताहि तहां लै जाइ ।

प्रकट है कि पहले पाठ में लेखन-प्रमाद से ही यह भूल रह गई थी।

(१९) १-१८६ छं० पूर्व का पाठ था : सादर स्रुति सेषा रिषय असेषा जाकहुं कोउ नहिं जाना। १७२१ में 'सादर' का 'सारद' बनाया गया है। 'जाना' क्रिया के विशेषण के रूप में 'सादर' की असंगति प्रकट है; ज्ञान के प्रसंग में 'स्रुति सेषा' के साथ 'सारद' की संगति भी इसी प्रकार स्पष्ट है।

(२०) ५-५६-५ पूर्व का पाठ 'दिढ़ाई' था, १७२१ में उसको 'दृढ़ाई' बनाया गया है। ग्रन्थ में 'दृढ़' तथा उसी के रूप मिलते हैं, इसलिए दूसरा पाठ ही प्रयोग-सम्मत है।

(२१) ६-८३-२ पूर्व का पाठ था : खोजत रहेउं तोहिं सुरघाती। 'सुरघाती' के स्थान पर १७२१ में 'सुतघाती' बनाया गया है। यह शब्दावली रावण की लक्ष्मण के प्रति है। लक्ष्मण 'सुतघाती' = 'मेघनाद का वध करनेवाले' ही थे, 'सुरघाती' = 'देवताओं का वध करनेवाले' नहीं। इसलिए 'सुरघाती' पाठ की समीचीनता सिद्ध है।

(२२) ६-९६-१ पूर्व का पाठ था : अंतर्ध्यान भएउ छन एका। पुनि प्रगटे खल रूप अनेका। 'अंतर्ध्यान' का १७२१ में 'अंतर्धान' बनाया गया है। प्रकट है कि प्रसंग यहाँ 'तिरोधान' = 'आँख से ओझल' होने का है; उसके अर्थ में 'अंतर्धान' ही समीचीन है : 'अंतर्ध्यान' नहीं।

(२३) ७-४-३ 'बढ़्यो' के स्थान पर १७२१ में 'बढ़ेउ' कर दिया गया है। वस्तुतः दोनों में अंतर भाषा का ही है : पहला ब्रज का रूप है, दूसरा अवधी का। ग्रन्थ की सामान्य भाषा अवधी होने के कारण दूसरा पाठ अधिक समीचीन लगता है।

(२४) ७-६-५ पूर्व का पाठ था : अमित रूप प्रगटे तिहि काला। 'तिहि' के स्थान पर १७२१ में पाठ 'तेहि' बना दिया गया है। 'तिहि' ग्रन्थ भर में अन्यत्र प्रयुक्त नहीं हुआ है, 'तेहि' ही सर्वत्र प्रयोग में आया है, इसलिए 'तेहि' ही प्रयोग-सम्मत है।

दूसरे प्रकार के संशोधनों को भी—अर्थात् उनको जो १७६२ के बाद हुए—पहले प्रकार के संशोधनों की भाँति तीन ढग से देखा जा सकता है :—

(अ) वे जो ऊपर गिनाई हुई प्राय: किसी प्रति में नहीं मिलते, और सामान्यत: अशुद्ध हैं,

(आ) वे जो यद्यपि १६९१/१७०४ शाखा में नहीं मिलते, किन्तु किसी अन्य शाखा में मिलते हैं, और सामान्यत: अशुद्ध हैं, और

(इ) वे जो १६९१/१७०४ शाखा में प्राथमिक पाठ के रूप में मिलते हैं, और सामान्यत: शुद्ध हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि २(अ) वर्ग के संशोधन बिलकुल नहीं मिलते।

२(आ) वर्ग के संशोधनों में से मुख्य निम्नलिखित हैं। यह संशोधन निश्चित रूप से १७६२ के बाद के हैं, इसलिए नीचे इनका निर्देश-मात्र किया गया है, इनके विवेचन की आवश्यकता नहीं समझी गई है। फिर भी पाठ-विवेचनवाले अध्याय में इनमें से कुछ क सम्बन्ध में—उनके अन्य प्रतियों में भी आने के कारण—विवेचन मिल जाएगा :—

(१) १-९-११ 'कागर' का 'कागद' बनाया गया है
(२) १-२९-८ 'रामसभा' का 'राजसभा' ”
(३) १-६४-४ 'काटिअ' का 'काढ़िअ' ”
(४) १-७४-६ 'बेलवाति' का 'बेलपाति' ”
(५) १-७५ 'मान' का 'काम' ”
(६) १-८६-६ 'जाति' का 'सखा' ”
(७) १-९१-७ 'अज' का 'बिधि' ”
(८) १-११९-२ 'बस उर' का 'सब उर' ”
(९) १-१२४-१ 'दीन्ह' का 'कीन्ह' ”
(१०) १-१२७-८ 'सुनावहु' का 'सुनाएहु' ”
(११) १-१३१ ८ 'हैं बिधि' का 'हे बिधि' ”
(१२) १-१४३-१ 'तब' का 'नृप' ”
(१३) १-१५०-५ 'भगति हित' का 'भगत हित' ”
(१४) १-१७६-८ 'जाइ' का 'जाहिं' ”
(१५) १-१८६-छं० ह्रस्व तुकांत का दीर्घ तुकांत ”
(१६) १-२०८-५ 'प्रिय' का 'प्रिय मोहिं' ”

(१७) १-२२६-५ 'कमल' का 'पदुम' बनाया गया है।
(१८) १-२३४-५ 'भए गहरु' का 'भएउ गहरु' "
(१९) १-२६५-५ 'नाक' का 'ब्योम' "
(२०) १-२६६-४ 'परां गति, का 'सुगति जिमि' "
(२१) १-२७७ 'चरहिं' का 'होहिं' "
(२२) १-२९१-७ 'सुरासुर' का 'सरासुर' "
(२३) १-२९७-२ 'बालक' का 'सावक' "
(२४) १-३१५-७ 'कनक बरन बर जोरी' का 'न बर' रह गया था, उसके स्थान पर 'न तन' बनाया गया है।
(२५) १-३२२ 'सत्त' का 'सप्त' "
(२६) १-३३३-५ 'सुसारा' का 'सुआरा' "
(२७) १-३४६-६ 'सकुच' का 'सकुन' "
(२८) ३-१०-४ 'हैं बिधि' का 'हे बिधि' "
(२९) ३-१०-१७ 'जान न' का 'जाग न' "
(३०) ३-१६ 'निष्काम' का 'निःकाम' "
(३१) ४-७ 'कइ बाली' का 'कह बाली' "
(३२) ४-१५ 'चल' का 'बह' "
(३३) ५-५६-८ 'दूतहि' का 'दूत' "
(३४) ७-२९-४ 'तिन्हकी' का 'तिन्हके' "
(३५) ७-६४-३ 'पूग' का 'पुंज' "
(३६) १-३८-८ 'कुतर्क' का 'कुतरक' "
(३७) १-४०-२ 'सुहावन' का 'सोहावन' "
(३८) १-१२३ से १-१२५-४ तक 'आप' का 'साप' "(कई बार यह हुआ है)
(३९) १-१६२-२ 'लोक' का 'लोग' "
(४०) १-१८९-२ 'बार' का 'समै' "
(४१) १-२००-४ 'सबकै राखै' का 'बसकै राखै' "
(४२) १-२०६-३ 'जग्य जोग' का 'जोग जग्य' "
(४३) १-२१०-३ 'क्रोही' का 'कोही' "
(४४) १-२१८-५ 'उर' का 'डर' "

(४५) १-३२४-छं० 'सुकृत' का 'सकृत' बनाया गया है।
(४६) १-३२७ 'आनि' का 'आने' ,,
(४७) ३-१३-१६ 'कै' का 'कर' ,,
(४८) ७-८-५ 'बोलाए' का 'बुलाए' ,,
(४९) ७-१२३-४ 'कीन्हि' का 'कीन्ह' ,,
(५०) ७-१२३/१ 'दीन्ह' का 'दीन' ,,

२(इ) वर्ग के संशोधनों में से प्रमुख निम्नलिखित हैं। इनका समावेश भी १७६२ के अनंतर हुआ है, इसलिए इनका भी निर्देश-मात्र किया गया है। फिर भी पाठ-विवेचनवाले अध्याय में इनमें से कुछ पर विचार किया गया है, क्योंकि वे अन्य प्रतियों में भी मिलते हैं :—

(१) १-६-८ 'कर्मनासा' का 'कबिनासा' बनाया गया है।
(२) १-८-१४ 'सकृति' का 'सकृत' ,,
(३) १-१००-८ } 'कोटिबहु' का 'कोटिहु' ,,
(४) १-१०० } ,,
(५) १-१४३-८ 'संत' का 'सत' ,,
(६) १-१४९-१ 'बोलीं' का 'बोले' ,,
(७) १-३४४-२ 'भेरि' का 'बीरि' ,,
(८) ३-१०-१ 'अगस्त्य' का 'अगस्ति' ,,
(९) ३-१८-२ 'बिलषाता' का 'बिलपाता' ,,
(१०) ५-५४ 'बिकटासि' का 'बिकटास्य' ,,
(११) ६-२२-८ 'महूं' का 'हमहुं' ,,
*(१२) ६-६०/१ दोहे के स्थान पर दो अर्द्धालियाँ बनाई गई हैं।
*(१३) ६-७२ 'मायामय' का 'मायारचित' बनाया गया है।
*(१४) ६-७२ 'अट्टहासकरि' का 'प्रलय पयोद जिमि' ,,
*(१५) ६-७३-१३ 'बंधायो, भय पायो' का 'बंधावा, भय पावा' ,,
*(१६) ६-७३-१३ 'नागपास' का 'देखि दसा' ,,
*(१७) ६-७४/१ दोहा के स्थान पर दूसरा दोहा ,,
(१८) ७-२२-५ 'बरदसुसीला' का 'बरदमुसीला' ,,
(१९) ७-२४-९ 'ब्रह्माणि' का 'ब्रह्मादि' ,,

(२०) ७-७९-/२ 'लगि' का 'लगे' बनाया गया है।
(२१) १-३७-३ 'गलहीं' का 'गरहीं' ,,
(२२) १-१०-७ 'रघुबीर' का 'रघुनाथ' ,,
(२३) १-२३-२८ 'निहबूते' का 'निजबूते' ,,
(२४) १-२९-३ 'श्रुति' का 'सुनि' ,,
(२५) १-३६-८ 'सकल' का 'सकिलि' ,,
(२६) १-३६ 'रुचि' का 'बर' ,,
(२७) १-६९-६ 'समान' का 'समकह' ,,
(२८) १-९३ छं० 'असुर' का 'सुअर' ,,
(२९) १-९४ छं० 'सुर' का 'पुर' ,,
(३०) १-९७ ८ 'जिनि' का 'जनि' ,,
(३१) १-९८-३ 'संग' का 'संभु' ,,
(३२) १ ११६-८ 'पुरुष' का 'परेस' ,,
(३३) १-१२३-३ 'महा' का 'तहां' ,,
(३४) १-१३८ 'अंतध्यान' का 'अंतर्धान' ,,
(३५) १-१४३-१ 'तब' का 'बन' ,,
(३६) १-१४६ 'नीरनिधि' का 'नीरधर' ,,
(३७) १-१४९-६ 'जान हिय' का 'जानहि' ,,
(३८) १-१५१ 'बिलास' का 'बिसाल' ,,
(३९) १-१६२-१ 'बन' का 'जग' ,,
(४०) १-१७५-२ 'तेहीं' का जेहीं' ,,
(४१) १-२१७-१ 'सुनि तव चरित' का 'मुनि तव चरन' ,,
(४२) १-२४०-६ 'जठर' का 'जरठ' बनाया गया है।
(४३) १-२४५ 'के' का 'को' ,,
(४४) १-२८४ ३ 'डेराना' का 'सकाना' ,,
(४५) १-२९८-८ 'बहु' का 'सब' ,,
(४६) ३-५-१ तथा २ के बीच दो नई अर्द्धालियाँ बनाई गई हैं।
(४७) ५-३८ 'भज भजहीं जेति संत' का 'भजहु भजहिं जेहि संत' ,,
(४८) ५-५६ 'सरासन' का 'सरानल' बनाया गया है।

(४९) ६-१५-४ 'बिलास' का 'बिसाल' बनाया गया है।
(५०) ६-३०-१ 'न कछु' का 'नहिं कछु' ,,
(५१) ६-३३/२ 'तिष्ठति' का 'तृषित' ,,
(५२) ६-९८-६ 'ठएऊ' का 'गएऊ' ,,
(५३) ६-९८-१५ 'भालुकपि' का 'भालुपति' ,,
(५४) ७-३२-८ 'ग्यान जोति' का 'ग्यान जोनि',,
(५५) ७-३५-१ 'की' का 'अति' ,,
(५६) १-४७-२ 'मुसकाई' का 'मुसुकाई' ,,
(५७) १-२७०-४ 'लहि' का 'लगि' ,,
(५८) ६-१०२-२ 'भएउ भ्रम' का 'भ्रम भएउ' ,,
(५९) ६-११५-६ 'मंथन पर मंदर' का 'मंदर पर मंदर' ,,

इस वर्ग के संशोधनों के सम्बन्ध में एक बात ध्यान देन योग्य है : यद्यपि अधिकतर स्थलों पर पाठांतर पाठ-प्रमाद या लिपि-प्रमाद के कारण संभव हो सकता है, कुछ स्थल निश्चित रूप से ऐसे हैं जहाँ पर दोनों पाठ एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं—कम से कम ऊपर जिन स्थलों पर तारक चिह्न लगाए गए हैं वे ऐसे ही हैं।

ऊपर के विवेचन से यह प्रकट हो गया होगा कि १७२१ में संशोधन बड़ी स्वच्छंदतापूर्वक किए गए हैं, और यह बात दोनों प्रकार के संशोधनों में दिखाई पड़ती है : उनमें भी जो १७६२ के पूर्व उक्त प्रति में हुए थे, और इसलिये जो १७६२ की प्रति में प्राथमिक पाठ के रूप में उतर आए हैं, और उनमें भी जो १७६२ के बाद हुए, और इसीलिये १७६२ में जिनके स्थान पर पूर्ववर्त्ती पाठ ही प्राथमिक पाठ के रूप में पाया जाता है।

१७६२ की प्रति—हर्ष की बात है कि १७६२ में इस प्रकार की मनमानी बहुत कम हुई है। संशोधन प्राय: ऐसे ही स्थलों पर हुए हैं जहाँ १७२१ में भी हुए हैं, इसलिये हम उन्हें दो वर्गों में रख सकते हैं :—

१—वे संशोधन जो १७२१ में भी मिलते हैं, और
२—वे जो केवल १७६२ में मिलते हैं।

पहले वर्ग के प्रमुख संशोधन निम्नलिखित हैं :—

(१) १-७४-६ सामान्य पाठ है : बेलपाति महि परै सुखाई।

१७२१ तथा १७६२ में पहले 'बेलवाति' लिखा हुआ था, उसको 'बेलपाति' बनाया गया है। 'बेलवाति' की अर्थहीनता प्रकट है।

(२) १-९८/२ वह दोहा जो सामान्यत: १-९९ है, १७२१ तथा १७६२ में एक बार और १-९८/२ के रूप में लिखा हुआ था। बाद में इन दोनों प्रतियों में भी वह केवल १-९९ रह गया। प्रसंग से यह प्रकट है कि वह वास्तव में १-९९ ही है, १-९८/२ नहीं।

(३) १-२२८-५ के प्रथम चरण के बाद के तीन चरण १७२१ तथा १७६२ में एक बार और कुछ अशुद्ध रूप में लिख उठे थे। बाद में दोनों प्रतियों में यह पुनरावृत्ति दूर कर दी गई है।

(४) ६-२२-८ पूर्व का पाठ था : पावा दरस मइँ बड़भागी। 'मइँ' के स्थान पर १७२१ तथा १७६२ में 'हमहुं' बनाया गया है। 'पावा' एकवचन के साथ 'मइँ' एकवचन ही समीचीन लगता है, 'हमहुं' बहुवचन नहीं।

(५) ७-२७ छं० सामान्य पाठ है : प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे। १७२१ तथा १७६२ में 'पुरट' लिखने से रह गया था, बाद में वह बढ़ाया गया है।

(६) ७-८६-७ सामान्य पाठ है : जेहि गति मोरि न दूसरि आसा। १७२१ तथा १७६२ में 'गति' के स्थान पर पाठ 'भगति' हो गया था। 'भगति' की अशुद्धि प्रकट है। बाद में दोनों में 'गति' पाठ कर दिया गया।

दूसरे वर्ग के संशोधन एकाध ही हैं, यथा :—

(१) १-८८ पूर्व का पाठ था :

सकल सुरन्ह के हृदय अस संकर परम उछाहु।
निज नयनन्हि देखा चहैं नाथ तुम्हार बिवाहु॥

१७२१ तथा १७६२ दोनों में 'चहैं' के स्थान पर पाठ 'चहौं' कर दिया गया। 'सुरन्ह' कर्त्ता के साथ 'चहै' क्रिया की समीचीनता प्रकट है, 'चहौं' स्पष्ट ही अशुद्ध है।

फलत: यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि १७६२ की प्रति १७२१ की प्रतिलिपि होते हुए भी पाठ-संरक्षा की दृष्टि से १७२१ की अपेक्षा अधिक महत्त्व की है।

१६९१ की प्रति—१६९१ की प्रति के संशोधनों को हम दो वर्गों में रख सकते हैं :—

१—वे जो १७०४ में प्राथमिक पाठ के रूप में पाए जाते हैं, और

२—वे जो १७०४ में प्राथमिक पाठ के रूप में नहीं पाए जाते हैं।

पहले वर्ग के संशोधन थोड़े ही हैं। उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं :—

(१) १-२६७-३ पूर्व का पाठ था : लोभ लोलुप कल कीरति चहई। १६९१ में 'लोभ' का 'लोभी' बनाया गया है। यद्यपि 'लोलुप' का स्वतंत्र प्रयोग भी ग्रन्थ में मिलता है, यथा :

जे कामी लोलुप जगमाहीं । १-१२५-८
लोभी लंपट लोलुप चोरा । २-१६८-३
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी । ७-१००८

किन्तु वहाँ 'चहई' क्रिया के एकवचन होने से कर्त्ता का एकवचन होना सिद्ध है, और 'लोभ लोलुप' ही एकवचन पाठ है, 'लोभी लोलुप' बहुवचन है।

(२) १-२७६-२ पूर्व का पाठ था : माता पितहि उरिन भये नीके। १६९१ में 'माता' के स्थान पर 'मातहि' कर दिया गया है। दोनों पाठों में कोई वास्तविक अंतर नहीं प्रतीत होता है।

(३) १-३०२ १ सामान्यतः निम्नलिखित अर्द्धाली पाई जाती है :—

सहित बसिष्ट सोह नृप कैसे। सुर गुर संग पुरंदर जैसे।

१६९१ में यह अर्द्धाली लिखने से रह गई थी, और बाद में बढ़ाई गई है। यद्यपि इस अर्द्धाली के बिना भी संगति लग सकती है, किंतु कवि ने इसके ऊपर की पंक्तियों में दोनों संभ्रांत सवारों के लिए ऐसे रथों का उल्लेख किया है जो 'नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने।' इसलिए वे सवार स्वतः सवारी करने पर कैसे लगते हैं, इसका उल्लेख प्रसंगोचित है।

यह ध्यान देने योग्य है कि उपर्युक्त तीन में से प्रथम दो १७२१/१७६२ में भी प्राथमिक पाठ के रूप में नहीं पाए जाते हैं, केवल तीसरा १७२१/१७६२ में प्राथमिक पाठ के रूप में पाया जाता है।

१६९१ में भरमार दूसरे प्रकार के संशोधनों की है, जिन्हें सुविधा के निम्नलिखित दो वर्गों में रक्खा जा सकता है :—

(अ) १६९१ के ऐसे संशोधन जो १७०४ तथा १७२१/१७६२ में से किसी में प्राथमिक पाठ के रूप में नहीं मिलते, और

(आ) १६९१ के ऐसे संशोधन जो यद्यपि १७०४ में नहीं, किन्तु १७२१/१७६२ में प्राथमिक पाठ के रूप में पाए जाते ह ।

२(अ) वर्ग के संशोधनों में से प्रमुख निम्नलिखित हैं। यह संशोधन संभवतः १७०४ के बाद के हैं, इसलिए यहाँ इनका विवेचन नहीं किया है। यद्यपि इनमें से कुछ पर विचार पाठ-विवेचनवाले अध्याय में अन्य प्रतियों के प्रसंग में मिल जावेगा :

(१) १-८-१२ 'भनिति' का 'भनित' बनाया गया है।
(२) १-९-११ 'कागर' का 'कागद' ”
(३) १-१४-३ 'पूरहुं' का 'पूरवहु' ”
(४) १-१९-६ 'जपि जेंई' का 'जपति सदाइ' ”
(५) १-२२-३ 'जानी' का 'जाना' ”
(६) १-२२ 'प्रेम' का 'सुप्रेम' ”
(७) १-२३-३ 'प्रौढ़ि' का 'प्रौढ़' ”
(८) १-२४-१ 'किये' का 'किय' ”
(९) १-२६-१ 'हरिहर' का 'हरहर' ”
(१०) १-२९-८ 'रामसभा' का 'राजसभा' ”
(११) १-४७-३ 'क्रम मन' का 'मन क्रम' ”

(१२) १-७७- तथा १-७८-१ के बीच निम्नलिखित अर्द्धाली बढ़ाई गई है : तब ऋषि तुरत गौरि पहं गयऊ। देखि दसा मुनि बिसमै भयऊ।

(१३) १-१११-२ पूर्व का पाठ था : 'भगति ज्ञान बिरागा।' 'ज्ञान और बिरागा' के बीच 'बिज्ञान' बढ़ाया गया है।

(१४) १-११९-२ 'बस' का 'सब' बनाया गया है।

(१५) १-१२४ १ 'दीन्ह' का कीन्ह ”

(१६) १-१२६ पूर्व का पाठ था : गहेसि जाइ मुनिचरन कहि सुठि आरत बैन। 'चरन' तथा 'कहि' के बीच में 'तब' बढ़ाया गया है।

(१७) १-१४९-६ पूर्व का पाठ था : तासु प्रभाउ जानहि सोई। 'प्रभाउ' तथा 'जानहि' के बीच 'न' बढ़ाया गया है।

(१८) १-१५१-१ 'बच' का 'बर' बनाया गया है।

(१९) १-१५२-५ 'पूरब' का 'पूरउब' "

(२०) १-१८३ छं०, १८४ छं०, १८६ छं० (पद्य ३ के चरण १, तथा २ के अतिरिक्त), तथा १९२ छं० (पद्य २, तथा ४ मात्र) ह्रस्वांत थे। बाद को इन्हें दीर्घांत किया गया है।

(२१) १-१९४ पूर्व का पाठ था : गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटेउ सुखकंद। 'सुख' का 'सुषमा' कर दिया गया है।

(२२) १-२००-४ 'सब' का 'बस' बनाया गया है।

(२३) १-२०० 'माता' का 'मात तब' "

(२४) १-२६७-४ पूर्व का पाठ था : हरिपद बिमुख पर गति चाहा। 'पर' को 'परम' कर दिया गया है।

(२५) १-२९७-२ 'बालक' का 'सावक' बनाया गया है।

(२६) १-३१६ 'चालि' का 'बाजि' "

(२७) १-३४५-३ पूर्व का पाठ था : 'तनु धरि धरि दसरथ गृह वाए।' 'वाए' के स्थान पर 'छाए' बनाया गया है।

२(आ) वर्ग के प्रमुख संशोधन निम्नलिखित हैं। ये संशोधन भी १७०४ के बाद के ही प्रतीत होते हैं, क्योंकि १७०४ की प्रति में इनका समावेश नहीं हुआ है, इसलिये यहाँ पर इनका विवेचन नहीं किया गया है, यद्यपि इनमें से कुछ के सम्बन्ध में विचार अन्य प्रतियों के प्रसंग में पाठ-विवेचन के अध्याय में किया गया है :—

(१) १-६-८ 'कबिनासा' का 'क्रमनासा' बनाया गया है।

(२) १-७-३ 'हरिनत' का 'हरिजन' "

(३) १-९-२ 'गादुर' का 'दादुर' "

(४) १-१४-४ 'जेन्ह' का 'जिन्ह' "

(५) १-३७-१३ 'दम' का 'द्रुम' "

(६) १-४७-७ 'जोहि' का 'जेहि' "

(७) १-७७-३—४ सामान्य पाठ है :

केहि अवराधहु का तुम चहहू। हम सन सत्य मरम किन कहहू॥
सुनत रिषिन्ह के बचन भवानी। बोली गूढ़ मनोहर बानी॥

कहत बचन मनु अति सकुचाई। हंसिहहु सुनि हमार जड़ताई ॥

ऊपर की प्रथम अर्द्धाली के 'किन कहहू' से लेकर तृतीय अर्द्धाली के 'कहत बचन' तक का अंश १६९१ में लिखने से रह गया था, वह बाद में बढ़ाया गया है।

(८) १-१७९-८ सामान्य पाठ है : एक बार कुबेर पर धावा। १६९१ में 'पर' लिखने से रह गया था, वह बाद में बढ़ाया गया है।

(९) १-१८६ सामान्य पाठ है :

जो भवभय भंजन जन मन रंजन गंजनु बिपति बरूथा।

१६९१ में 'गंजन' लिखने से रह गया था, बाद में वह बढ़ाया गया है।

(१०) १-१९५-२ 'सारद' का 'सादर' बनाया गया है।

(११) १-२३० सामान्य पाठ है :

सिय सोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।

'हिय बरनि' के स्थान पर १६४१ में 'सिय बरनि' लिख गया था। उसे 'हिय बरनि' बना दिया गया हैं।

(१२) १-३२५-२—३ सामान्य पाठ है :

कुंअरु कुंअरि कल भांवरि देहीं। नयन लाभु सब सादर लेहीं ॥
जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ॥
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगाति मनि खंभन्ह माहीं ॥
मनहु मदन रति धरि बहु रूपा। देखत राम बिवाहु अनूपा ॥

उपर्युक्त में से बीच की दो अर्द्धालियाँ १६९१ में लिखने से रह गई थीं, वह बाद से बढ़ा दी गई हैं।

ऊपर के विवेचन में यह प्रकट हो गया होगा कि १६९१ में भी १७२१ की भाँति—यद्यपि उतना नहीं—संशोधन प्रायः स्वच्छंदतापूर्वक किए गए हैं।

१७०४ की प्रति—हर्ष की बात है कि १७०४ में—१७६२ की भाँति ही—संशोधनों की ऐसी भरमार नहीं है। उसमें संशोधन प्रायः ऐसे ही स्थलों पर हुए हैं जहाँ १६९१ में भी हुए हैं। इसलिए हम इन्हें निम्न-लिखित दो वर्गों में रख सकते हैं :—

१—वे संशोधन जो १६९१ में भी मिलते हैं, और

२—वे संशोधन जो १६९१ में नहीं मिलते हैं।

पहले प्रकार के प्रमुख संशोधन निम्नलिखित हैं। यह संशोधन १७०४ के बाद के हैं, इसलिए इन पर यहाँ विचार नहीं किया गया है, यद्यपि अन्यत्र पाठ-विवेचन के अध्याय में इनमें से कुछ पर विवेचन मिल जावेगा।

(१) १-११७ सामान्य पाठ है : समुझि बिबिध बिनती अब मोरी। १७०४ में केवल 'बिनती मोरी' था, बाद में 'बिबिध' और 'बिनती' के बीच में 'बिधि' बढ़ा दिया गया है। ऐसा ही १६९१ में भी हुआ है।

(२) १-७८-३-४ सामान्य पाठ है :

केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू। हम सन सत्य मरमु किन कहहू॥
सुनत रिषिन्ह के बचन भवानी। बोली गूढ़ मनोहर बानी॥
कहत बचन मनु अति सकुचाई। हंसिहहु सुनि हमारि जड़ताई॥

१७०४ में ऊपर की प्रथम अर्द्धाली के 'मरमु' के बाद से लेकर तृतीय अर्द्धाली के 'मनु' के पूर्व तक का अंश लिखने से रह गया था। १६९१ तथा १७०४ दोनों में पीछे से यह अंश बढ़ाया गया है।

(३) १-१९४ पूर्व का पाठ था : गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटेउ सुख कंद। १७९४ में 'सुख' और 'कंद' के बीच 'मा' बढ़ा दिया गया है। १६९१ में भी ऐसा ही हुआ है।

(४) १-२४० सामान्य पाठ है : कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि। १७०४ में 'नर नारि' के स्थान पर 'महिपाल' था, जो बाद को 'नर नारि' बनाया गया है।

दूसरे प्रकार के प्रमुख संशोधन निम्नलिखित हैं। इन पर भी उपर्युक्त की भाँति यहाँ विचार नहीं किया गया है :

(१) १-१२-४ सामान्य पाठ है :

तिन्ह महं प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी॥

'धंधक' के स्थान पर १७०४ में 'धंध्रक' लिख गया था, संशोधन 'धंधरच' लिखकर किया गया है।

(२) १-१४९-१ सामान्य पाठ है :

सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी। धरि धीरजु बोले मृदु बानी॥

१७०४ में पूर्व का पाठ 'बोले' था, उसको 'बोली' बनाया गया है।

(३) १-१७९-८ सामान्य पाठ है : एक बार कुबेर पर धावा। पुष्पक जान जीति लै आवा। १७०४ में 'पर' लिखने से रह गया था, उसके स्थान पर बाद में 'कहुँ' बढ़ाया गया है।

(४) ७-२ छं० सामान्य पाठ है :

रघुबीर निजमुख जासु गुन गन कहत अगजग नाथ जो।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सदगुन सिंधु सो॥

१७०४ में पाठ 'सदगुन सिंधु' ही था, उसके स्थान पर 'सदगुन पाथ' कर दिया गया है।

फलतः यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यद्यपि समय की दृष्टि से १७०४ की प्रति १६९१ के पीछे की है, पाठ-संरक्षा की दृष्टि से कदाचित् उससे अधिक महत्त्व की है।

छक्कनलाल की प्रति—पाठ-परिवर्तन छक्कनलाल की प्रति में इतना हुआ है जितना ऊपर आई हुई कदाचित् किसी प्रति में नहीं हुआ है। नीचे उनमें से केवल प्रमुख का उल्लेख किया जा रहा है; पूर्ववर्ती तथा परवर्ती पाठों की संगति आदि के संबंध में यहाँ विचार करने की आवश्यकता इसलिये नहीं समझी गई है कि प्रति विक्रमीय बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ की है, और अन्यत्र पाठ-विवेचनवाले अध्याय में पाठ-विचार प्रायः समस्त के संबंध में किया भी गया है :—

(१) १-२-११ 'राज' का 'साज' बनाया गया है।
(२) १-५-२ 'कबहुँ' का 'कबहिं' ,,
(३) १-७ 'सोषक पोषक' का 'पोषक सोषक' ,,
(४) १-९ ११ 'कागर' का 'कागद' ,,
(५) १-१०/२ 'ग्राम' का 'ग्राम्य' ,,
(६) १-१२-६ 'थोरे' का 'थोरेहि' ,,
(७) १-१२-७ 'बिधि बिनती' का 'बिनती अब' ,,
(८) १-१७ 'ग्यान धन' का 'ग्यान धर' ,,
(९) १-२०-८ 'मंजु कंज' का 'कंज मंजु' ,,

(१०) १-२० 'बिराजत' का 'बिराजित' बनाया गया है।
(११) १-२२-४ 'लय' का 'लौ' ,,
(१२) १-२२ 'प्रेम' का 'पेम' ,,
(१३) १-२३-२ 'मोरें' का 'हमरें' ,,
(१४) १-२३-३ 'प्रौढ़ि' का 'प्रौढ़' ,,
(१५) १-२५-५ 'सकुल रन' का 'सकल कुल' ,,
(१६) १-२७-५ 'समन सकल जगजाला' का 'सकल समन जंजाला'' ,,
(१७) १-२९-३ 'मोरि' का भोरि' ,,
(१८) १-३७-१४ 'नेम' का 'नियम' ,,
(१९) १-३९-७ 'भाऊ' का 'चाऊ' ,,
(२०) १-४१-४ 'सुबंधु' का 'सुबंध' ,,
(२१) १-४८ 'गुप्त' का 'गुपुत' ,,
(२२) १-४९-७ 'इव नर' का 'नर इव' ,,
(२३) १-५७ 'होइ' का 'होत' ,,
(२४) १-६१ 'कृपायतन' का 'कृपाअयन' ,,
(२५) १ ६६-६ 'बर' का 'तब' ,,
(२६) १-६७-६ 'तिय' का 'त्रिय' ,,
(२७) १-७१-२ 'समुझे' का 'बूझे' ,,
(२८) १-७१ 'सब' का 'अब' ,,
(२९) १-७१ 'पारबतिहि' का 'पारबती' ,,
(३०) १-७२-४ 'तुम्ह' का 'सब' ,,
(३१) १-७७-३ 'गुर प्रभु' का 'प्रभु गुर' ,,
(३२) १-७७ 'प्रेरि' का 'जाइ' ,,
(३३) १-७७ 'पठवहु' का 'पठएहु' ,,
(३४) १-७८-३ 'किन' का 'सब' ,,
(३५) १-७८-८ 'सदा सिवहि' का 'सिवहि सदा' ,,
(३६) १-९७-१ 'काह' का 'कहा' ,,
(३७) १-१०४-२ 'नयन' का 'नयनन्हि' ,,
(३८) १-१११-६ 'कह' का 'कर' ,,

(३९) १-१३०-४ 'जेहि' का 'जिसु' बनाया गया है।
(४०) १-१३१-८ 'तेहि' का 'येहि' ,,
(४१) १-१३१-८ 'हैं' का 'हे' ,,
(४२) १-१८३-१ 'पहिलेहि' का 'पहिले' ,,
(४३) १-१८३-४ 'हानी' का 'ग्लानी' ,,
(४४) १-२०५ 'एहि मिस मैं' का 'ऐहू मिस' ,,
(४५) १-२३४-६ 'बरिआ' का 'बेरिआ' ,,
(४६) १-२३५-७ 'मध्य' का 'अंत' ,,
(४७) १-२४४-३ 'टारे' का 'तारे' ,,
(४८) १-२५२-२ 'सके' का 'सकेउ' ,,
(४९) १-२६६ 'मोह' का 'कोह' ,,
(५०) १-२६७-३ 'लोभी' का 'लोभ' ,,
(५१) १-२८५ ५ 'कहा' का 'काह' ,,
(५२) १-२८८-१ 'सपरन' का 'सपरब' ,,
(५३) १-३४३-५ 'बिधि' का 'सिधि' ,,
(५४) २-१७-७ 'जल' का 'जर' ,,
(५५) २-२२-८ 'प्रिय' का 'फुर' ,,
(५६) २-२७-५ 'तेइ' का 'तेहिं' ,,
(५७) २-२८-६ 'मुनि' का 'मनु' ,,
(५८) २-३६-१ 'भूपपद' का 'भूपतहिं' ,,
(५९) २-३६-८ 'नहारुहिं' का 'नहारू' ,,
(६०) २-४२-४ 'तेउ न पाइ अस' का 'तेऊ पाय न' ,,
(६१) २-५०-१ 'कोपि' का 'कोटि' ,,
(६२) २-५१-८ 'इहै' का 'मिटा' ,,
(६३) २-७५-२ 'हानी' का 'जानी' ,,
(६४) २-७५-४ 'फल सुत' का 'बड़ फल' ,,
(६५) २-८९-८ 'आनी' का 'पानी' ,,
(६६) २-९८ 'मोर' का 'मोरि' ,,
(६७) २-१३६-५ 'करब' का 'करबि' ,,

(६८) २-१७८-२ 'देख' का 'दीखि' बनाया गया है।
(६९) २-२५३-६ 'हइ' का 'हर' ,,
(७०) २-२५७-४ 'सरसी सीपि कि' का 'सरसीपी किमि' ,,
(७१) ३-६-९ 'बन' का 'अब' ,,
(७२) ३-१०-१२ 'चलि' का 'पुनि' ,,
(७३) ३-१४ 'जीवहिं' का 'जीव' ,,
(७४) ३-२९/१ 'राखेसि' का 'राखिसि' ,,
(७५) ३-३५-३ 'मतिमंद' का 'अति मंद' ,,
(७६) ३-३९-५ 'सत' का 'सत्य' ,,
(७७) ३-४०-६ 'पलास' का 'पनास' ,,
(७८) ४-१३-६ 'कै' का 'की' ,,
(७९) ४-२७-२ 'बाहर' का 'बाहिर' ,,
(८०) ४-३० 'त्रिपुरारि' का 'त्रिसिरारि' ,,
(८१) ५-०-३ 'होइ' का 'होइहि' ,,
(८२) ५-०-८ 'तेही' का 'ऐही' ,,
(८३) ५-२०-२ 'सुने' का 'सुनेहि' ,,
(८४) ५-२७-४ 'बिरद' का 'बिरिद' ,,
(८५) ५-३३ 'प्रताप' का 'प्रभाव' ,,
(८६) ५-५९-४ 'जस' का 'जसि' ,,
(८७) ६-९-१ 'सब' का 'सठ' ,,
(८८) ६-१० 'नहिं' का 'न' ,,
(८९) ६-१६-२ 'कबि' का 'सब' ,,
(९०) ६-१९-४ 'बैसा, जैसा' का 'वैसे, जैसे' ,,
(९१) ६-२१-१ 'न बोलु' का 'बोलु' ,,
(९२) ६-२८-२ 'सठ का 'सब' ,,
(९३) ६-४२-७ 'फिरा मैं जाना' का 'सुना मैं काना' ,,
(९४) ६-४२ 'कीन्हे' का 'किए' ,,
(९५) ६-९९-११ 'करत' का 'कर' ,,
(९६) ७-१०-४ 'सुभदाई' 'समुदाई' ,,

(९७) ७-११-८ 'कोटि छबि' का 'देखि सत' बनाया गया है।
(९८) ७-१४-७ 'मनुजात' का 'मनजात' ,,
(९९) ७-१८-६ 'जानि' का 'नाथ' ,,
(१००) ७-२८ 'चारु' का 'रुचिर' ,,
(१०१) ७-३१-२ 'बहुतेहु, बहुतन्ह' का 'बहुतेन्ह, बहुतन्ह' ,,
(१०२) ७-३४-४ 'अनुपम अज' का 'अति अनुपम' ,,
(१०३) ७-४४-३ 'गहै' का 'ग्रहै' ,,
(१०४) ७-४४ 'आत्महन' का 'आत्माहन' ,,
(१०५) ७-४८-६ 'उपरोहिती' का 'उपरोहित्य' ,,
(१०६) ७-५३-६ 'निजातम' का 'निजात्मक' ,,
(१०७) ७-५६-६ 'बरागा' का 'बेरागा' ,,
(१०८) ७-६३-१ 'जप' का 'तप' ,,
(१०९) ७-६३-१ 'भुसुंडी, अखंडी' का 'भुसुंडा, अखंडा' ,,
(११०) ७-६३/२ 'जिन्हकै' का 'जेहिकै' ,,
(१११) ७-७१-६ 'नारि' का 'लोक' ,,
(११२) ७-८१-६ 'सरजू' का 'सरऊ' ,,
(११३) ७-८६-९ 'जीवन' का 'जीवहु' ,,
(११४) ७-९२-८ 'धरा' का 'भार' ,,
(११५) ७-९३-२ 'प्रभाउ' का 'प्रताप' ,,
(११६) ७-९४ 'आएउं' का 'आए' ,,
(११७) ७-९८-२ 'बंचक' का 'बेचक' ,,
(११८) ७-१००-९ 'दाना' का 'नाना' ,,
(११९) ७-११२-२ 'कि होइ' का 'की होहिं' ,,
(१२०) ७-१२२-८ 'भलेही रोग' का 'भलेहि सो रोग' ,,
(१२१) ७-१२५-७ 'पै' का 'परि' ,,
(१२२) ७-१३०-८ 'भजिअ' का 'भजहि' ,,
(१२३) १-२९-६ 'समदरसी' का 'सबदरसी' ,,
(१२४) १-१४२-२ 'ध्रुव हरिभक्त' का 'ध्रुव हरिभगत' ,,
(१२५) ३-६-७ 'भजिअ' का 'भजी' ,,

812-H
349
11237

(१२६) ७-० श्लो०/२ 'कोमलांबुज' का 'कोमलावज' बनाया गया है।
(१२७) ७-१०९-८ 'प्रमाना' का 'प्रवाना' ,,

फलतः यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पाठ-संरक्षा की दृष्टि से छक्कनलाल की प्रति सबसे गई-बीती है।

शेष प्रतियाँ—ऊपर उल्लिखित शेष प्रतियों में से रघुनाथदास, बंदन पाठक, तथा कोदवराम की प्रतियाँ मुद्रित हैं, इसलिए उनके संबंध में पाठ-संरक्षा की समस्या नहीं उठती; और जो हस्तलिखित हैं, उनमें पाठ सुरक्षित हैं, कहीं पर भी कोई उल्लेखनीय पाठ-परिवर्तन नहीं हुआ है।

प्रतियों का पाठ-संबंध

ऊपर हम देख चुके हैं कि १७६२ की प्रति १७२१ की प्रतिलिपि है। परिवर्तित पाठों को अलग रखकर प्राथमिक पाठों को देखने पर अंतर केवल १७६२ की निजी अशुद्धियों का ज्ञात होगा, अन्यथा दोनों एक ही पाठ प्रस्तुत करती हैं।

१६९१ तथा १७०४ के विषय में ऊपर हम देख चुके हैं कि वे एक ही आदर्श की प्रतिलिपियाँ हैं। अंतर दोनों में केवल उनकी निजी अशुद्धियों का है, अन्यथा दोनों एक ही पाठ प्रस्तुत करती हैं।

किन्तु, इतना घनिष्ठ संबंध ऊपर की किन्हीं भी अन्य दो प्रतियों में प्रमाणित नहीं हो सका है। उनके विषय में केवल पाठ-साम्य के आधार पर ही विचार किया जा सकता है।

छक्कनलाल के परिवर्तित पाठों को अलग रखकर यदि देखा जावे, तो ज्ञात होगा कि कुल प्रायः आधे दर्जन स्थलों को छोड़कर समस्त प्रति का पाठ रघुनाथदास का ही है। यह बात आगे के तुलनात्मक पाठ-चक्र से स्पष्ट हो जावेगी। यह दोनों में प्रतिलिपि-संबंध होने के कारण ही साधारणतः संभव होना चाहिए, अन्यथा यह तो मानना ही होगा कि दोनों एक ही आदर्श से संबंधित हैं।

छक्कनलाल तथा बंदन पाठक में भी अंतर अधिक नहीं है, यद्यपि रघुनाथदास की अपेक्षा अवश्य कुछ अधिक है, और यह भी तुलनात्मक पाठ-चक्र से स्पष्ट देखा जा सकता है। इसलिये रघुनाथदास की भाँति छक्कन-

लाल के साथ इसके भी प्रतिलिपि-संबंध की संभावना है। अन्यथा इतना तो इसके संबंध में भी मानना होगा कि यह उसी आदर्श से संबंधित है जिससे छक्कनलाल और रघुनाथदास हैं। प्रतिलिपि-समय की दृष्टि से उपर्युक्त तीनों का क्रम इस प्रकार है: छक्कनलाल—रघुनाथदास—बंदन पाठक। रघुनाथदास और बंदन पाठक संपादित तथा मुद्रित प्रतियाँ हैं, और उसी स्थान से (काशी से) प्रकाशित हैं जहाँ उपर्युक्त छक्कनलाल की प्रति थी। इसलिये प्रतिलिपि-संबंध के अभाव में छक्कनलाल से इनके अन्यथा प्रभावित होने की संभावना भी यथेष्ट मानी जा सकती है।

मिर्ज़ापुर समूह की प्रतियाँ इस समूह से यद्यपि कुछ अलग पड़ती हैं, किंतु जैसा तुलनात्मक पाठ-चक्र से देखा जा सकता है, दोनों समूहों में इतना पाठ-साम्य अवश्य है कि वे एक ही कुल के कहे जा सकें। किंतु इस के साथ ही जहाँ पर दोनों समूहों में अंतर है, वहाँ पर प्रायः मिर्ज़ापुर समूह का पाठ शेष शाखाओं के अपेक्षाकृत निकटतर है, इसलिये इस बात की संभावना यथेष्ट है कि मिर्ज़ापुर समूह अपने कुल के उपर्युक्त दूसरे समूह की अपेक्षा मूल आदर्श के अधिक निकट है।

कोदवराम एक भिन्न शाखा की प्रति है, यद्यपि जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, यह कहना कठिन है कि वह अपनी शाखा की शुद्ध प्रतिनिधि है।

१६९१/१७०४, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, मूलतः १७२१/१७६२ के साथ प्रतिलिपि संबंध से संबंधित हैं, किंतु पाठ की दृष्टि से यदि देखा जावे, जैसा तुलनात्मक पाठ-चक्र से ज्ञात होगा, दोनों शाखाओं में बड़ी विभिन्नता है। प्रतिलिपि-संबंध होते हुए भी इतनी विभिन्नता एक ही कारण से संभव हो सकती है: वह यह कि दो में से एक पर किसी तीसरी शाखा का ऋण है।

ऊपर की शेष प्रतियाँ एक स्वतंत्र कुल की ज्ञात होती हैं, जिसका पाठ, जैसा तुलनात्मक पाठ-चक्र से ज्ञात होगा, १६९१/१७०४ के निकटतम है। यदि १६९१/१७०४ शाखा किसी अन्य शाखा से प्रभावित हुई हो, तो असंभव नहीं कि वह अन्य शाखा यही हो, और १६९१/१७०४ इसी के किसी प्राचीन पूर्वज से प्रभावित हो।

फलतः पाठ-संबंध के आधार पर हम ऊपर के परिणामों को इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं:

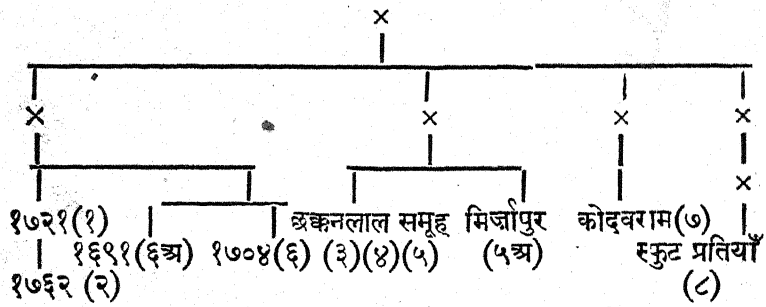

अंतर और उसका समाधान

ऊपर की विभिन्न शाखाओं में परस्पर पाठ-विषयक अंतर कितना है, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४ में प्रायः १००० स्थलों पर पाठ-भेद है, १७२१/१७६२ तथा कोदवराम में भी पाठ-भेद इससे कम न होगा, १७२१/१७६२ तथा छक्कन-लाल समूह में भी पाठ-भेद प्रायः इसके आधे स्थलों पर होगा। इस अंतर का समाधान किस प्रकार किया जा सकता है, हमारे पाठ-विवेचन की सबसे टेढ़ी समस्या यही है।

पाठों में अंतर दो प्रकार से संभव होता है—अज्ञात भाव से अर्थात् पढ़ने या लिखने में भूल के कारण, अथवा ज्ञात भाव से अर्थात् जान-बूझकर। इसमें संदेह नहीं कि बहुत से पाठ-भेद ऊपर की शाखाओं में अज्ञात भाव से संभव है, किन्तु ऐसे पाठ-भेद भी कम नहीं हैं जो निश्चित रूप से ज्ञात भाव से संभव हैं। इस प्रकार के पाठ-भेद भी ग्रंथ में मिलते हैं जहाँ पर एक या दो अक्षर या शब्द ही नहीं, चौपाई या दोहे के चरण के चरण बदले हुए हैं, अथवा चौपाई के स्थान पर दोहा और दोहा के स्थान पर चौपाई है—लंकाकांड के ही पाठ-भेदों पर दृष्टि डालने से इस कथन की यथार्थता प्रमाणित हो जावेगी। ज्ञात भाव से संभव पाठांतर पुनः दो प्रकार के हो सकते हैं : स्वतः कविकृत, तथा अन्यकृत। 'मानस' की रचना के बाद भी कवि प्रायः ५० वर्ष तक जीवित था, और प्रायः ४० वर्ष तक

तो काव्य-रचना भी करता रहता था यह निर्विवाद रूप से ज्ञात है। अतः यह आशा की जा सकती है कि अपनी इस सब से महत्त्वपूर्ण कृति का वह पारायण करते हुए बीच-बीच में पाठ-सुधार भी करता रहा होगा। ज्ञात भाव से संभव इतर पाठांतर अन्य व्यक्तियों के होंगे। प्रश्न यह है कि कौन से पाठांतर कविकृत हो सकते हैं, और कौन से अन्यकृत।

किन्तु इस प्रश्न पर विचार करने के पूर्व एक और समस्या सुलझाने की आवश्यकता है : विभिन्न शाखाओं में पाठ-विषयक अंतर सामान्यतः किसी विकास-क्रम में हुआ है, या अन्यथा ? और, यदि कोई विकास-क्रम है, तो वह क्रम कौन सा है ?

इस प्रसंग में यह बताना उचित होगा कि 'मानस-पाठभेद' शीर्षक ऊपर उल्लिखित अपने लेख में पं० शंभुनारायण चौबे ने पाठ-भेद यद्यपि प्रतियों की क्रम-संख्या देते हुए दिए हैं, उन्होंने प्रतियों का यह क्रम किस प्रकार बाँधा है यह नहीं लिखा है। किन्तु ऐसा ज्ञात होता है कि सामान्यतः भागवतदास खत्री के संस्करण से पाठांतर के आधार पर ही यह क्रम उन्होंने निर्धारित किया है : जिस प्रति का पाठ उसके जितना निकट या दूर उन्होंने देखा है, उसकी क्रम-संख्या भी उन्होंने १ से प्रारम्भ करके उतनी ही निकट या दूर की रक्खी है। किन्तु इससे हमारी समस्या पर कोई निश्चयात्मक प्रकाश नहीं पड़ता। इसलिये हमें स्वतन्त्र रूप से अपनी समस्या के ध्यान से इस पाठांतर पर विचार करना है। यह अवश्य है कि पं० शंभुनारायण चौबे ने अपने उक्त लेख में उक्त प्रतियों के प्रायः ८०% पाठ-भेद दिए हैं, और यह ८०% उन्होंने चयन की दृष्टि से संभवतः बिना किसी पूर्वस्थापित धारणा या भावना के दिए हैं, इसलिये सामान्यतः इन्हीं का सम्यक् अध्ययन उपर्युक्त समस्याओं के सम्बन्ध में यथेष्ट होना चाहिए। सिद्धान्तों की रूपरेखा स्पष्ट हो जाने पर शेष पाठ-भेदों का भी उपयोग किया जा सकता है।

प्रस्तुत समस्या की दृष्टि से यदि पाठ-भेदों को लिया जावे, तो ज्ञात होगा कि यद्यपि उनमें से सब के सब किसी विकास-क्रम में नहीं रक्खे जा सकते, फिर भी एक महत्त्वपूर्ण प्रतिशत उनमें ऐसे पाठ-भेदों की है जो विकास-क्रम की शृंखला में रक्खे जा सकते हैं, और इन पाठ-भेदों के

आधार पर क्रम इस प्रकार होगा : १७२१/१७६२—छक्कनलाल समूह/मिर्ज़ापुर समूह—कोदवराम—१६९१/१७०४ ।

इस निष्कर्ष का कारण यह है कि १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४ पाठ-भेद की दृष्टि से दो छोरों पर स्थित हैं, और १७२१/१७६२ की ओर से चलने पर उसकी तुलना में कुछ पाठ-भेद ऐसे हैं जो छक्कनलाल समूह/मिर्ज़ापुर समूह, कोदवराम तथा १६९१/१७०४ में मिलते हैं, कुछ ऐसे हैं जो कोदवराम तथा १६९१/१७०४ में ही मिलते हैं, और कुछ केवल १६९१/१७०४ में मिलते हैं; और इसी प्रकार १६९१/१७०४ की ओर से चलने पर उसकी तुलना में कुछ पाठ-भेद ऐसे हैं जो केवल १७२१/१७६२ में मिलते हैं, कुछ ऐसे हैं १७२१/१७६२ तथा छक्कनलाल समूह/मिर्ज़ापुर समूह में मिलते हैं, और कुछ १७२१/१७६२, छक्कनलाल समूह/मिर्ज़ापुर समूह, तथा कोदवराम में भी मिलते हैं। चौबे जी के द्वारा दिए हुए उपर्युक्त ८०% पाठ-भेदों में से उन पाठ-भेदों को लेने पर जो विकास-शृंखला में आते हैं, स्थिति कुछ इस प्रकार होगी :—

१७२१/१६६२	छक्कनलाल समूह मिर्ज़ापुर समूह	कोदवराम	१६९१/१७०४
	बाल कांड		
—	३८	३६	३८
		२३	२३
			१८
	३८	५९	७९
	अयोध्या कांड		
—	—	—	—
	—	—	—
			४
	०	०	४

१७२१/१७६२	छक्कनलाल समूह मिर्जापुर समूह	कोदवराम	१६९१/१७०४
	अरण्य कांड		
—	६	६	६
		१	१
			१
	६	७	८
	किष्किंधा कांड		
—	१	१	१
		२	२
			४
	१	३	७
	सुंदर कांड		
—	४	४	४
		४	४
			२
	४	८	१०
	लंका कांड		
—	१२	१२	१२
		१६०	१६०
			६९
	१२	१७२	२४१
	उत्तर कांड		
—	१९	१९	१८*
		२४	१८*
			१०*
	१९	४३	४६

* प्रति के केवल प्राचीन अंश में

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह स्थिति १७२१/१७६२ की ओर से चलने पर होती है। १६९१/१७०४ की ओर से चलने पर इन्हीं पाठ-भेदों को उपर्युक्त दूसरे ढंग से देखा जा सकता है। किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि इस क्रम में आनेवाले पाठ-भेदों को किसी अन्य क्रम में नहीं रक्खा जा सकता, और न कोई दूसरे ही ऐसे पाठ-भेद हैं जिन्हें इस प्रकार के किसी क्रम में रक्खा जा सकता हो। फलतः यह मानना पड़ेगा कि पाठ-भेदों में एक महत्त्वपूर्ण संख्या ऐसों की है जो विकास-क्रम में रक्खे जा सकते हैं, और वह विकास क्रम उपर्युक्त है।

शृंखला निर्धारित हो जाने के अनंतर ही देखना यह है कि इसमें आए हुए पाठ-भेदों में कोई ऐसी विशेषता भी है, या नहीं, जिसके आधार पर उसका ठीक-ठीक स्वरूप समझा जा सके। इस दृष्टि से देखने पर—जैसा हम पाठ-विवेचन के अध्याय में देखेंगे—ज्ञात होगा कि पहले अर्थात् १७२१/१७६२→ १६९१/१७०४ क्रम से उपर्युक्त शृंखला में आनेवाले विभिन्न शाखाओं के पाठ-भेदों में से ८०% से ९०% तक अपने पूर्ववर्ती पाठ की तुलना में निश्चित रूप से उत्कृष्टतर हैं, और शेष १०% से २०% भी अपने पूर्ववर्ती पाठ की तुलना में किसी प्रकार हीन नहीं हैं; और इसी प्रकार दूसरे अर्थात् १६९१/१७०४→ १७२१/१७६२ क्रम से उपर्युक्त शृंखला में आनेवाले विभिन्न शाखाओं के पाठ-भेदों में से ८०% से ९०% तक अपने परवर्ती पाठ की तुलना में उत्कृष्टतर हैं, और शेष १०% से २०% भी अपने परवर्ती पाठ की तुलना में किसी प्रकार हीन नहीं हैं। फलतः पहले को हम पाठ-संस्कार-क्रम और दूसरे को हम पाठ-विकृति-क्रम कह सकते हैं।

इस शृंखला के बाहर पड़नेवाले पाठ-भेदों के सम्बन्ध में विचार करना शेष है। इनको देखने पर—जैसा हम पाठ-विवेचन के अध्याय में देखेंगे—ज्ञात होगा कि विभिन्न शाखाओं में ७०% से ८८% तक पाठ-भेद निश्चित रूप से त्रुटिपूर्ण हैं, ७% से १०% तक ऐसे हैं जो शृंखला में आनेवाले पाठ के समान हैं और केवल ५% से २०% तक ऐसे हैं जो शृंखला में आनेवाले पाठ की तुलना में उत्कृष्टतर कहे जा सकते हैं। शृंखला में आनेवाले पाठों की प्रायः शत-प्रतिशत शुद्धता और विभिन्न

शाखाओं में ८०% से ९०% का पूर्ववर्ती (या दूसरी दृष्टि से परवर्ती) पाठ की तुलना में उत्कृष्टतर (या दूसरी दृष्टि से निकृष्टतर) होना, और शृंखला के बाहर पड़नेवाले विभिन्न शाखाओं के पाठ-भेदों में से ७०% से ८८% का निश्चित रूप से त्रुटिपूर्ण होना और केवल ५% से २०% तक का उत्कृष्टतर होना पाठ-विकास-क्रम के सम्बन्ध में पहुँचे हुए हमारे उपर्युक्त परिणामों की शुद्धता का एक अन्य प्रबल प्रमाण है।

इतना कम अंतर सैद्धांतिक और वास्तविक परिणामों में अस्पष्ट रूप से इसी बात की ओर संकेत करता है कि ऊपर पाठ-संस्कार के जिस क्रम पर पहुँचे हैं वह संभवत: कविकृत है। किन्तु, साथ ही, इस सम्बन्ध में सब से उत्तम साधन कवि के प्रयोगों का अध्ययन है। कहने की आवश्यकता नहीं कि जो पाठ-भेद ऊपर के परिणामों के अनुसार शृंखलाओं के बाहर पड़ने के कारण असिद्ध हैं, उन्हें सामान्यत: कवि के प्रयोगों की दृष्टि से अशुद्ध होना चाहिए, और इसी प्रकार उक्त परिणामों के अनुसार जो पाठ-भेद संस्कार-क्रम म आते हैं, उन्हें सामान्यत: कवि-प्रयोग-सम्मत होना चाहिए। पहले के विषय में कदाचित् अपवाद भी हो जावें—और तब उन्हें सामान्यत: प्रसंग या अन्य किसी दृष्टि स त्रुटिपूर्ण उतरना चाहिए—दूसरे के विषय में अपवाद न होना चाहिए—अर्थात् ऐसे एक भी पाठ-भेद को शुद्ध मानने में कठिनाई होगी जो कवि-प्रयोगसिद्ध नहीं हैं। अधिक से अधिक यह हो सकता है कि उक्त संस्कार-क्रम में आनेवाले पूर्ववर्ती पाठों में यदा-कदा इस नियम के अपवाद मिल जावें, परवर्ती पाठों में इस नियम के अपवाद न होने चाहिएँ। और, आगे आनेवाले पाठ-विवेचन से यह प्रकट हो जावेगा कि वास्तविकता भी यही है।

इन्हीं दृष्टियों से आगे के पृष्ठों में क्रमश: पहले पं० शंभु-नारायण चौबे के दिए हुए पाठ-भेदों के तथा तदनंतर शेष पाठ-भेदों के संस्कार-क्रम से निर्मित तुलनात्मक पाठ-चक्र, और तदनंतर उक्त चक्रों के अनुसार उपर्युक्त सिद्धान्तों के आधार पर स्वीकृत तथा अस्वीकृत पाठ-भेदों के विस्तृत विवेचन कांड-क्रम से प्रस्तुत किए गए हैं। पाठांतर के विषय में ऊपर जो विचार-सरिणी प्रस्तुत की गई है, वह इन्हीं के आधार पर निर्मित है, और एक प्रारंभिक गवेषणा मात्र है। विश्वास है कि उक्त

पाठ-चक्र तथा पाठ-विवेचन के पृष्ठ ऊपर उठाई हुई समस्याओं के संतोष-जनक समाधान प्रस्तुत करेंगे।

संपादन

उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के अनंतर 'मानस' के संपादन की समस्या एक सरल समस्या रह जाती है। ऊपर हम देख चुके हैं कि पाठ-संस्कार-क्रम इस भाँति है: १७२१/१७६२→छक्कनलाल समूह/मिर्ज़ापुर समूह→कोदवराम→१६९१/१७०४।

क्रमशः हम इस बात पर विचार करेंगे कि ऊपर के क्रम में आनेवाली विभिन्न स्थितियों के पाठ किस प्रकार पुनर्निर्मित किए जा सकते हैं।

१७२१/१७६२ की स्थिति का पाठ-निर्माण—ऊपर हम यह देख चुके हैं कि १७६२ की प्रति १७२१ की प्रतिलिपि मात्र है, इसलिये दोनों के पाठांतर के प्रसंग में १७२१ को ही सामान्यतः प्रमाण मानना चाहिए। किन्तु, ऊपर हम यह भी देख चुके हैं कि १७२१ में पाठ-परिवर्तन बहुत हुआ है, और वह अधिकतर ऐसा है जो १७६२ के भी बाद का है, इसलिये हमें १७२१ के प्राथमिक पाठ को ही प्रमाण-कोटि में लेना होगा। यह अवश्य है कि १७२१ में हरताल लगाकर पाठ-परिवर्तन किए जाने के कारण अनेक स्थल ऐसे हैं जहाँ पर प्राथमिक पाठ पढ़ा भी नहीं जाता, और १७६२ की प्रति में इस प्रकार के पाठ-परिवर्तन इने-गिने हैं। इसलिये उन स्थलों के सम्बन्ध में जिनका पाठ-परिवर्तन १७६२ के बाद हुआ १७६२ की सहायता ली जा सकती है। किन्तु, जैसा ऊपर बताया जा चुका है, कुछ स्थल ऐसे भी हैं जहाँ पर दोनों में पाठ-परिवर्तन हुआ है; ऐसे स्थलों पर दोनों के प्राथमिक पाठों को जिस प्रकार सम्भव हो पढ़ने की चेष्टा करनी पड़ेगी, और तदनंतर पाठ-निर्धारित करना पड़ेगा। किन्तु, यह केवल १७२१ की प्रति के पाठ का पुनर्निर्माण हुआ। १७२१ की स्थिति की किसी अन्य प्रति के अभाव में और अधिक निश्चयपूर्वक उसकी स्थिति का पाठ-निर्माण असंभव है।

छक्कनलाल समूह/मिर्ज़ापुर समूह की स्थिति का पाठ-निर्माण—ऊपर हम देख चुके हैं कि छक्कनलाल की प्रति में पाठ-परिवर्तन बहुत हुआ है, इसलिए उसके प्राथमिक पाठ पर ही निर्भर रहा जा सकता है। यह भी हम देख चुके हैं कि रघुनाथदास की मुद्रित प्रति का पाठ इने-गिने स्थलों को छोड़कर वही है जो छक्कनलाल का प्राथमिक है। बंदन पाठक छक्कनलाल से अपेक्षाकृत दूर अवश्य है, फिर भी विशेष नहीं। किन्तु रघुनाथदास तथा बंदन पाठक के संपादित और मुद्रित होने के कारण वैसी भूलें उनमें नहीं रह गई हैं जिनके आधार पर छक्कनलाल के साथ उनके प्रतिलिपि-संबंध का निश्चय किया जा सके। इसलिए इस बात की संभावना यथेष्ट है कि रघुनाथदास तथा बंदन पाठक की सहायता लेने पर भी छक्कनलाल समूह का पाठ एक प्रति का ही पाठ हो। किन्तु इस संबंध में इतना अच्छा है कि मिर्ज़ापुर समूह की प्रतियाँ भी इसी स्थिति की हैं, यद्यपि वे इसकी तुलना में कदाचित् एक अविकृत कुल की हैं—जैसा तुलनात्मक पाठ-चक्र से ज्ञात होगा। दोनों समूहों के पाठ लेकर इस स्थिति का पाठ तैयार किया जा सकता है।

कोदवराम की स्थिति का पाठ-निर्माण—कोदवराम की मुद्रित प्रति का पाठ उस कुल की एक हस्तलिखित प्रति की तुलना में कितना भिन्न है यह ऊपर दिखाया जा चुका है। इसलिए आवश्यकता यह है कि उस कुल की समस्त प्राप्य हस्तलिखित प्रतियों का अध्ययन किया जावे, और उनके प्रतिलिपि-संबंध के आधार पर उनका पाठ-संबंध निर्धारित किया जावे। किन्तु इस सब प्रयास के अनंतर भी सम्भावन यही है कि कोदवराम कुल का पाठ एक प्रति का पाठ ठहरे।

१६९१/१७०४ की स्थिति का पाठ-निर्माण—ऊपर हम देख चुके हैं कि १६९१ तथा १७०४ में से कोई परस्पर किसी की प्रतिलिपि नहीं है, बल्कि दोनों किसी अन्य प्रति की प्रतिलिपियाँ हैं। ऐसी दशा में दोनों के पाठ लेकर उक्त आदर्श का पाठ निर्धारित किया जा सकता है। किन्तु इस संबंध में यह स्मरण रखना चाहिए कि १६९१ में पाठ-परिवर्तन बहुत हुआ है, और केवल उसके प्राथमिक पाठ पर ही निर्भर रहा जा सकता है। यह अवश्य है कि १६९१ का बालकांड मात्र है, शेष कांड नहीं

हैं। किन्तु इस स्थिति के पाठ की ऐसी अन्य प्रतियाँ भी प्राप्त हैं, जिनका १६९१/१७०४ से कोई प्रतिलिपि-संबंध नहीं है। उनकी सहायता से इस स्थिति का पाठ सरलता से पुनर्निर्मित हो सकता है। १७०४ तथा इसकी स्थिति की अन्य प्रतियों में एक दोष भी है, जिसकी ओर संकेत करना आवश्यक होगा—वह यह है कि इनमें कई स्थलों पर ऐसी पंक्तियाँ मिलती हैं जो निर्विवाद रूप से प्रक्षिप्त ज्ञात होती हैं।[१] कुशल इतनी ही है कि इस प्रकार की जो पंक्तियाँ १७०४ में मिलती हैं वे इन अन्यों में नहीं मिलतीं, और जो इन अन्यों में मिलती हैं वे १७०४ में नहीं मिलतीं, और प्रकार सरलता से इन पंक्तियों से बचा जा सकता है।

सिद्धांत और अपवाद

यह संपादन-कार्य तुलनात्मक पाठ-चक्र की सहायता से और सुगम तथा निरपवाद हो सकता है, यदि वह चक्र पाठ-संस्कार-क्रम के अनुसार निर्मित किया जावे। इस चक्र में सबसे अधिक आवश्यक दोनों छोरों का पाठ-निर्धारण है। एक बार यदि दोनों छोरों का पाठ निश्चित हो जाता है, तो बीच की स्थितियों के पाठ के लिए यही देखना रह जाता है कि वह किसी छोर के पाठ से मिलता है या नहीं। यदि मिलता है, तो इतना ही निश्चय करना रह जाता है कि उक्त पाठ अपनी वास्तविक स्थिति का है, या बीच की किसी अन्य स्थिति की प्रति के प्रभाव से आया हुआ है; और यदि नहीं मिलता, तो सामान्यतः उसे अस्वीकार करना पड़ेगा।

दोनों छोरों—अर्थात् १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४—का पाठ-निर्धारण करते हुए ही इसीलिये आगे संस्कार-क्रम से तुलनात्मक पाठ-चक्र तैयार किया गया है। १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४ की स्थितियों का पाठ-निर्धारण जिन सिद्धांतों के आधार पर किया गया है, वे नीचे दिए जा रहे हैं। इस संबंध में कदाचित् यह स्मरण कराने की आवश्यकता न होगी कि यद्यपि पाठ की दृष्टि से १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४ एक दूसरे से बहुत दूर पड़ते हैं, दोनों में प्रतिलिपि-संबंध भी है, जिसके कारण वे एक दूसरे के एक प्रकार से सन्निकट भी हैं।

---

[१] देखिए 'तुलसीदास', पृ० १४

(१) १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४ (और उक्त स्थिति की अन्य प्रतियाँ) जहाँ एक ही पाठ देती हैं वहाँ पर वह पाठ प्रामाणिक मान लिया गया है।

(२) १७२१/१७६२ तथा १६९१/१७०४ (और उक्त स्थिति की अन्य प्रतियाँ) जहाँ पर एक दूसरे से भिन्न पाठ देती हैं, वहाँ पर १७२१/१७६२ का पाठ एक छोर का और १६९१/१७०४ (और उक्त स्थिति की अन्य प्रतियों) का पाठ दूसरी छोर का मान लिया गया है।

(३) १७२१ तथा १७६२ जहाँ पर एक दूसरे से भिन्न पाठ देती हैं, वहाँ पर १७२१ का पाठ प्रामाणिक और १७६२ का अप्रामाणिक माना गया है।

(४) १६९१/१७०४ तथा उक्त स्थिति की अन्य प्रतियाँ जहाँ एक दूसरे से भिन्न पाठ देती हैं, और उनमें से एक १७२१/१७६२ का पाठ देती है, वहाँ पर १७२१/१७६२ वाला पाठ प्रामाणिक तथा दूसरा अप्रामाणिक माना गया है।

(५) १६९१ तथा १७०४ जहाँ एक दूसरे से भिन्न पाठ देती हैं, और उनमें से एक १७२१/१७६२ का पाठ देती है, वहाँ पर १७२१/१७६२ वाला पाठ प्रामाणिक और दूसरा अप्रामाणिक माना गया है।

(६) जहाँ पर १६९१ तथा १७०४ एक दूसरे से भिन्न पाठ देती हैं, और उनमें से कोई भी १७२१/१७६२ का पाठ नहीं देती, किन्तु साथ ही उनमें से एक उक्त स्थिति की अन्य प्रतियों का पाठ देती है, वहाँ पर यही पाठ प्रामाणिक और दूसरा अप्रामाणिक माना गया है।

(७) किष्किंधा कांड में १६९१/१७०४ स्थिति की कोई अन्य प्रति न होने के कारण किया यह गया है जहाँ पर १७०४ का पाठ १७२१/१७६२ से भिन्न है, और यह भिन्नता केवल पढ़ने या लिखने की किसी भूल के कारण संभव है, वहाँ पर संगत और शुद्ध पाठ ही प्रामाणिक माना गया है।

(८) किष्किंधा कांड में १७०४ में कुछ स्थलों पर ऐसी पंक्तियाँ भी आती हैं जो १७२१/१७६२ में नहीं मिलतीं। १७०४ के आरण्य कांड में भी इस प्रकार की पंक्तियाँ आई हैं, किंतु वे १७०४ की स्थिति की अन्य

प्रतियों तथा १७२१/१७६२ में न मिलने के कारण अप्रामाणिक ठहरतीं हैं। इसीलिये १७०४ के किष्किंधा कांड की भी यह अतिरिक्त पंक्तियाँ अप्रामाणिक मानी गई हैं।

(९) उत्तर कांड में १७०४ का उत्तरार्द्ध पूर्णरूप से बदला हुआ होने के कारण किया यह गया है कि जहाँ पर उसकी स्थिति की अन्य प्रति का पाठ १७२१/१७६२ से भिन्न है, और यह भिन्नता केवल पढ़ने या लिखने की किसी भूल के कारण संभव है, वहाँ पर संगत और शुद्ध पाठ ही प्रामाणिक माना गया है।

कहना न होगा कि ऊपर १७२१,१७६२,१६९१ तथा १७०४ के पाठों का जहाँ जहाँ उल्लेख हुआ है, वहाँ-वहाँ आशय उनके असंशोधित—अर्थात् प्राथमिक पाठ से है, संशोधित—अर्थात् परिवर्तित पाठ से नहीं।

इन सिद्धांतों में से अपवाद केवल सिद्धांत (१), (२) तथा (४) के सम्बन्ध में हैं, और (१) के सम्बन्ध में भी कुल दो ही हैं। स्थल-संकेत के साथ अपवाद वाले पाठ-भेद निम्नलिखित हैं।[१] इनके संबंध में विवेचन पाठ-विवेचन के अध्याय में मिलेगा।

उपर्युक्त सिद्धांत (१) के अपवाद :

(१) २-१२-५ बिबिध (२) २-१८०-१ पावन

उपर्युक्त सिद्धांत (२) के अन्तर्गत १६९१/१७०४ (तथा उसकी स्थिति की अन्य प्रतियों) के अस्वीकृत पाठ :

(१) १-४८ गुप्त (२) १-५१-६ मन
(३) १-८२-६ तेइ (४) १-२१३-२ बिधि जनु
(५) १-३१९-२ व्यवहारू, व्यवहारू (६) २-२८-३ मकु
(७) २-८९-८ पानी (८) २-९१-७ सोवत
*(९) २-९४-२ सुखदारा (१०) २ १००-१ जिइहहिं
(११) २-१०४-८ तब (१२) २-१३७-७ बिबिध
(१३) २-१८५ सहस *(१४) २-१८६-७ तोहि
(१५) २-१९१-४ धनही (१६) २-१९९-५ बिलीना

[१] इनके स्थान पर स्वीकृत पाठ पाठ-चक्रखंड में देखे जा सकते हैं।

(१७) २-२०६-४ मूरतिमंत (१८) २-२१०-६ जसु जगु
(१९) २-२११-५ मोहिं न (२०) २-२२९ अनुग
(२१) २-२३४-२ रामहि (२२) २-३३७-४ अबिचल
(२३) २-२५१ लौका (२४) २-२५२ सुचि
(२५) २-२७६ सोच (२६) २-२८९-६ सीय
(२७) ५-३-४ सो *(२८) ५-१२-११ जनि
(२९) ५-२७ ४ बिरुद *(३०) ५-३० दिवस निसि
(३१) ५-५४ बिकटास्य (३२) ६-९१ सब
(३३) ६-९-१० सीतहि *(३४) ६-३१ बिचारि
*(३५) ६-४७-५ कोपि (३६) ६-४९-२ मुख
(३७) ६-६१-११ मुख *(३८) ६-६२-८ सुनु
*(३९) ६-७०/२ करि चिकार अति घोरतर *(४०) ६-८५-८ मारेउ
*(४१) ६-८८ छं० सुरपुर पावहीं (४२) ६-९७-६ पथ
(४३) ६-९९ रावन कहुं *(४४) ६-१०७-४ तिन्ह
*(४५) ६-११७-३ जौ जैहौं बीते अवधि (४६) ६-१२१-७ जब
(४७) ७-२-६ पाव *(४८) ७-५ छं०/१ परमा
(४९) ७-१४-१८ मद (५०) ७-१६-१ मन माहीं
(५१) ७-२० सुख (५२) ७-२४-९ ब्रह्मादि
*(५३) ७-२८ चारु (५४) ७-३१-२ बहुतेन्ह
(५५) ७-४३-२ भय (५६) ७-५०-४ जेइ
(५७) ७-५१-८ बालिक (५८) ७-५९-८ जो देहिं
*(५९) ७-७० के नैन *(६०) ७-७१-४ काहि न
(६१) ७-७४/२ भजसि (६२) १-३६ बिचारि, चारि
(६३) १-७८-१ मूरतिमंत (६४) १-२५६-२ अस
(६५) १-१९५-२ सादर (६६) १-२६८-५-६ रिसि
(६७) १-२८४-३ जाना (६८) २-१४२ भए
(६९) २-२०३-८ गरहिं (७०) २-२४३-६ लुठत
(७१) २-२४३-७ बरिसहिं (७२) ५-५-७ दीख
(७३) ५-१३-८ फिर *(७४) ६-३-९ कपि

(७५) ६-६ सौंपहु *(७६) ६-३२-६ बहु कर
(७७) ६-४५ दलमलेउ (७८) ६-६९-२ करि
*(७९) ६-९३ सनमुख चली विभीषनहि (८०) ६-९७-६ नखन्ह
*(८१) ६-१२० बहुरि त्रिबेनी आइ प्रभु (८२) ७-६० मोहिं

[उपर्युक्त में किष्किंधा कांड के १७०४ के अस्वीकृत पाठ तथा उक्त पाठ की अन्य प्रति के उत्तर कांड उत्तरार्द्ध के अस्वीकृत पाठ इसलिये नहीं रक्खे गए हैं क्योंकि दोनों में उक्त स्थिति के पाठ की ये अकेली ही प्रतियाँ प्राप्त हैं। नीचे उनमें से केवल ऐसे अस्वीकृत पाठ दिए जा रहे हैं जो सामान्यत: पढ़ने या लिखने की भूल से संभव नहीं प्रतीत होते हैं।

*(८३) ४-१६-१० जसि *(८४) ४.२४ सर बिगसित तहं बहु
*(८५) ७-९५-१ सहित *(८६) ७-१००-३ निजकृत दोष
*(८७) ७-१०४-७ प्रभुप्रभाव *(८८) ७-११५/१ जो बिपय बस
*(८९) ७-१२१-१२ गहि सो नर *(९०) ७-१२१-१३ कछु
*(९१) ७-१२३/२ रघुनाथ कर *(९२) ७-१२४-१ कर
*(९३) ७-१२४/१ मम तुम पर सदा रहहु *(९४) ७-१२५-३ भएऊ, दएऊ
*(९५) ७-१२९-५ पावै, गावै

उपर्युक्त सिद्धांत (२) के अन्तर्गत १७२१/१७६२ के अस्वीकृत पाठ :

(१) १-१३-१० सुलभ (२) १-१५-७ करहिं
(३) १-१२४-१ दीन्ह (४) १-१४३.८ संत
(५) १-१८८-५ रुचि *(६) १-१९६-५ सकल रस
(७) १-३१५-७ बर जोरी (८) १-३४२-८ बहु
(९) २-२७-६ मति *(१०) २-५०-१ कोपि
(११) २-१३९-६ सुखमा (१२) २-२५३-६ हइ
(१३) ३-५-१९ जन्मि (१४) ३-१०-१ अगस्त्य
(१५) ३-१८-२ बिलषाता (१६) ४-७-१२ दृढ़ाए
(१७) ४-२३-७ गुनग्यान *(१८) ५-२७-६ आवैं, पावैं,
(१९) ५-५८-४ बोए (२०) ६-२२-८ हमहुं

(२१) ३-२८-२ सब
(२२) ६-४२-७ सुना मैं काना
(२३) ७-२२-५ बरद सुसीला
(२४) ७-४८-६ उपरोहित
(२५) ७-७९/२ लागि
(२६) ७-८६-७ भगति
(२७) ७-९८-७ ज्ञान बैरागी
(२८) ७-९९-६ क
(२९) ७-१०१.१ न रहीं
(३०) ७-१११-१५ कीए, हीए
(३१) ७-१२१-१२ बदले जे
(३२) १-४-७ गलहीं
*(३३) १-१०-छं० रघुबीर
*(३४) १-२९-३ श्रुति
(३५) १-३६-८ सकल
*(३६) १-३६ रुचि
(३७) १-४३-६ मिटिहि
*(३८) १-४८ अब
(३९) १-५२-७ कै
(४०) १-६५-२ सुरन्हि
*(४१) १-६९-४ समान
(४२) १-७५-४ जानिहु
(४३) १-७९-१ दक्षसुतन्हि
(४४) १-९४ सुर
(४५) १-९५ छं० लरिकन्हि
(४६) १-९७-८ जिनि
(४७) १-९८-३ संग
(४८) १-१००-८ कोटिबहु
(४९) १-१०० कोटिबहु
(५०) १-१०८ भ्रमत
(५१) १-१२३-३ महा
(५२) १-१३८ अंतर्ध्यान
*(५३) १४३-१ तब
*(५४) १-१४६ नीरनिधि
(५५) १-१५१ बिलास
*(५६) १-१६२-१ बन
(५७) १-१६७-८ जल
(५८) १-२४५ के
*(५९) १-२९८-८ बहु
(६०) ३-३१ करहु
(६१) ५-३८ भज भजहीं जेहि संत
(६२) ५-५६ सरासन
(६३) ६-१६-४ बिलास
(६४) ६-३४-२ तिष्ठति
(६५) ६-४१ छं० मंदिरन्ह
(६६) ६-७३-१२ एक
(६७) ६-९७-१५ कबि
(६८) ७-५/२ आरति
(६९) ७-३२-८ जोति
*(७०) ७-३५-१ की

उपर्युक्त सिद्धांत (४) के अपवाद :

(१) १-२९-८ रामसभा
(२) १-७४-६ बेलवाति
*(३) १-७५ मान
(४) १-१२१-६ अधरम
(५) १-१२७-८ सुनावहु
(६) १-१३१-८ है

(७) १-१५०-५ भगति (८) १-१८४-३ सब
(९) १-१८४ ह्रस्वतुकांत (१०) १-१९६ ह्रस्वतुकांत
(११) १-२३४-५ भए (१२) १-२९२-७ सुरासुर
(१३) १-३४६-६ सकुच *(१४) १-३५३-४ चीर
(१५) २-२२५-२ अर्द्धाली नहीं है (१६) २-२२६ छं० काह सचकित
(१७) २-२६२-८ तापस *(१८) २-२८४ भूप
(१९) २-२९६-२ अर्द्धाली नहीं है (२०) २-३२५-७ अर्द्धाली नहीं है
(२१) ३-१०-१७ जान न (२२) ३-१६ निष्काम
*(२३) ३-२०-६ अपार (२४) ६-२५ जान
(२५) १-२४०-६ जठर (२६) २-१८०-२ बिसाद
(२७) २-२३५- भारी (२८) ३-३४-२ के बाद एक अर्द्धाली अधिक है
(२९) ५-२४-१ गाढ़ी, बाढ़ी (३०) ६-३२-१ कीन्ह

यह ध्यान देने योग्य है कि उपर्युक्त कुल अपवाद ग्रंथ के समस्त पाठ-भेदों के, जो १७२१/१७६२ से लेकर १६९२/१७०४ (और उस स्थिति की अन्य प्रतियों) तक में पाए जाते हैं, केवल १०% के लगभग हैं, और इनमें से भी जिनके सामने तारक-चिन्ह बना हुआ है उनको छोड़कर प्राय: सभी ऐसे हैं जो प्रतिलिपि की भूलों के कारण संभव हैं। तारक-चिन्हवाले पाठ-भेद ही ऐसे हैं जो निरी प्रतिलिपि की भूल से संभव नहीं हैं, किन्तु इनकी संख्या कुल पाठ-भेदों का केवल २½% है। अपवादों की इतनी कम संख्या, और उनमें भी महत्त्वपूर्ण अपवादों के ऐसे नगण्य प्रतिशत से इस बात का भली भाँति अनुमान किया जा सकता है कि दोनों छोरों के पाठ-निर्धारण के उपर्युक्त सिद्धांतों का पालन किस हद तक किया गया है। छोरों के पाठ-निर्धारण के अनंतर बीच की स्थितियों का पाठ-निर्धारण कितना सुगम हो जाता है, यह तुलनात्मक पाठ-चक्र पर दृष्टि डालने पर स्वत: प्रकट होगा।

——

परिशिष्ट

प्रतिलिपि-तिथियों की गणना

संवत् १६६१, वैशाख शु० ६, बुधवार :

		सप्ताह-दिवस	मास	मास-दिवस	अंश
विगत सं० १६६१ = १६०४ ई०	वैशाख अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(४)	अप्रैल	१८	·८५
	६ तिथियों का व्याप्तिकाल	५ + १		५	·६१
		१०		२४	·७६

= मङ्गलवार, अप्रैल २५, १६०४ ई०

वर्त्तमान सं० १६६१ = १६०३ ई०	वैशाख अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(५)	मार्च	३१	·६५
	६ तिथियों का व्याप्तिकाल	५ + १		५	·६१
		११		३७	·८६

= बुधवार, अप्रैल ७, १६०३ ई०

सं० १६९१, वैशाख शु० ६, बुधवार :

विगत सं० १६९१ = १६३४ ई०	वैशाख अमाचन्द्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(५)	अप्रैल	१७	·६९
	६ तिथियों का व्याप्तिकाल	५ + १		५	·६१
		११		२३	·६०

= बुधवार, ३ अप्रैल २३

		सप्ताह-दिवस	मास	मास-दिवस	अंश
वर्त्तमान सं० १६९१ = १६३३ ई०	वैशाख अमाचन्द्र का मध्यन्य समातिकाल	(६)	मार्च	२९	·८०
	६ तिथियों का व्यातिकाल	५ + १		५	·९१
		१२		३५	·७१
	= बृहस्पतिवार, अप्रैल ४				
	अधिक वैशाख अमाचन्द्र का मध्यन्य समातिकाल	(१)	अप्रैल	२८	·३३
	६ तिथियों का व्यातिकाल	५ + १		५	·९१
		७		३४	·२४
	= शनिवार, मई ४				

सं० १६४३, आषाढ़ शुद्ध ४, शुक्रवार :

विगत सं० १६४३ = १५८६ ई०	आषाढ़ अमाचन्द्र का मध्यन्य समातिकाल	(२)	जून	६	·५९
	४ तिथियों का व्यातिकाल	३ + १		३	·९४
		६		१०	·५३
	= शुक्रवार, जून १०				
वर्त्तमान सं० १६४३ = १५८५ ई०	आषाढ़ अमाचन्द्र का मध्यन्य समातिकाल	(५)	जून	१७	·२२
	४ तिथियों का व्यातिकाल	३ + १		३	·९४
		९		२१	·१६
	= सोमवार, जून २१				

सं० १८४३, आषाढ़ शुद्ध ४, शुक्रवार :

		सप्ताह-दिवस	मास	मास-दिवस	अंश
विगत सं० १८४३ = १७८६ ई०	आषाढ़ अमाचन्द्र का मध्यन्य समातिकाल	(२)	जून	२६	·२६
	४ तिथियों का व्यातिकाल	३ + १		३	·९४
		६		३०	·२०
	= शुक्रवार, जून ३०				
वर्त्तमान सं० १८४३ = १७८५ ई०	आषाढ़ अमाचन्द्र का मध्यन्य समातिकाल	(४)	जुलाई	६	·८९
	४ तिथियों का व्यप्तिकाल	३ + १		३	·९४
		८		१०	·८३
	= रविवार, जुलाई १०				

सं० १६६४, कार्तिक शु० १४, शनिवार :

विगत सं० १६६४ = १६०७ ई०	कार्त्तिक अमाचन्द्र का मध्यन्य समातिकाल	(७)	अक्तूबर	१०	·६६
	१४ तिथियों का व्यातिकाल	१३ + १		१३	·७८
		२१		२४	·४४
	= शनिवार, अक्तूबर २४				
वर्त्तमान सं० १६६४ = १६०६ ई०	कार्त्तिक अमाचन्द्र का मध्यन्य समाप्ति काल	(३)	अक्तूबर	२१	९२.
	१४ तिथियों का व्याप्तिकाल	१३ + १		१३	·७८
		१७		३५	·०७
	= मङ्गलवार, नवंबर ४				

सं० १८६४, कार्त्तिक शु० १४, शनिवार :

		सप्ताह-दिवस	मास	मास-दिवस	अंश
विगत सं० १८६४ = १८०७ ई०	कार्त्तिक अमाचन्द्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(७)	अक्तूबर	३१	·३४
	१४ तिथियों का व्याप्तिकाल	१३ + १		१३	·७८
		२१		४५	·१२
	= शनिवार, नवंबर १४				
वर्त्तमान सं० १८६४ = १८०६ ई०	कर्त्तिक अमाचन्द्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(२)	नवंबर	१०	·९७
	१४ तिथियों का व्याप्तिकाल	१३ + १		१३	·७८
		१६		२४	·७५
	= सोमवार नवंबर २४				

सं० १६७९, माघ कृ० ८, रविवार :

विगत सं० १६९७ = १६४० ई०	माघ अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(५)	दिसंबर	३	·२०
	२३ तिथियों का व्याप्तिकाल	२२		२२	·६४
		२७		२५	·८४
	= शुक्रवार, दिसंबर २५				
वर्त्तमान सं० १६९७ = १६३९ ई०	माघ अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(७)	दिसंबर	१४	·८३
	२३ तिथियों का व्याप्तिकाल	२२ + १		२२	·६४
		३०		३७	·४७
	= सोमवार, जनवरी ६				

सं० १८९७, माघ कृ० ८, रविवार :

		सप्ताह-दिवस	मास	मास-दिवस	अंश
विगत सं० १८९७ = १८४०ई०	माघ अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(४)	दिसंबर	२३	·८८
	२३ तिथियों का व्याप्तिकाल	२२+१		२२	·६४
		२७		४६	·५२

= शुक्रवार, जनवरी १५

वर्त्तमान सं० १८९७ = १८४०ई०	माघ अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(७)	जनवरी	४	·५१
	२३ तिथियों का व्याप्तिकाल	२२+१		२२	·६४
		३०		२७	·१५

= सोमवार, जनवरी २७

सं० १७०२, ज्येष्ठ शु० ५, शुक्रवार :

विगत सं० १७०२ = १६४५ ई०	ज्येष्ठ अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(५)	मई	१५	·३८
	५ तिथियों का व्याप्तिकाल	४+१		४	·९२
		१०		२०	·३०

= मंगलवार, मई २०

वर्त्तमान सं० १७०२ = १६४४ई०	ज्येष्ठ अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(१)	मई	१६	·०२
	५ तिथियों का व्याप्तिकाल	४		४	·९२
		५		२०	·९४

= गुरुवार, मई ३०

सं० १८०२, ज्येष्ठ शु० ५, शुक्रवार :

विगत सं० १८०२ = १७४५ ई०

ज्येष्ठ अमाचंद्र का मध्यन्य समाप्तिकाल	(१)	मई	१६	·७२
५ तिथियों का व्याप्तिकाल	४ + १		४	·६२
	६		२४	·६४

= शुक्रवार, मई २४

२

पाठ-चक्र

आवश्यक सूचनाएँ

१—प्रस्तुत पाठ-चक्र उन समस्त स्थलों के पाठ-भेद लेकर निर्मित किए गए हैं जिनका समावेश पं० शंभुनारायण चौबे के 'मानस पाठ-भेद' शीर्षक उक्त लेख में हुआ है। केवल उन स्थलों को छोड़ दिया गया है जो लिपि या अक्षर-विन्यास के भेद से भिन्न और अन्यथा अभिन्न हैं; अथवा, जहाँ पर मूल प्रति में पाठ-भेद नहीं है, और चौबे जी ने भूल से, कदाचित् उक्त प्रति की किसी प्रतिलिपि के आधार पर, पाठ-भेद दे दिया है।

२—१६९१/१७०४ की स्थिति की अन्य प्रतियों से भी उन्हीं स्थलों के पाठ-भेद दिए गए हैं जिनका समावेश उपर्युक्त प्रकार से हो सका है। राजापुर की अयोध्या कांड की प्रति १६९१/१७०४ की स्थिति की है—जैसा इन चक्रों को देखने पर ज्ञात होगा—इसलिए अतिरिक्त स्थलों पर के उसके भी पाठ-भेदों का समावेश नहीं किया गया है।[१]

३—कुछ प्रतियों में, जैसा ऊपर हम देख चुके हैं, पाठ-परिवर्तन हुआ है। इन चक्रों में उनके परिवर्तित पाठ मूल में देते हुए पूर्ववर्ती पाठ—जहाँ पर वे किसी भी प्रकार से पढ़े जा सके हैं—पादटिप्पणी में दिए गए हैं। परिवर्तित पाठों में से कुछ तो आदर्श के अनुसार हो सकते हैं, और कुछ अन्यथा। आदर्श के अनुसार होने की आंशिक संभावना के कारण उनको मूल में रक्खा गया है। चौबे जी ने अपने उपर्युक्त लेख में प्रायः परिवर्तित पाठ ही दिए हैं, किन्तु कहीं-कहीं पर पूर्ववर्ती पाठ दे दिये हैं, और फिर भी यह नहीं संकेत किया है कि कौन से पाठ पूर्ववर्ती और कौन से परवर्ती हैं। यही कारण है कि चौबे जी के उक्त लेख के आधार पर प्रतियों का प्रतिलिपि-संबंध नहीं स्थापित किया जा सकता है। इन पाठ-चक्रों में प्रतियों के पाठ-परिवर्तन को पूर्ण रूप से ध्यान में रक्खा गया

[१] कहने की आवश्यकता नहीं कि इन अतिरिक्त पाठ-भेदों की अप्रामाणिकता स्वतः प्रमाणित है।

है, और जहाँ तक हो सका है पूर्ववर्ती और परवर्ती पाठों का स्पष्टीकरण कर दिया गया है।

४—यह पाठ-चक्र पाठ-संस्कार-क्रम के अनुसार निर्मित किए गए हैं। क्रम—जैसा हम ऊपर भी देख चुके हैं—इस प्रकार है : १७२१/१७६२→ छक्कनलाल समूह/मिर्ज़ापुर समूह→कोदवराम→१६९१/१७०४ (तथा उक्त स्थिति की अन्य प्रतियाँ)। प्रत्येक समूह में प्रतियाँ अपने लिपि-काल या प्रकाशन-काल के अनुसार क्रम से रक्खी गई हैं; केवल १७६२ की प्रति के विषय में अपवाद किया गया है। १७६२ की प्रति १७२१ की प्रतिलिपि है, इसलिए उसे १७२१ के बाद आना चाहिए था। किन्तु १७२१ का पाठ, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, अब १७६२ की अपेक्षा बहुत परिवर्तित है, और यह परिवर्तन संभवतः छक्कनलाल समूह के प्रभाव में किया गया है, जैसा इन चक्रों से विदित होगा, और मूल में परिवर्तित पाठ ही दिया गया है, इस कारण १७२१ को १७६२ तथा छक्कनलाल समूह के बीच में रख दिया गया है।

५—प्रत्येक समूह में आनेवाली प्रत्येक प्रति के लिए एक स्वतंत्र स्तंभ रक्खा गया है, किन्तु मिर्ज़ापुर समूह के लिए, या उसकी प्रतियों के लिए, कोई स्वतन्त्र स्तंभ नहीं रक्खा गया है; उसके पाठ का निर्देश, जहाँ पर वह छक्कनलाल समूह की अंतिम प्रति (५) के पाठ से भिन्न है, तिरछी रेखा देकर (५) के स्तंभ में कर दिया गया है। यह इसलिए किया गया है कि मूलतः छक्कनलाल समूह भी उसी स्थिति का पाठ देता है जिस स्थिति का पाठ मिर्ज़ापुर समूह देता है। दोनों समूहों के पाठों का सविस्तर समावेश इस स्थिति के पाठ को देखने में अनावश्यक प्रमुखता प्रदान कर देता।

६—इन चक्रों में विभिन्न प्रतियों के निर्देश के लिए उन्हीं संकेत-संख्याओं का उपयोग किया गया है जो भूमिका भाग में प्रतियों का परिचय देते हुए दी गई हैं।

कहीं-कहीं पर कुछ संक्षेपों का भी उपयोग किया गया है, किन्तु वे सामान्यतः स्वतः स्पष्ट हैं।

७—इन चक्रों में अस्वीकृत पाठ-भेद पतले टाइप द्वारा अलग किए गए हैं—स्वीकृत प्राथमिक तथा संशोधित पाठ-भेद दोनों सामान्य टाइप में ही दिए गए हैं।

८—जहाँ पर पाठ-भेद शब्दशः नहीं दिए गए हैं, और कुछ अन्य शब्दों द्वारा उनका निर्देश किया गया है, वहाँ इन शब्दों को इटालिक टाइप में दिया गया है।

९—इन चक्रों के साथ आगे आए हुए पाठ-विवेचन वाले अध्ययन का भी पूर्ण रूप से उपयोग किया जा सके, इस बात का पूरा ध्यान रक्खा गया है। फलतः यदि किसी स्थल के स्वीकृत पाठ और अस्वीकृत पाठ के विषय में प्रसंग और प्रयोग की दृष्टि से जानना हो, तो उनका पाठ-विवेचन उस कांड के अस्वीकृत पाठ-विवेचन के अंशों में उस प्रति के अन्तर्गत यथास्थान देखना होगा जो पाठ-संस्कार-क्रम में उस अस्वीकृत पाठ वाली अन्य प्रतियों के पहले आती है। और यदि किसी स्वीकृत पाठ और उसके पाठ-सुधार वाले पाठ-भेद के विषय में इसी प्रकार जानना हो तो पाठ-विवेचन उस कांड के पाठ-सुधार वाले अंश में यथास्थल उस प्रति के अन्तर्गत देखना होगा जो पाठ-संस्कार-क्रम में उस पाठ-सुधार वाली अन्य प्रतियों के पहले आती है। इसी प्रकार, पाठ-विवेचन वाले खंड का अध्ययन करते हुए, वाह्य संभावनाओं (Extrinsic probabilities) के ध्यान से यदि कहीं विचार करना हो, तो इन चक्रों का उपयोग किया जा सकता है। उस दशा में स्थल-संकेतों की सहायता मात्र यथेष्ट होगी।

१०—स्वतंत्र पाठ-विवेचन उन्हीं पाठ-भेदों का नहीं किया गया है जिनके आगे कोष्टकों में किसी प्रति की संकेत-संख्याए दी हैं। यह इसलिए किया गया है कि वे कोई स्वतंत्र पाठ नहीं प्रस्तुत करते, बल्कि केवल लिपिभ्रम या इसी प्रकार के किसी अन्य कारण से उनका पाठ कुछ भिन्न लगता है।

बाल कांड

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८, बा०)
१-२-१	मृदुमंजुलरज	२	रज मृदु मंजुल	३	३	३	×	३	३
१-२-५	साधु चरित सुभ चरित[१]	२	२	२	२	साधु चरित सुभ सरिस	×	साधु सरिस सुभ चरित (७)	६
१-२-११	साज	२	२[२]	राजै	४/२	४	×	२	४
१-३-९	परस	२	परसि	२	२	३	×	२	३
१-४-१	दाहिनेहु	२	२	२	२	२	×	दाहिनहु	दाहिने(२)
१-५-२	कबहिं	२	२[३]	कबहुं	४	४	४	४	४
१-५-३	असज्जन	२	२	२	सं	तन	२	२	७
१-६-८	कर्मनासा	कबिनासा[४]	१	१	१/२	क्रमनास (२)	७[५]	१	७
१-६-८	मालव	२	२	२	२	२	मारवं	६अ	२
१-६	ग्रहहिं	२	२	गहहिं	४	४	४	४	४
१-७	पोषक सोषक	२	२[६]	सोषक पोषक	२	२	४	४	२

१—(१) में पूर्व का पाठ दूसरे 'चरित' के स्थान पर 'सरिस' था, उस पर हरताल लगाकर 'चरित' बनाया गया है, और (२) में संशोधित पाठ प्रतिलिपि हुआ है।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'राज' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'कबहुं' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

५—(६अ) में पूर्व पाठ 'कबिनासा' था।

६—(३) पूर्व का पाठ में 'सोषक पोषक' था।

(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८, बा०)
१-८-१४ सकृति	सकृत[१]	१	१	१	सुकृत	१	१	७
१-८ जन	२	२	२	२	सब	७	७	२
१-९-२ गादुर[२]	२	२	२	दादुर/२	५	५[३]	२	५
१-९-८ चतुर	२	२	२	२	२	बचन	६अ	६अ
१-९-११ कागर	कागद[४]	१[५]	१	१	१	१[६]	२	१
१-१०/२ ग्राम्य	२	२[७]	ग्राम	४	२	२	२	ज्ञान
१-११-७ लगति	२	२	२	२	२	लगत	६अ	लागि
१-१२-४ धंधक	२	२	२	२	२	२	ध्रधंक	२
१-१२-६ थोरेहि	२	२[८]	थोरे	४	४	४	४	२
१-१२-७ बिनती अब	२	२[९]	२	२	२/बिधि बिनती	बिधि बिनती	७	७

१—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था, उसको हरताल लगाकर 'सकृत' बनाया गया। (२) में पूर्व का पाठ अब भी है।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'दादुर' था, उसको हरताल लगाकर 'गादुर' बनाया गया है, और (२) में यही संशोधित पाठ उतरा।

३—(६अ) में पूर्व का पाठ 'गादुर' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था, उसको हरताल लगाकर 'कागद' बनाया गया है, (२) में पूर्व का पाठ अब भी है।

५—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का ही था।

६—(६अ) में भी पूर्व का पाठ 'कागर' ही था।

७—(३) में पूर्व पाठ 'ग्राम' था।

८—(३) में पूर्व का पाठ 'थोरे' मात्र था।

९—(२) में पूर्व का पाठ 'बिधि बिनती' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८, बा०)
१-१२-८	जे असंका	२	२	जे संका	४/२	४	ते असंका	६अ	६अ
१-१२-८	ते[1]	२	२	२	२	२	जे	६अ	२
१-१३-६	जेहिं करुना	२	२	२	२	तेहि करुना	२	२	२
१-१३-१०	सुलभ	२	सुगम	३	३	३	३	३	३
१-१४-६	छल	२	२	२	२	सब	७	७	२
१-१४	कहौं निहोरि	२	२	कहहुं निहोर	४/२	करउं निहोर	७	७	७
१-१५-७	होउ[2]	२	सो	सोउ (३)	४	३	३	३	३
१-१५-७	महेस	२	२	२	२	उमेस	७	७	२
१-१५-७	करहु[3]	२	करउ (२)	३	३	३	करिहिं	६अ	करहि (६अ)
१-१७	ज्ञानघर	२	२[4]	ज्ञानघन	४	४	४	४	४
१-१८	देखिअत	२	२	२	२	२	कहिअत	६अ	६अ
१-१९-५	प्रभाऊ	२	प्रतापू	२	३	३	३	३	३
१-१९-५	कहि उलटा नाऊ	२	करि उलटा जापू	३	३	३	३	३	३

१—(१) में पूर्व का पाठ 'जे' था, उस को हरताल लगाकर 'ते' बनाया गया, और (२) में वही संशोधित पाठ उतरा।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'सोउ' था, उसको हरताल लगाकर 'होउ' बना दिया गया और (२) में संशोधित पाठ उतरा।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'करहिं' था, उसको हरताल लगाकर 'करहु' बनाया गया, और (२) में वही संशोधित पाठ उतरा।

४—(३) में पूर्व का पाठ 'ज्ञान घन' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२०-३	समुझत	२	२	२	२	२	सुमिरत	६अ	६अ
१-२०-४	इव	२	२	२	२	सम	७	७	७
१-२०-८	कंज मंजु	२	२[१]	मंजु कंज	२/४	४	४	४	४
१-२०	बिराजित	२	२[२]	बिराजत	४	४	४	४	४
१-२१	बाहरौ	२	२	२	बाहेरौ/२	बाहिरउ	बाहेरहुं (२)	बाहरहुं (२)	२
१-२२-३	जानी	२	२	२	जाना/२	५	५[३]	२	२
१-२२-३	जानहिं	२	२	२	२	२	जानहु	६अ	जानत
१-२२-४	लौ	२	२[४]	लय	४	४	४	४	४
१-२२	पेम	२	२[५]	प्रेम	४	४	सुप्रेम	२	प्रभाव
१-२३-२	हमरें	२	२[६]	मोरें	४/२	४	४	४	४
१-२३-३	प्रौढ़ि	२	प्रौढ़[७]	३	३	२	३[८]	२	३
१-२५-५	सकल कुल	२	२[९]	सकुल रन	४	४	४	४	२
१-२६-२	साधु	२	२	२	२	२	सिद्ध	६अ	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'मंजु कंज' था।
२—(३) में पूर्व का पाठ 'बिराजत' था।
३—(६अ) में पूर्व का पाठ 'जानी' था।
४—(३) में पूर्व का पाठ 'लय' था।
५—(३) में पूर्व का पाठ 'प्रेम' था।
६—(३) में पूर्व का पाठ 'मोरें' था।
७—(३) में पूर्व का पाठ 'प्रौढ़ि' था।
८—(६अ) में भी पूर्व का पाठ 'प्रौढ़ि' था।
९—(३) में पूर्व का पाठ 'सकुल रन' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२६-५	थापेउ	२	पाएउ	३	३	३	३	३	३
१-२६-७	अपतु	२	२	२	२	२	२	अपरु	६
१-२६	भयो	२	२	२	२	भय	२	२	७
१-२७-३	परितोषन	२	२	२	२	परितोषत	७	७	परितोषक
१-२७-५	सकल समन जंजाला	२	२[1]	समन सकल जगजाला	४	सुखद सुलभ सब काला	४	४	४
१-२८-११	मन	२	२	२	२	२	मति	६अ	६अ
१-२९-३	भोरि	२	२[2]	मोरि	२	४	४	२	४
१-२९-८	रामसभां	राजसभां[3]	१	१	१	१	१	२[4]	१
१-२९/१	कहीं न	२	२	२	२/कहूं न (२)	कहूं न (२)	७	७	कहां
१-३०-६	सबदरसी	२	२[5]	समदरसी	२	४	२	२	२
१-३२-१२	धन	२	२	२	२	२	२	धर	२
१-३४-२	प्रनवों	२	२	२	२	बिनवौं	७	७	७
१-३७-३	बिमल	२	बीचि	३	३	३	३	बीच	३
१-३७-१३	दम	२	२	२	२	द्रुम	७[6]	२	७

१—(२) में पूर्व का पाठ 'जगजाला' था।
२—(३) पूर्व का पाठ 'मोरि' था।
३—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।
४—(६अ) में पूर्व का पाठ 'रामसभां' था।
५—(३) में पूर्व का पाठ 'समदरसी' था।
६—(६अ) में पूर्व का पाठ 'दम' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८, बा०)
१-३७-१४	समजम	२	२	२	२	संजम	२	२	समदम(२)
१-३७-१४	नियम	२	२[१]	मने	४	२	२	२	४
१-३७-१४	रतिरस	२	२	२	२	२	रसबर	६अ	२
१-३९-६	मज्जन सर	२	२	२	२	सर मज्जनु	७	७	सरि मज्जन (७)
१-३९-७	चाऊ	२	२[२]	२	भाऊ/२	५	५	५	५
१-३९-११	सो, सो	२	२	२	२	सी, सी	२	२	७
१-४१-४	सुबंध (सुबद्ध)	२	२[३]	सुबंध	४/२	२	सुबद्ध(२)	६अ	२
१-४१-७	जुरेउ	२	२	२	२	२	जुरे	६अ	६अ
१-४१	खल अघ	२	२	२	२/अघ खल	२	अघ खल	६अ	६अ
१-४३-१	न खोरी	२	२	२	२	न थोरी	२	×	बहोरी
१-४६-८	भएं	२	भएउ	३	३	३	३	३	३
१-४७-१	मोह	२	२	२	२	२	मोर	६अ	६अ
१-४८/१	गुपुत	२	२[४]	गुप्त	४	२	४	४	४
१-४९-६	प्रभु	२	२	२	२	२	हरि	६अ	२
१-४९-७	इव नर	२	नर इव[५]	३	३	३	३	३	३
१-४९-८	दुसह	२	२	२	२	२	बिरह	६अ	६अ

१—(३) में पूर्व का पाठ 'नेम' था।
२—(३) में पूर्व का पाठ 'भाऊ' था।
३—(३) में पूर्व का पाठ 'सुबंधु' था।
४—(३) में पूर्व का पाठ 'गुप्त' था।
५—(३) में पूर्व का पाठ 'इव नर' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-५०-१	तेहि हरषु	२	अति हरषु	३	३	३	३	३	३
१-५०-६	नावहिं	२	२	२	२	२	नावत	६अ	२
१-५१-६	तन	२	२	उर	२	मन	४	४	४
१-५२-४	करइ	२	२	२	२	२	करहि	६अ	२
१-५२-५	इहां	२	२	२	२	उहां	२	२	२
१-५२-८	जपन लगे	२	२	२	२	२	लगे जपन	६अ	६अ
१-५३-७	हरि	२	२	निज	२/४	४	४	४	४
१-५६-१	प्रभु	२	२	२	२	सिव	७	७	७
१-५६	प्रेम तजि जाइ नहिं	२	२	२	२	प्रेम नहिं जाइ तजि(२)	पुनीतन जाइ तजि	६अ	७
१-५७	होत...ही	२	२[1]	होइ...ही (२)	४/२	४	होइ....पुनि	६अ	४
१-६१	कृपा अयन	२	२[2]	कृपायतन	४	४	४	४	४
१-६२-८	हमारोह	२	२	२	२/हमारें	२	हमारें	६अ	६अ
१-६३-६	अस हृदय न	२	२	२	२	२	न हृदय अस	हृदय न अस	६अ
१-६४-४	काटिअ	काढ़िअ[3]	१	१	१	२	२	२	२
१-६६-२	जीवन्ह	२	जीवन (२)	३	३	२	२	जीवइ	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'होत ही' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'कृपायतन' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'काटिअ' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-६६-६	तब	२	२[1]	बर	४/२	४	४	४	४
१-६६-७	सबु	तब[2]	२	२	२	२	२	२	२
१-६६-८	विधि	२	२	२	२	२	गिरि	६अ	२
१-६७-६	त्रिय	२	२[3]	तिय	४/२	४	२	२	४
१-६८ ५	भा मन	२	२	२	२/मन भा	मन भा	७	७	२
१-६९-५	कर	२	कहुं	३	३/२	३	२	२	२
१-६९-८	को	२	२	२	२/कहं	कहं	कहुं (७)	६अ	६अ
१-६९	ऐसहिं इसिखा करहिं नर	२	अम हिसिखा करहिं नर जड़	३	३	३	३	३	३
१-७०	अब कल्यान सब	२	२	२	२	एहि कल्यान अब	७	७	७
१-७१-२	बूझे	२	२[4]	समुझे	४	समुझउं	४	४	४
१-७१	अब	२	२[5]	सब	४/२	४	४	४	४
१-७१	पारबती	२	२[6]	पारबतिहि	४/२	२	४	४	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'बर' था।

२—(१) में शब्द छूटा हुआ था, बाद में हाशिए में कुछ बनाया गया, किंतु इस समय उस पर हरताल लगा है।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'तिय' था।

४—(२) में पूर्व का पाठ 'समुझे' था।

५—(३) में पूर्व का पाठ 'सब' था।

६—(३) में पूर्व का पाठ 'पारबतिहि' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८, बा०)
१-७२-४	सब	२	२[१]	तुम्ह	४/२	४	४	४	४
१-७३-८	भएउ	२	भए	३	३/२	३	३	३	३
१-७४-६	बेलपाति[२]	२	२	२	२/बेलपात	बेलपात (२)	बेलवाती	६अ	२
१-७५-४	मिलहिं जबहिं अब	२	२	मिलहिं तुम्हहिं जब	४/२	४	४	४	४
१-७५	मान	काम[३]	१	१	१	१	२	२	१
१-७७-३	प्रभु गुर	२	२[४]	गुर प्रभु	४/२	४	४	४	२
१-७७	जाइ	२	२[५]	प्रेरि	४/२	४	४	४	४
१-७७	पठएहु	२	२[६]	पठवहु	४/२	४	४	४	२
१-७८-३	सब	२	२[७]	किन	४/२	२	×	×	तुम्ह
१-७८-४	[अर्द्धाली है]	२	२	२	२	२	२[८]	२[८]	२
१-७८-७	सत्य हम	२	२	२	२	सत्त सोइ	सत्य सोइ (७)	६अ	७
१-७८-८	सिवहि सदा	२	२[९]	सदासिवहि	४/२	२	४	४	४
१-८०-४	बचन कहबिहसि	२	२	२	२	बिहसि कह बचन	७	७	७

१—(३) में पूर्व का पाठ 'तुम्ह' था।
२—(१) तथा (२) दोनों में पूर्व का पाठ 'बेलवाति' था।
३—(१) में पूर्व का पाठ 'मान' था।
४—(३) में पूर्व का पाठ 'गुर प्रभु' था।
५—(३) में पूर्व का पाठ 'प्रेरि' था।
६—(३) में पूर्व का पाठ 'पठवहु' था।
७—(३) में पूर्व का पाठ 'किन' था।
८—पूर्व के पाठ में पूरी अर्द्धाली तथा आगे-पीछे के दो-दो शब्द दोनों में छूटे हुए थे; बाद में वे बनाये गये था।
९—(३) में पूर्व का पाठ 'सदासिवहिं' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८, बा०)
१-८१-२	सैं	२	२	२	२	हित	७	७	७
१-८१-५	रगरि	२	२	२	२	२	२	रगर	६
१-८२-६	तेहिं	२	२	२	२	ते	तेइ	×	६अ
१-८२-८	पहिं	२	२	२	२	सन	७	×	७
१-८३-८	अस	२	२	२	२	२	अति	×	२
१-८४-२	जे	२	२	२	२	जो	७	×	७
१-८४-३	लेत	२	२	२	२	सहित	७	×	७
१-८६-६	जाति	सखा[1]	१	१	१	२	राजि	×	राज (६अ)
१-९१-६	तिन्ह दीन्ही	२	२	२	२/तिन्ह दीन्हि सो	तिन्ह दीन्हि सो	७	×	दीन्हे सो
१-९१-७	अस	बिधि[2]	१	१	१	अज	७	×	२
१-९१-७	मुनि सब	२	२	२	२	मुनिबर	२	×	२
१-९१	सुभद	२	सुभग	३	३	सुखद	२	×	३
१-९४-५	सहित समाज	२	२	२	२	सकल समाज	२	×	२
१-९४-६	गए सकल तुहिनाचल	२	२	२	गए सकल तु हिमाचल	२	२	×	गवने सकल हिमाचल

१—(१) में भी पूर्व का पाठ 'जाति' था।

२—(१) में पूर्व में कोई अन्य शब्द था, उसके स्थान पर 'बिधि' बनाया गया है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-९५-२	सजि	२	२	२	२	२	सब	×	२
१-९५-८	बरद	२	२	२	२	२	बसह	×	६अ
१-९६-४	अबलन्ह	२	अबलन (२)	३	३/अबलन्हि	अबलन्हि	२	×	अबल
१-९७-१	काह	२	कहा[1]	२	२	२	२	×	२
१-१००-८	कोटिबहु	कोटिहु[2]	१	१	१	१	१	×	१
१-१०१	प्रिय	२	२	२	२/सम	२	सम	×	२
१-१०२-४	भरे	२	२	भर	भरि	५	२	×	५
१-१०२-छं०	भवनहिं	२	भवन	२	३	२	३	३	३
१-१०२-छं०	जब	२	२	२	२/तब	२	तब	×	६अ
१-१०३-७	जब जनमेउ	२	तब जनमेउ	तब जनमे	४/२	४	३	३	३
१-१०३-छं०	कहहिं	२	२	२	सुनहिं/२	५	२	२	२
१-१०४-२	नयनन्हि	२	२[3]	नयन	४	४	२	४	४
१-१०७-५	मन मानी	मन माहीं[4]	१	अनुमानी	१	४	४	४	४
१-१०८-५	मृदु बानी	हर पाहीं[4]	१	प्रियबानी	१	२	४	४	२
१-११०-१	अनअधिकारी	२	२	२	२	२	नहिं अधिकारी	६अ	६अ

१—(३) में पूर्व का पाठ 'काह' ही था।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ 'कोटिबहु' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'नयन' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-१११-६	कै	२	कर[१]	३	३/२	३	२	२	२
१-११२-६	उपकारी	२	अधिकारी	३	३	२	२	२	२
१-११२	पारबति	हिमसुता[२]	१	१	१	२	२	२	२
१-११५-३	जिन्हहिं न	२	२	२	२	२	जिन्ह कें	६अ	६अ
१-११९-२	बस	सब[३]	१	१	१	१	१[४]	२	२
१-१२०-३	भइउं प्रभु	२	भइउं अब	२	२	२	भएउं प्रभु	६अ	२
१-१२१-१	सुहाए, गाये	२	सुहावा, गावा	३	३	३	२	२	२
१-१२४-१	दीन्ह	कीन्ह[५]	१	१	१	१	१[६]	२	१
१-१२६-३	जगावनि	२	बढ़ावनि	३	३	३	३	३	३
१-१२६	कहि सुठि आरत मृदु	२	२	२	२	२	तब कहि सुठि आरत	(२) २	तब कहि सुभ आरत
१-१२७-८	सुनावहु	सुनायहु[८]	१	१	१	१	२	२	१

१—(३) में पूर्व का पाठ 'कइ' था।
२—(१) में पूर्व का पाठ 'पारबति' था।
३—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।
४—(६अ) में भी पूर्व का पाठ 'बस' था।
५—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।
६—(६अ) में भी पूर्व का पाठ 'दीन्ह' था।
७—(६अ) में 'आरत' और 'बैन' के बीच शब्द छूटा हुआ था, उसको न बनाकर 'कहि' के पूर्व 'तब' बनाया गया है।
८—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, बा०)
१-१२८-५	मिले उठि	२	उठे प्रभु	३	३	२	२	२	उठे हरि (३)
१-१३०-४	जिसु	२	२[1]	जेहि	४/तेहि	२	२	२	२
१ १३०-७	सब	२	२	२	२	सन	२	२	२
१-१३१-८	तेहि	२	येहि[2]	२	२	३	२	२	३
१-१३१-८	हैं	है[3]	१[4]	१	१	१	२	२	१
१-१३४-३	कूटि	२	२	२	कूट	५	२	२	२
१-१४०-३	तब तब कथा मुनीसन्ह गाई	२	२	२	२	तब तब कथा बिचित्र सुहाई	२	२	२
१-१४०-३	परम पुनीत प्रबंध बनाई	२	परमबिचित्र प्रबंध बनाई	३	३	परमपुनीत मुनी सन्ह गाई	२	२	२
१-१४२-८	सब	बहु[5]	१	१	१	२	२	२	२
१-१४३-१	तब	नृप[6]	पुनि	३	३/१	१	२	२	१
१-१४३-८	संत	सत[7]	१	२	१	१	१	१	१
१-१४४-५	निजानंद	२	२	चिदानंद	२	२	२	२	२
१-१४५-६	धुनि	२	२	२	२	बर	७	७	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'जेहि' था।
२—(३) में पूर्व का पाठ 'तेहि' था।
३—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।
४—(३) में भी पूर्व का पाठ 'हैं' था।
५—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।
६—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।
७—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-१४९-१	बोलीं	बोले[१]	१	१	१	१	१	१	१
१-१५०-५	भगति	भगत[२]	१	१	१	१	२	२	×
१-१५१-१	बच	२	बर	३	३	३	३[३]	२	३
१-१५१-६	मिति	२	२	तिमि	४/२	४	२	२	४
१-१६२-६	बग	२	२	बंक	४	४	२	२	४
१-१६३	बिचारि	२	२	२	२	देखि	२	२	जानि
१-१६५-५	चलै	२	चल	३	३	३	३	३	३
१-१६८-३	क्रम	२	२	२	२	२	तन	६अ	२
१-१६८-४	जप	२	२	२	२	तप	७	७	जो (२)
१-१७६-८	जाइ	जाहि[४]	१	१	१	२	२	×	१
१-१७९-८	बार	२	२	२	बेर/२	२	२	२	२
१ १७९-८	पर	२	२	कहुं	२	२	२/[५]	२/[५]	२
१-१८२-५	स्रवत	२	२	२	२	स्रवहिं	७	७	७
१-१८२-८	पचारी	२	प्रचारी	३	३	३	२	३	३

१—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

२—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

३—(६अ) में पूर्व का पाठ 'बच' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

५—(६) तथा (६अ) में शब्द छूटा हुआ था, बाद में ठीक किया गया है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा)
१-१८३-१	पहिलेहिं	२	पहिले[१]	२	२	२	२	२	२
१-१८४-३	सब	२	सम	३	३	३	२	२	३
१-१८४-४	हानी	२	ग्लानी[२]	२	२	२	३	३	२
१-१८४	लोक, सोक	लोका, सोका[३]	१	१	१	१	१[४]	२	१
१-१८६-छं०	[प्रायःह्रस्वतुक]	[दीर्घतुक][५]	१	१	१	१	१[६]	२	१
१-१८६	गंजन	२	२	२	२	२	२[७]	खंडन	२
१-१८७	धरि धरि महि	२	२ धरि धरनि महुं धरि धरि धरनि/२			५	४	४	२
१-१८८-५	भरि	महि[८]	१	१	१	२	२	२	२
१-१८८-५	रुचि	२	रचि	३	२/३	३	३	३	२
१-१९४-२	सब लोई	२	नर लोई	सब कोई	४/३	४	२	२	४

१—(३) में पूर्व का पाठ 'पहिलेहिं' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'हानी' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

४—(६अ) में पूर्व का पाठ ह्रस्वांत था, पीछे उसे विराम की पाई मिलाकर दीर्घांत बनाया गया।

५—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

६—(६अ) में पूर्व का पाठ ह्रस्वांत था, पीछे उसे विराम की पाई मिलाकर दीर्घांत बनाथा गया।

७— शब्द छूट गया था, पीछे वह बनाया गया है।

८—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-१९४	प्रगटेउ प्रभु सुखकंद	२	प्रभु प्रगटे सुखकंद	३	३	२	प्रगटेउ सुषमाकंद[१]	प्रगटेउ सुखकंद	प्रगट भए सुखकंद
१-१९६-५	मगन मन[२]	२	सकल रस	३	२/३	३	२	२	२
१-२०३	भाजि	२	भागि	३	३	२	२	२	२
१-२०३	किलकत	२	२	२	किलकात	५	२	२	२
१-२०६-७	एहूं मिस दखौं पद	२	२[३]	एहि मिस मैं देखौं पद	४	यहि मिसु देखौं प्रभु पद	२	२	४
१-२०७	तुम्ह कौं	२	२[४]	तुम्ह कहुं	४	४	२	२	४
१-२०८-५	प्रिय	प्रिय मोहि[५]	१	१	१/प्रिय मम मोहिं प्रिय(१)		२	२	प्रिया (२)
१-२०९-४	निति	२	२	हित	२	४	२	२	२
१-२१०-५	जारा	२	२	२	२/मारा	२	मारा	६अ	२

१—(६अ) में 'प्रगटेउ' और 'सुख' के बीच का शब्द छूटा हुआ था, उसको न बनाकर 'सुष' के बाद 'मा' बढ़ाया गया है।

२—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था। उस पर हरताल लगाकर 'मगन मन' बनाया गया और (२) में यह संशोधित पाठ ही उतरा।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'एहि मिस मैं देखौं पद' था।

४—(३) में पूर्व का पाठ 'तुम्ह कहि' था।

५—(१) में पूर्व का पाठ 'प्रिय' मात्र था, 'मोहिं' बाद को हाशिए में बढ़ाया गया है, और आगे का 'की' अब भी दीर्घ है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२१०-१०	कहं	सुनि[1]	१	१	१/करि	१	१	करि	६
१-२११	तेहि	२	२	ताहि	४	४	२	२	४
१-२१३-२	जनुबिधि स्वकर	२	बिधि जनु स्वकर	३	३	२	३	३	बिधि निज हाथ
१-२१६	जिते	२	२	२	२	जीति	२	२	७
१-२२६-५	कमल	पदुम[2]	१	१	१	१	२	२	१
१-२२९-१	दुइ	२	द्रोउ	३	३	३	२	२	२
१-२२९-४	तेइ	२	२	२	२	सोइ	२	२	ते (२)
१-२३१-४	सुभद	२	सुभग	३	३	३	२	२	२
१-२३१-५	मन कुपंथपग धरै न काऊ	२	भूलि न देहि कुमारग पाऊ	३	३	२	२	२	२
१-२३१-७	पावहिं	२	२	लावहिं	२	४	२	२	४
१-२३२-१	चिंता	२	२	२	२	चीता	२	२	७
१-२३३-१	जलजात	२	२	२	२	२	जलजाभ	६अ	२
१-२३३-२	मोरपंख	२	२	काकपक्ष	२	४	२	२	४
१-२३३-२	गुच्छबीचबिच	२	गुच्छे बिचबिच	३	३	३	२	२	३

१—(१) में पूर्व का पाठ 'कहें' ही था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'कमल' ही था।

(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२३४-५ भए	भएउ[1]	१	१	१	१	२	×	१
१-२३४-६ बेरिआं	२	२[2]	बिरिआं	४/२	४	२	×	२
१-२३५-२ गुन	२	कै	३	३	२	२	×	३
१-२३५-३ चित्त भीती	२	चित्र भीतर	३	३/चित्त भीतर(३)	२	२	×	चित्त भीतर (३)
१-२३५-७ अंत	२	२[3]	मध्य	४	४	२	×	२
१-२३६-१ बरदायनी पुरारि	२	२	२	२	बरदायिनि त्रिपुरारि	२	×	७
१-२३६-४ गहे	२	२	२	२	गही	२	×	७
१-२३६-६ भरेऊ	२	२	२	२	२	भयऊ	×	२
१-२३६-छं०सांवरो, रावरो	२	२	२	२	२	सांवरे, रावरे	×	२
१-२४२-३ जाति	२	जाइ	३	३/जात	३	३	×	३
१-२४२-६ भायं	२	२	भाव	२	४	२	×	४
१-२४४-३ चलत न तारे	२	२[4]	चलत न टारे	टरैं न टारे	टरत न टारे (५)	२	×	५
१-२४५-८ अवर महिप	२	२	२	२	अपर भूप	२	×	२

१—(१) में पूर्व का पाठ 'भए' ही था।
२—(३) में पूर्व का पाठ 'बरिआ' था।
३—(३) में पूर्व का पाठ 'मध्य' था।
४—(३) में पूर्व का पाठ 'चलत न टारे' था।

(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२४६-१ बताई	२	२	बुताई	२	४	२	×	न जाई
१-२४७-३ सिय बरनिअ तेइ	२	२	२	२	सीय बरनि तेइ	२	×	सियहि बरनि जेहिं
१-२४८ लागि	२	२	२	२	लगी	२	×	७
१-२४९-१ देखें,निमेखें	२	२	२	२	देखी, निमेखी	२	×	७
१-२५०-७ ताकि	२	२	२	२	तमकि	२	×	७
१-२५० उठै	२	२	२	२	२	उठे	×	२
१-२५२-२ सके छड़ाई	२	सकेउ छंड़ाई[1]	३	३	२	२	×	काहुं छड़ाई
१-२५३-५ जिमि	२	इव	३	३	२	२	×	३
१-२५३-६ को	२	२	का	४	४	२	×	४
१-२५४-१ जब	२	२	२	२	२	जे	×	२
१-२५४-८ सुभाएं	२	२	२	२	सुहाए	२	×	२
१-२५५-७ सुर	२	२	२	२	२	सब	×	२
१-२५६-५ कछुजाति न	२	कछु जाइ न	३	३	२	कहि जाति न	×	२
१-२५७-३ बढ़ी अति	२	भईमन	३	३/भई अति	२	२	×	२
१-२५७-७ कीन्हेउं	२	कीन्हिउं	३	३/२	३	३	×	कीन्ह

१—(३) में पूर्व का पाठ 'सके छंड़ाई' था।

(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२५७-७ तुअ	२	२	तव	२	२	२	×	४
१-२५८-८ सय	२	सत	३	३	३	२	×	सम
१-२५८ चितइ पुनि	२	चितव पुनि	३	३	२	२	×	चितइ पुनि
१-२५९-४ चितु	२	२	मन	४	४	२	×	४
१-२५९-७ पन	२	२	२	२	२	तन	×	प्रन (२)
१-२५९-८ गरुरु	२	२	गरुड़	४	४	२	×	४
१-२६१-१ बिपुल बिकल	२	बिकल अतिहि	३	३	२	२	×	२
१-२६१-३ सब	२	२	२	जब/२	५	२	×	जौ (५)
१-२६१-६ नभ धनु	२	२	धनु नभ	४/२	४	२	×	२
१-२६१ बूड़ सो	२	बूड़ा	३	बूड़े/बूड़ेउ	५	२	×	५
१-२६१ चढ़ा	२	२	२	चढ़े/चढ़ेउ	५	२	×	५
१-२६३-१ दुंदुभी सुहाई	२	२	२	२	दुंदुभी बजाई	२	×	२
१-२६३-३ अति	२	२	२	२	२	सब	×	६अ
१-२६३-८ दीन्ही,कीन्ही	२	२	दीन्हा, कीन्हा	४	२	४	×	४
१-२६५-३ कुसुमांजलि	१	कुसुमाविल	३	३	२	२	×	३
१-२६५-५ नाक	ब्योम[1]	१	१	१	२	२	×	नभमहं

१—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२६५-७	सोहति	२	२	२	२	सोहत	२	×	२
१-२६६	कोहु	२	२[1]	मोहु	४	४	२	×	४
१-२६७-३	लोभ लोलुप कल	२	२[2]	लोभी लोलुप	४	४	४[3]	×	४
१-२६७-४	परां गति सुगति जिमि[4]	१		१	१/परम गति	परम गति (२)	७[5]	×	परम पद
१-२६७	किसोरहि	२	२	२	२	२	किसोरहु	×	२
१-२६८-१	पुरनारीं	२	नरनारी	३	३	३	२	×	३
१-२६८-७	जनेउ माल	२	जनेऊ कटि	३	३/२	२	२	×	२
१-२६९-३	आइ	२	२	आयु	२	४	२	×	२
१-२७०-२	फिरि	२	२	२	२	तब	२	×	२
१-२७०-३	कैं	२	२	२	२/केहि	को	२	×	केइ
१-२७०-७	अब संवरी	२	संवारि सब	३	३	२	अब सबरी(२)	×	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'मोह' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'लोभी लोलुप' था।

३—(६अ) में पूर्व का पाठ 'लोभ लोलुप कल' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

५—(६अ) में पूर्व का पाठ 'पर गति' था, 'र' के आगे 'म' पीछे से बढ़ाया गया है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२७२-२	नए	२	२	२	२/नयन	२	नयन	×	२
१-२७२-५	जानहि	२	२	२	जानेहि/२	२	२	×	जानेसि
१-२७२	करसि	२	करहि	३	३	२	२	×	२
१-२७२	महीस	२	महीप	३	३	३	३	×	न भूप
१-२७४	करहिं प्रलापु	२	२	२	२	२	कथहिं प्रतापु	×	२
१-२७५-६	कर	२	२	२	२	२	खर	×	२
१-२७५-६	अकारुन	अकरन[1]	१	१	१	अकरुन	७	×	१
१-२७५	गाधिसूनु	२	२	२	२	गाधिसुवन	२	×	७
१-२७५	हरिअरेइ	२	हरियरइ	२	३	३	३	×	३
१-२७५	खांड	२	२	खंड	२	२	२	×	४
१-२७७	चरहिं	होहिं[2]	१	१	१	परहिं	२	×	जेन्है
१-२७८	सकुचि	२	बहुरि	३	३	२	२	×	२
१-२७९-६	करौं	२	२	२	२	करिय	२	×	करहु
१-२८१-६	संका सबकाहू	२	२	२	२	२	सब बंदै काहू	×	२
१-२८१	बालकहूं	२	२	२	२	२	बालक	×	२
१-२८३-४	जग	२	२	२	२	२	जप	×	२

१—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

२—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२८४	अमात	२	समात	३	३	२	२	×	३
१-२८५-५	काह	२	२[१]	कहा	४	२	२	×	२
१-२८५-६	बहुत	२	२	२	२	२	बचन	×	२
१-२८५	मिटी	२	२	२	२	मिटा	२	×	७
१-२८८-१	सपरव	२	२[२]	सपरन	२	४	२	×	सपत्र
१-२८९-७	लाग	२	२	२	२	२	लगत	×	२
१-२९०-७	दोउ[३]	हित	१	२	२	लघु	१	×	२
१-२९१	जाके	२	२	२	२	जिन्हके	७	×	२
१-२९२-७	सुरासुर	सरासुर[४]	१	२	१	२	२	×	सरासर(१)
१-२९४-१	गुर	२	२	२	२	२	२	मुनि	२
१-२९६-३	भरा	२	भएउ	३	३/भरेउ	भरेउ	२	२	७
१-२९७-२	बालक	सावक[५]	१	१	१	१	१[६]	२	२
१-२९८-४	रचि रुचि	२	२	रचिरचि	२	४	२	२	४

१—(३) में पूर्व का पाठ 'कहा' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'सपरन' था।

३—(२) में शब्द छूटा हुआ था, बाद में तथा अन्य व्यक्ति द्वारा बढ़ाया गया है।

४—(१) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

५—(१) में पूर्व का पाठ (२) का था।

६—(६अ) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-२९८-७	सरिस बय	२	२	सरिस सब	२	४	२	२	४
१-२९९-५	सांवकरन	२	२	२	स्यामकरन/२	५	२	२	५
१-३०१-१	हिंसहिं	२	हिंस	३	३	३	३	×	३
१-३०२-७	जाहीं,फहराहीं	२	२	२	२	जाई, फहराई	२	×	७
१-३०२-७	पाइक	२	२	पायक	४	४	२	×	४
१-३०५-१	कल	२	२	२	२	२	भरि	६अ	२
१-३०५-८	बराती	२	२	२	२/बरातिन्ह	बरातिन्ह	७	७	७
१-३०७	उठे	२	२	२	२	उठेउ	७	७	२
१-३१२-३	गेह	२	२	२	२	भवन	७	७	२
१-३१२-८	अपर	२	२	२	२/भए	बिप्र	आहि	६अ	२
१-३१५-५	सुर	२	२	२	२	सुख	७	७	२
१-३१५-७	कनक बर जोरी	कनकबरन तन जोरी[१]	१	१	१	कनक बरन बरजोरी	७	७	७
१-३१६-२	मंगलमय सब	२	२	२	२	२	मंगल सब सब	२	२
१-३१६	जराव	२	२	२	२	जड़ाव	२	२	२

१—(१) में भी पूर्व का पाठ (२) का था, उसको पीछे 'कनक बरन तन जोरी' बनाया गया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बां०)
१-३१६	चालि	२	२	२	बाजि	५	५[1]	२	५
१-३१९-२	आचारू, व्यवहारू	२	२	२	२	व्यवहारू, आचारू	व्यवहारू, व्यवहारू	×	ब्योहारू, बिस्तारू
१-३१९-३	धुनि	२	२	२	सुनि/२	२	२	२	२
१-३२२-६	पहिचानि	२	पहिचान	३	२	३	२	२	३
१-३२२-६	प्रान	२	२	२	२	२	प्रानहु	६अ	२
१-३२२	सत्त	सत[2]	१	१	१	१	२	२	१
१-३२३	लिए	२	२	२	२	२	लिएहि	६अ	२
१-३२५-२,३	[चौपाई]	२	२	२	२	२	[नहीं है[3]]	६अ	२
१-३२५-छं०	जनक	२	२	२	२	२	तनय	६अ	२
१-३२६-छं०	करुनामई	२	२	२	२	२	करुनानई	६अ	२
१-३२६-छं०	दइ	२	२	२	२	कई	७	७	२
१-३२७-छं०	देखिप्रतिमूरति	२	२	२	२	२	देखियति मूरति	२	२
१-३२८-७	सूपकारी	२	सूपकारक	३	२	२	२	२	२

१—(६अ) में पूर्व का पाठ 'चाल' था।
२—(१) में पूर्व का पाठ 'सत्त' ही था।
३—(६अ) के पूर्ववर्ती पाठ में यह चौपाई नहीं है, बाद में बनाई गई है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८,बा०)
१-३२९-५	जाती, भांती	२	२	२	२	भाँती, जाती	२	२	७
१-३३२-१	राति सराह बिभूती	२	राति सराहत बीती	३	३	२	भांति सराह बिभूती	६अ	३
१-३३३-५	पठईं... सुसारा	पठईं... सुआरा[1]	पठए.. सुआरा	३	३	३	२	२	३
१-३३५	उठेउ	२	२	२	२	उठी	७	७	७
१-३३६-५	हम इहां	२	हित हमहिं	३	३/२	२	२	२	२
१-३३७-३	मांगा	२	२	३	२	३	मांगत	२	मांगे (२)
१-३४१	सबुइ सुलभ	२	२	२	२	२	सबइ लाभ	६अ	२
१-३४२-२	करहिं	२	२	२	२	२	करिहिं	२	२
१-३४२-८	बहु	बहुत[2]	१	१	१	१	बहुरि	६अ	१
१-३४२-८	कीन्ही,दीन्ही	२	२	२	२	२	कीन्हा, दीन्हा	६अ	कीन्हे, दीन्हे
१-३४३-५	सिधि	२	२[3]	बिधि	२	४	२	२	४
१-३४४-२	भेरि	बीरि[4]	बीन	३	३/१	२	१	बीर(१)	२
१-३४५-३	छाए	२	आए	३	३	३	२[5]	३	३

१—(१) में पूर्व का पाठ (२) का था।
२—(१) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।
३—(३) में पूर्व का पाठ 'बिधि' है।
४—(१) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।
५—(६अ) में पूर्व का पाठ 'वाए' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६अ)	(६)	(८, बा०)
१-३४६-१	मोद	२	२	प्रेम	४/२	४	२	२	२
१-३४६-५	मंजरि[५]	२	मंगल	३	३	२	२	२	२
१-३४६-६	सकुच	सकुन[१]	१	१	१/२	१	२	२	१
१-३५०-८	जनु	२	२	जिमि	४	जस	२	२	२
१-३५२-४	सकल	२	२	२	२	चले	७	७	२
१-३५२-४	मन तोषे	२	२	परितोषे	२	२	२	२	२
१-३५३-४	चैल[३]	२	चीर	३	३	३	२	२	३
१-३५६-१	जटित	२	२	जड़ित	४	४	जरित	६अ	४
१-३५८-४	बधूं	२	२	२	२	बधुन्ह	२	×	२
१-३५८-६	बंदि मागधन्हि	२	बंदी मागध	३	३	३	२	×	३
१-३५९ ८	अतिहि	२	२	२	२	अधिक	२	×	२
१-३६०-१	साधि	२	२	२	२	सोधि	७	×	७

१—(१) में पूर्व का पाठ 'मंगल' था, उसको हरताल लगाकर 'मंजरि' बनाया गया, (२) में वही संशोधित पाठ उतरा।

२—(१) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'चीर' था, उसको हरताल लगाकर 'चैल' बनाया गया, (२) में वही संशोधित पाठ उतरा।

अयोध्याकाण्ड

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,अयो०)
२-१-७	फलित	×	२	२	२	फुलित	२	२
२-८-७	[नहीं है]	×	२	२	२	[है]	२	२
२-११-२	आवहुं	×	२	२	आवहिं	२	२	२
२-११-६	बनावहिं	×	मनावहिं	३	३	३	२	३
२-१२-५	बिबिध	×	बिबुध	३	३	३	२	२
२-१७-७	जल	×	जर[१]	२	२	३	३	२
२-२२-८	प्रिय	×	फुर[२]	२	२	२	२	२
२-२७-५	तेहिं	×	२[३]	तेइ	४/२	तब	२	२
२-२७-६	मति	×	मनि	३	३/२	२	३	३
२-२८-३	बरु	×	मकु	किन	४	३[३]	३	३
२-२८-६	मुनि	×	मनु[४]	२	२	३	२	३
२-२९-५	[है]	×	२	२	२	२	[नहीं है]	२
२-३१-५	भीर	×	भीरु	३	३/२	३	२	२

१—(३) में पूर्व का पाठ (२) का था।
२—(३) में पूर्व का पाठ (२) का था।
३—(३) में पूर्व का पाठ 'तेइ' था।
४—(३) में पूर्व का पाठ 'मुनि' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-३६-१	भूपतहि	×	२[1]	भूपपद	४	४	२	२
२-३६-८	नहारू	×	२[2]	नहारुहि	४	नाहरुह(४)	२	२
२-३७	जागेउ	×	२	जागे	४/२	४	२	२
२-४२-४	तैउ न पाइअ	×	तेऊ पाय न[3]	तेउ न पाइ अस	४	४	२	२
२-४२-८	जातें	×	२	ताते	४	४	२	२
२-४२	जल	×	२	२	जिमि/२	२	२	२
२-४८-८	परम	×	प्रान	३	३	३	२	३
२-४८	चवइ	×	२	चुवइ	२/४	४	२	२
२-५०-१	कोपि	×	कोटि[4]	३	३	३	३	कोठि (३)
२-५१-८	मिटा	×	२[5]	इहै	४	४	२	२
२-५१	रघुबीर मनु	×	२	२	रघुबंसमनि/२	५	२	२
२-५३-८	भोरें	×	मोरें	२	३	२	२	२
२-५७-६	जानी	×	२	२	२	मानी	[अर्द्धाली नहीं है]	२
२-६४-८	[नहीं है]	×	२	२	२	[है]	२	२
२-६५-३	तिअहि	×	२	२	२	तिय	२	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'भूप पद' था।
२—(३) में पूर्व का पाठ 'नहारुहि' था।
३—(३) में पूर्व का पाठ 'तेउ न पाइ अस' था।
४—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।
५—(३) में भी पूर्व का पाठ 'इहै' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-६९-४	सफल	×	सुफल	३	३	३	२	२
२-७३-५	पूंछे	×	२	२	पूंछेउ/२	पूंछा	२	२
२-७५-२	हानी	×	जानी[१]	×	३	२	[२]नी (२)	३
२-७५-४	फल सुत	×	बड़ फल[३]	२	२	बर फल (३)	२	३
२-७५-छं०	तात	×	२	जात	२	४	२	२
२-७५-छं०	प्रभुहि	×	२	२	सुतहि	२	२	२
२-७८-२	लखी	×	२	२	लखा/२	२	२	२
२-७९-८	जननी	×	२	जननिहि	४/२	२	२	२
२-८०-४	परितोषे	×	२	परिपोषे	४/२	४	२	२
२-८४-२	सफल	×	सकल	३	२/३	२	२	२
२-८९-८	आनी	×	पानी[४]	२	२	२	३	प्रानी
२-९०-४	भाथी	×	भाथा	३	३	३	२	२
२-९०-७	पावा	×	२	२	२	२	आवा	६
२-९१-७	सोवति	×	२	२	२	२	सोवत	६

१—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।
२—पूर्व का अक्षर छूटा हुआ है।
३—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।
४—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-९४-२	दातारा	×	२	२	२	सुखदारा	७	७
२-९८-१	मिलत	×	मिलित	२	२	२	२	३
२-९८-२	माइक	×	पितुगृह	३	३/२	२	२	३
२-९८-६	कोउ	×	सब	३	३	२	२	२
२-९८	मोर	×	२	मोरि	४/२	२	२	४
२-१००-१	जीवहिं	×	जिइहहिं	३	३	२	जीहहिं (३)	३
२-१०४-८	सब	×	२	२	२	तब	७	७
२-११२-५	हमारें	×	२	२	२	हमारेहिं	२	७
२-११८-७	दीन्हि	×	२	दीन्ह	४/२	४	२	४
२-१२१-२	कहइ	×	कहहिं	३	३	३	२	२
२-१२१-२	मृदु	×	बर	२	२	३	२	३
२-१२७-५	चिदानंद	×	चितानंद	२	२	२	२	२
२-१२८	मन	×	२	२	२	हिय	२	७
२-१३०-१	कोह	×	२	क्रोध	४/२	४	२	२
२-१३१-६	लउ	×	२	२	लै/लव (२)	लय (५)	२	उर
२-१३३-६	सुर थपति प्रधाना	×	सुरपति परधाना	३	३	२	२	२

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-१३६-५	करब	×	करबि[1]	२	२	२	२	२
२-१३६-७	जहं तहं	×	२	२	तहं तहं/२	५	२	५
२-१३७-७	विबुध	×	२	२	२	२	बिबिध	६
२-१३९-६	सुख भा	×	सुषमा	२	३	२	३	३
२-१४०-६	फर	×	२	२	फल/२	२	२	२
२-१४३-६	अढुकि	×	२	अटकि	४	उठुकि (२)	२	२
२-१४४-४	रहिहि	×	रही	२	२	२	२	२
२-१४८-२	तेहि तेहि	×	जेहि तेहि	३	३	३	२	२
२-१५२-१	सुनाएहु	×	सुनाएउ	२	२	२	२	२
२-१५२-५	ओर	×	२	२	२	और	२	२
२-१५६-२	करि	×	भरि	३	३	२	२	२
२-१६१-२	सोचइ	×	२	सोचन	४	४	२	२
२-१६२-७	तेउ	×	२	प्रिय	२	ते (२)	२	२
२-१६६-१	रंग	×	राग	हरष	४/३	३	२	२
२-१६७	गन	×	घन	२	२	२	२	२

१—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-१६९-१	प्रानहु	×	२	प्रान	४/२	४	२	२
२-१६९-२	बमइ	×	चवइ	३	३/चुवइ	चुवइ	२	३
२-१६९	साजु	×	२	काजु	४	४	२	२
२-१७२-६	अवमानी	×	२	अपमानी	४	४	२	२
२-१७३-८	[नहीं है]	×	२	२	२	[है]	२	२
२-१७४-५	प्रवाना	×	२	प्रमाना	४	४	२	२
२-१७५-३	बिहित	×	बिदित	२	२	२	२	३
२-१७५-७	मरम	×	प्रेम	३	२	२	परम	२
२-१७६-३	सुरपति	×	सुरपुर	३	३	३	२	२
२-१७७-२	धरि	×	२	२	२	पुनि	२	२
२-१७८-२	दीखि	×	२[1]	दीख	४	४	४	२
२-१८०-१	पावन	×	पांवर	३	३	३	२	२
२-१८०	तेहि	×	२	ताहि	४	४	२	तोहि
२-१८२-५	कहहि	×	२	२	२	कहिहि	२	७
२-१८५	[नहीं है]	×	२	२	२	[है]	२	२

१—(३) में भी पूर्व का पाठ 'दीख' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-१८५	सहज	×	सहस	२	२	२	३	३
२-१८६-७	तहं	×	तेहि	२	२	२	३	३
२-१८७-५	समाऊ, राऊ	×	२	समाजू, राजू	४/२	४	२	२
२-१९०-५	करिहउं, धवलिहउं	×	करिहहुं, धवलिहहुं	२	२	२	२	२
२-१९१-४	भाथी	×	२	भाथा	२/४	४	२	२
२-१९१-४	धनुही	×	२	२	२	२	धनही	६
२-१९४-५	जंबुहाहीं	×	२	जमुहाहीं	४	४	२	४
२-१९६-७	रामभद्र	×	२	२	२	रामचंद्र	२	२
२-१९७-१	सब	×	२	बस	४/२	४	४	२
२-१९७-२	तनु	×	२	२	२	२	धनु	६
२-१९७-२	बिषय	×	बिनय	३	३	३	२	३
२-१९९-५	मलीना	×	२	२	२	२	बिलीना	६
२-२००-१	अैसे	×	अस	३	३	३	२	२
२-२००-८	सारद	×	सादर	२	२	२	२	३
२-२०१-६	साइं दोह	×	२	साइंद्रोहि	४	४	२	२
२-२०१-८	निरजोसु	×	२	२	२	निरदोस	२	२
२-२०२-६	[है]	×	२	२	२	[नहीं है]	२	२

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-२०५-१	जानहुं	×	२	२	जानहिं/२	५	२	२
२-२०६-४	मूरतिवंत	×	मूरतिमंत	२	२	२	३	३
२-२०७-४	बोलाई	×	बलाई	२	२	२	२	२
२-२०९-५	अवमान	×	२	अपमान	४	४	२	४
२-२०९-६	कीन्हिहु	×	२	कीन्हेहु	४	४	२	४
२-२१०-१	कीन्हि	×	२	कीन्ह	४	४	२	४
२-२१०-६	जग जस	×	जस जग	२	२	२	३	३
२-२११-५	नाहिंन	×	मोहिं न	३	३/२	२	३	३
२-२१२-६	कुजोगु	×	कुरोगु	३	२	३	२	२
२-११४-४	रचेउ	×	२	२	२	रचे	२	२
२-२१७	सुप्रेम	×	सुपेम	२	२/सप्रेम	२	३	सप्रेम
२-२१७	बेगरन	×	२	बिगरन	४	४	२	४
२-२१९-३	पुन्नु	×	२	पुन्य	४	४	२	२
२-२२५-२	[नहीं है]	×	[है]	३	३	३	२	३
२-२२६-छं०	सचकित	×	२	चक्रित	४	चकित (४)	२	२
२-२२७-८	कहइ	×	२	२	२	कहौं	२	७
२-२२९-७	उपचरा	×	उपचार	३	३	३	२	३
२-२२९	छत्र	×	२	२	छत्रि/२	५	२	५

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-२२९	अनुज	×	२	२	२	२	अनुग	६
२-२३१-७	नृप मातहिं	×	२	मातहिं नृप	४/२	२	२	४
२-२३१-७	जेहि	×	२	जेइ	४/२	२	२	२
२-२३२-३	मकु	×	२	२	२	बरु	२	२
२-२३४-२	राम	×	रामहिं	२	२	२	३	३
२-२३७-४	अबिचल	×	अबिरल	२	२	२	३	३
२-२३९-८	जिय	×	२	हिय	२/४	२	२	२
२-२३९-८	मनहुं	×	हरत	३	३	३	२	३
२-२४०-४	बस	×	बर	३	३	३	२	२
२-२४०	बिसरे	×	बिसरा	२	२	३	२	२
२-२४१	भायं	×	२	२	२	भाग	२	२
२-२४८-४	मातु	×	राम	३	३/प्रेम	३	२	३
२-२५१-छं०	नौका	×	लौका	२	२	२	३	३
२-२५२	सुठि	×	२	२	२	२	सुचि	६
२-२५३-६	हइ	×	हर[1]	३	३	३	३	३
२-२५७-४	सरसी सीपि कि	×	सर सीपी किमि[2]	३	३	३	२	२

१—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

२—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-२६१-४	काली	×	२	ताली	४	४	२	२
२-२६२-८	तापस	×	तामस	३	३/२	३	२	३
२-२६९-३	अभारू	×	२	सिरभारू	४	४	२	२
२-२७३-४	गनप गौरि तिपुरारि	×	२	गनपति गौरि पुरारि	४	४	२	२
२-२७६-छं०	सोक	×	२	२	२/सोच	२	सोच	६
२-२८१-५	सकल	×	२	२	सरस/२	५	२	२
२-२८२-४	जो	×	२	२	२	सो	२	२
२-२८३-१	बिबुध	×	२	देव	४	४	२	४
२-२८४	भूप	×	ईस	३	३	३	२	३
२-२८७-५	महुं	×	महि	३	३	२	२	२
२-२८९-६	सींव	×	सीम (२)	२	२	२	सीय	६
२-२९२-४	बड़ाई	×	२	बढ़ाई	४	४	२	२
२-२९५-६	चंडकर	×	चंदुकर	३	३	३	२	२
२-२९६-२	[नहीं है]	×	[है]	३	३	३	२	३
२-२९९-५	समाज	×	२	समान	४/२	४	२	२
२-३०२	मुनिगन	×	२	२	२	२	मुनिजन	६
२-३०५-३	करमू	×	मरमू	२	२	२	२	२

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अयो०)
२-३०५-६	पुरजन	×	२	२	२	परिजन	२	७
२-३०६-४	साधक	×	साधन	३	३/२	३	२	२
२-३०७-८	देउ	×	२	देव	४	४	४	२
२-३११-५	कटु	×	कटुक	३	३	३	२	२
२-३१३-७	सबहिं सहेउ	×	२	२	३	सहेउ सकल	२	सहेउ सबहिं (२)
२-३१४-१	सुचि	×	रुचि	३	३/२	३	२	२
२-३१६-५	जामिक	×	२	२	२	२	जामनि	२
२-३२५-१	घट तन	×	घटत	घटन	४	४	घटइ	६
२-३२५-७	[नहीं है]	×	[है]	३	३	३	२	३
२-३२५	चहुं	×	बहु	३	२/३	३	२	२

अरण्यकाण्ड

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)[1]	(८, अर०)
३-१-१	पुरनर	२	२	२	२	पुरजन	२	पूरन
३-२-१	भाजि	२	२	२	२	भागि	२	२
३-२-८	ताहि	२	२	२	तेहि/२	२	२	२
३-२-८	अनलहु	२	२	२	२	अनल	२	२
३-३-१	श्रुति	२	२	२	२	२	अति	सब
३-५-२	देइ	२	२	२	२	दीन्हि	२	२
३-५-४	सरस	२	सरल	२	२/३	३	२	३
३-५-५	मित प्रद सब	२	२	२	२/मित सुखप्रद	मित सुखप्रद	२	२
३-५-१४	सो	२	२	२	२	ते	२	२
३-५-१९	जन्मि	२	जन्म	३	३/जनम(३)	जनम(३)	३	३
३-६-२	होइ	२	२	२	२	होउ	२	२
३-६-९	अब	२	२[2]	बन	४	४	२	२

१—इस कांड में प्रति (६) में स्थान-स्थान पर कुछ पंक्तियाँ हैं जो (८, अर०) में नहीं मिलतीं। इस पाठचक्र में उनका समावेश नहीं किया गया है; अन्यत्र इस खंड के परिशिष्ट में उनको दिया गया है।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'बन' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अर०)
३-७-२	अनुज	२	२	२	२	लषन	२	२
३-७-२	काछे	२	२	२	आछे/२	५	२	२
३-७-३	सोहइ	२	२	२	२/सोहति	सोहति	२	२
३-७-४	बर	२	२	२	२	सब	२	२
३-९-७	सबदरसी	२	२	२	समदरसी	२	२	२
३-९-७	तुम्ह	२	२	२	२/सब	उर	२	२
३-९	आस्रमहि	२	आश्रमन्हि	३	३	आश्रम	७	२
३-१०-१	अगस्त्य	अगस्ति[१]	१	१	१	१	१	२
३-१०-४	हैं	हे[२]	१	१	२	१	२	१
३-१०-१२	पुनि	२	२[३]	चलि	४	४	२	२
३-१०-१७	जान न	जाग न[४]	१	१	१	१	२	१
३-११-८	बाल	२	२	२	२	२	राज	२
३-११-१८	बसतु	२	२	बसहु	४/२	४	२	२

१—(१) में पूर्व का पाठ 'अगस्त्य' ही था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'हैं' ही था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'चलि' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'जान न' था, किंतु बीच के 'न' पर हरताल लगाकर उसे 'ग' बनाया गया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अर०)
३-११-२४	झूठ	२	२	२	२	२	रूढ़	२
३-१२-१	करि	२	कहि	३	३	३	३	२
३-१२	महं	२	२	२	२	२	मों	२
३-१३-३	मुनि	२	२	२	२/सुर	सुर	२	२
३-१३-६	ऊमरि	२	२	२	२	डूमरु	२	२
३-१३-८	[है]	२	२	२	२	[नहीं है]	२	२
३-१३-१०	श्री	२	२	२	२/सिय	सिय	२	२
३-१३	बढ़ाइ	२	२	२	२	२	दृढ़ाइ	६
३-१४	जीव	२	२[1]	जीवहि	४	४	४	२
३-१५-४	अपर	२	२	२	२	२	अपार	२
३-१६-६	कर्म	२	२	२	२	धरम	धर्म(७)	२
३-१६-७	मन	२	पुनि	३	३	३	३	३
३-१६-७	धर्म	२	२	२	२/चरन	चरन	२	७
३-१६	निष्काम	निःकाम[2]	१	१	१	१	२	१
३-१७-६	सक	२	२	सकि	४/२	२	२	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'जीवहि' था।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अर०)
३-१७-६	मन नहिं[1]	२	मनहिं न	३	३	३	३	३
३-१७-८	येह	२	२	२	२	अस	२	२
३-१७-१०	कुमारी	२	२	२	२	कुंआरी	२	२
३-१७-११	कुंआर	२	२	२	कुमार	५	५	५
३-१७-१४	समथ	२	समर्थ	३	३/समरथ(२)	समरथ(२)	संमथ(२)	३
३-१७-१६	गुमानी	२	२	२	२	२	गुनानी	२
३-१८-२	विलपाता	विलपाता[2]	१	२	१	२	१	१
३-१८-४	निकर	२	२	२	२	२	बरन	२
३-१८-छं०	लरत	२	२	लसत	२/४	४	२	२
३-१८	धावत	२	२	२	२	धावहु	२	२
३-१९-३	हते	२	२	२	२	२	हने	२
३-१९-१२	खर	घर	१	१	१	१	गृह	१
३-१९-छं०	धाए	२	२	२	२	धावहु	२	२

१—(१) में पूर्व का पाठ था 'मनहिं न' उस पर हरताल लगाकर पाठ 'मन नहिं' बनाया गया, और (२) में वही संशोधित पाठ उतरा।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अर०)
३-१९-छं०	भयावहा	२	२	२	२	भयामहा	२	२
३-२०-१	बहु	२	२	२	२	२	निज	२
३-२०-६	अपार	२	प्रकार	३	३	३	२	३
३-२०-१३	सृगाल	२	सुकाल	३	३	२	३	२
३-२०-छं०	खर्प्पर	२	खप्पर	३	३	३	२	२
३-२२-९	नारि	२	२	२	२	रची	२	२
३-२२-१०	भगिनि करहिं	२	२	२	२	भगिनि करी	२	भगिनी करि(७)
३-२३मूल	मूल	२	२	२	२	फूल	२	२
३-२४-५	रचा	२	२	२	२	२	रचेउ	२
३-२५-७	मम	२	२	२	मति/२	२	२	२
३-२६-४	मानस गुनी	२	२	२	२	२	भानस गुनी	२
३-२७-११	सोइ	२	सो	३	३	३	३	३
३-२७-१४	परेउ	२	२	२	२	परा	२	२
३-२८-३	संकट	२	२	२	२	२	कष्ट	२
३-२८-५	बोला, मन डोला	२	२	बोली, मन डोली	४/२	२	२ बोली, मति डोली(४)	
३-२८-१०	बल	२	२	२	२	लव	२	२
३-२८-११	सुहाई	२	२	२	२	सुनाई	२	२
३-२८-१२	बोलेहु	२	२	२	२	बोलहु	बोले	२

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अर०)
३-२८-१६	रिसाना	२	लजाना	३	३/२	२	२	२
३-२९-१	जग एक[1]	२	जगदेक	जगदीस	४/३	जगदेव	३	२
३-२९-११	जानेहि	२	२	जानेसि	४/जानसि(४)	२	२	जाने
३-२९/१	राखिसि	२	२[2]	राखेसि	४	राखे	२	४
३-३०-३	मम सीता आश्रम महुं नाहीं	२	मम मन सीता आश्रम नाहीं	३	३	मम मन आश्रम सीता नाहीं (३)	३	३
३-३०-५	तहवां जहवां	२	२	२	२	२	तहां, जहां	२
३-३२	जे	२	२	२	२	जो	७	२
३-३२	निरंजन	२	२	२	२	निरंतर	२	२
३-३२	गो बस सदा	२	२	२	२	गो बस जदा	७	२
३-३५-३	अति मंद	२	२[3]	मतिमंद	४/२	४	२	२
३-३५-६	कैसा, जैसा	२	२	२	२	कैसे, जैसे	२	२
३-३७	खग	२	२	२	२	खगन	२	२

१—(१) में पूर्व का पाठ 'जगदेक' था, किंतु 'दे' का हरताल लगाकर 'ए' बनाया गया, और उसी से (२) में भी 'जग एक' पाठ उतर आया।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'राखेसि' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'मतिमंद' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, अर०)
३-३७/२	कीन्हेउ	२	२	२	२	दीन्हेउ	७	२
३-३८-१०	सेन	२	२	२	२	२	सेना	२
३-३९-२	कै	२	२	२	२	कहं	२	२
३-३९-५	सत्य	२	२[1]	सत्त	सत(४)/२	५	२	२
३-३९	देखिअै	२	२	२	२/देखिए(२)	देखिए(२)	देखिअ	२
३-४०-६	पनास	२	२[2]	परास	४/२	४	४	४
३-४०	भारन नमि	२	भरनम्र	३	३/२	३	३	२
३-४२-१	उदार सहज[3]	२	उदार परम	३	३/२	परम उदार(३)	७	२
३-४४-५	देति सुख	२	दहै सुख	३	३/देदुष(७)	देति दुख	७	७
३-४५-६	जिन्ह	२	२	२	२	जेहि	जावें	२
३-४५-९	धर्मगति	२	२	२	२	२	भगति पथ	२
३-४५	दुख	२	२	२	२	सख	२	२
३-४६/२	जुवति तनु	२	जुवती	३	५/जुवति रस(२)	[दोहा नहीं है]	३	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'सत' था।

२—(३) में भी पूर्व का पाठ (२)का था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'उदार परम' था; 'परम' का हर-ताल लगाकर 'सहज' बनाया गया है, (२) में भी 'सहज' ही उतर आया है।

किष्किंधाकाण्ड

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)[1]
४-१-५	पठए	२	२	२	२	पठवा	२
४-२	कुटिल	२	२	२	२	कीस	२
४-४	की	२	२	कहि	२/४	२	कह(४)
४-५-४	बिलपाता	२	२	२	२	२	बिलषाता
४-६-१४	उठीं	२	२	२	२	उठे	२
४-६-१४	द्वै	२	दोउ	३	३/द्वौ(३)	३	दौ(३)
४-६	मारिहौं	२	२	२	२	मैं मारिहौं	२
४-६	सरनागत	२	२	२	२	सरनागतहु	२
४-७-१२	दृढ़ाए	२	ढहाए	३	३	३	३
४-७-१३	बालि बधब इन्ह	२	२	२	२	२	बाली बध की
४-७-२१	येहि	२	२	२	२	२	वेहि

१—इस कांड में भी प्रति (६) में कई स्थानों पर कुछ पंक्तियाँ हैं जो अन्य किसी प्रति में नहीं मिलती हैं, और प्रक्षिप्त ज्ञात होती हैं। उनका उल्लेख अलग इस खंड के परिशिष्ट में किया गया है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)
४-७	कहै बालि	कह बाली[1]	१	१	१	कहा बालि	कह बालि
४-७	मारिहहिं	मारहिं	१	मारिहिं	१/२	मारिहैं (२)	१
४-१२-२	करहिं	२	२	२	२	२	करति
४-१२-४	सोइ	२	२	२	२	सो	२
४-१३-४	कै	२	की[2]	२	२	२	२
४-१४-५	तोराई	२	तुराई	२	२	२	२
४-१४	पाखंडबाद	२	२	पाखंडीबाद	२	४	२
४-१५-४	मिलइ नहिं	२	२	२	२	२	मिलइहि
४-१५-१०	हिय	२	२	२	२	२	धिय
४-१५	चल	बह[3]	१	१	१/बहै(१)	१	२
४-१६-२	कृत	२	२	२	२	२	ऋत
४-१६-१०	जिमि	२	२	२	२	२	जसि
४-१७-२	कैसा, जैसा	२	२	२	कैसे, जैसे/२	५	२
४-२०-७	मोह	२	२	२	२	छोभ	२

१—(१) में पूर्व का पाठ 'कहै बाली' था।

२—(३) में भी पूर्व का पाठ 'कै' ही था।

३—(१) में पूर्ववर्ती पाठ 'चल' ही है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)
४-२२-१	करन चह	२	२	किय चह	२	करि चहै	२
४-२३-३	सो जतनु	२	२	२	२	सुजतन	२
४-२३-७	गुन ज्ञान	२	गुनज्ञ	३	३/२	३	३
४-२४-३	धन	२	२	२	२/बन	बन	२
४-२४	बर सर बिगसित	२	२	२	२	सुभग सर बिगसित सर बिकसित तहं	
४-२६-२	[है]	२	२	२	२	[नहीं है]	२
४-२६-६—९	[हैं]	२	२	२	२	[नहीं हैं]	२
४-२६	प्रभु अवतरइ	२	२	२	प्रभु अवतरहिं/२	२	अवतरइ प्रभु(२)
४-२६	सब	२	२	२	२	२	सुख
४-२७-१	सुनी	२	२	२	२	सुना	७
४-२७-२	बाहेर	२	बाहिर[1]	२	२	३	बाहेरि (२)
४-२७-२	देखि	२	२	२	२	देखे	७
४-२७-३–४	[हैं]	२	२	२	२	[नहीं हैं]	२
४-२७-६	[है]	२	२	२	२	[नहीं है]	२
४-२८-५	करि	२	२	२	२	अति	२
४-२८-९	चिंता	२	२	२	२	चीता	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'बाहर' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)
४-२८	नाहीं	२	२	नाहिं	२	नाहिंन	२
४-२९-५	गरुड़	२	२	२	२	२	उमा
४-२९-६	कै	२	२	२	२	कर	७
४-२९	दीन्ही	२	२	२	२/दीन्हि मैं	दीन्हि मैं	२
४-३०-३	रीछपति सुनु	२	२	२	२	२	रिछेस सुनहु
४-३०	त्रिसिरारि	२	२[1]	त्रिपुरारि	२	४	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'त्रिपुरारि' था ।

सुन्दरकाण्ड

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, सुं०)
५-०-श्लोक	गीर्वाण	२	२	२	२	२	निर्वाण	६
५-१-३	होइहि	२	२[1]	होइ	४/२	४	२	४
५-१-७	जेहिं, देइ	२	२	२	२	जे, दीन्ह	२	२
५-१-८	एहीं	२	२[2]	२	तेही	५	योही	ताही(५)
५-२-९	दून	२	२	२	दुगुन/२	२	२	५
५-३-४	सोइ	२	२	२	२	२	सो	६
५-३-४	कहं	२	२	२	२	ते	२	७
५-३-छं०	सुंदरायतना	२	२	२	२	सुंदरायत अति	२	२
५-३-छं०	माल	२	२	२	२	मल्ल	२	७
५-४-४	बमत	२	२	२	२	२	बमन	२
५-४-७	तैं	२	२	२	२	जब	२	७
५-५-३	गरुड़	२	२	२	२/गरुअ	गरुअ	२	७
५-५-३	चितवा	२	२	२	२	चितवहिं	२	७
५-५	तुलसिका	२	२	२	२	तुलसी के	२	७

१—(३) में पूर्व का पाठ 'होइ' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'तेही' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, सुं०)
५-८-३	सुनि	२	पुनि	३	३	३	३	३
५-८-४	देखी	२	२	देखा	४	४	२	४
५-८	चरन महुँ	२	२	२	२	२	कमल पद	चरन लव(२)
५-९-३	दान	२	२	२	२/दाम	दाम	२	७
५-९-८	समुझु	२	२	२	समुझि	समुझी(५)	२	५
५-१०-४	मन	२	पन	३	३	३	३	३
५-१०-६	निसि तव असि	२	२	२	२	निसित बहसि	७	२
५-११-६	सीता	२	२	२	२	सीतहि	२	७
५-१२-११	तन	२	जनि	३	२	२	३	३
५-१३-७	कही	२	कहि	३	२/३	३	२	२
५-१४-७	भरे	२	भरि	३	३	३	२	वह
५-१५-४	जे हित	२	जेहि तरु	३	३	जेहि तरं(३)	२	३
५-१६	साखामृगन[१]	साखामृग	१	१	१	साखामृगहि	१	७
५-१७-४	मगन	२	२	२	२	हरष	२	२
५-१७-८	भारी	२	२	२	२	२	धारी	६

१—(१) पूर्व का पाठ 'साखामृग' था, उसमें 'न' बढ़ाया गया, और उसी से (२) में भी 'साखामृगन' पाठ उतर आया, किन्तु अब (१) के 'न' पर हरताल लगा है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, सुं०)
५-२१-२	सुने	२	सुनेहि[1]	२	२	२	२	२
५-२१-३	मारे	२	२	२	२	मारेहि	७	२
५-२२	राखिहैं	२	२	२	२	२	राखिहि	राखिहहिं (२)
५-२३-६	सरित	२	२	२	सजल	५	५	५
५-२४-४	तोहि	२	२	तोरि	२	तोर	२	२
५-२४	कह्यो	२	२	२	२	कहा	कहौं	७
५-२५-१	तहं	२	२	२	२	जब	२	७
५-२६-२	झपट	२	२	२	२	दपट	२	२
५-२७-४	बिरिदु	२	२[2]	बिरद	४	४	बिरुद	४
५-२७-६	आवैं, पावैं[3]	२	आवा, पावा	३	३	२	३	३
५-२८-१	सुनि निसिचर	२	२	२	२	रजनीचर	२	२
५-२८-५	जिमि	२	२	२	२	जनु	७	७
५-२९-३	प्रीति	२	२	२	२	प्रेम	७	७

१—(३) में भी पूर्व का पाठ (२) का था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'बिरद' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'आवा, पावा' था, उस पर हरताल लगाकर 'आवैं, पावैं' बनाया गया और (२) में यही संशोधित पाठ उतरा।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,सुं०)
५-३०	राति दिनु	२	२	२	दिवस निसि/२	२	५	५
५-३१	करुनानिधि	२	२	२	२	करुनायतन	२	७
५-३३-९	कछू	२	२	२	२	कछुक	२	२
५-३३	प्रभाव	२	२[1]	प्रताप	४/२	४	२	४
५-३४-५	प्रभु	२	२	२	२	कपि	२	२
५-३५-५	कीती	२	२	२	२	रीती	२	७
५-३५-छं०	उदार	२	२	२	२	अपार	२	२
५-३५-छं०	बारहिं मोहई	२	२	२	बार बिमोहई/२	२	२	५
५-३७-६	चिंता	२	२	२	२	चींता	२	२
५-४०	देहु	२	२	२	२	देव	२	२
५-४१-३	सठ	२	२	२	२	२	सब	२
५-४४-२	नासहिं	२	२	२	२	नासौं	२	नासैंहीं
५-४४-७	हनइं	२	२	२	२	हतहिं	२	२
५-४५-५	मनु	२	२	२	२	२	छवि	२
५-४७-१	मच्छर	२	मत्सर	३	३	३	२	३

१—(३) में पूर्व का पाठ 'प्रताप' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,सुं०)
५-४८	पर	२	२	२	२	परम	२	७
५-४९/१	राखेउ	२	राखा	३	३/२	राखे	३	राखेऊ(२)
५-५०-६	सब	२	२	२	२	बहु	२	२
५-५२-२	सकल बांधि कपीस	२	२	२	२	ताहि बांधि कपिपति	२	सपदि बांधि कपिपति
५-५२-३	बानर	२	२	२	२	बनचर	२	२
५-५२-७	सब	२	२	२	२	तब	२	२
५-५३-३	कस	२	सुक	३	३	३	३	३
५-५३-४	खबरि	२	२	२	२	कुसल	२	२
५-३५-४	जाहि	२	२	२	२	जासु	२	२
५-३५-५	त्यागी, अभागी	२	२	२	२	त्यागा, अभागा	२	२
५-५४-३	दीन्हे	२	२	२	२	२	दीन्हेउ	२
५-५४-८	कठिन	२	कठिन्ह (२)	२	२	बिकट	२	२
५-५४	अंगद गद	२	२	अंगदादि	२	४	२	२
५-५४	बिकटासि	बिकटास्य[१]	२	१	१	२	१	१
५-५४	निसठ सठ	२	२	२	२	कुमुद गव	७	७

१—(१) में पूर्व का पाठ 'बिकटासि' ही था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, सुं०)
५-५५	काल	२	२	२	२	कालौ	२	२
५-५६-७	जग	२	२	२	२	लगि	७	७
५-५६-८	दूतहि	दूत[1]	१	१	१	१	२	१
५-५६-/२	होहि कि राम सरानल खल[2]	२	२	२	२	होहि राम सर अनल खल जनि	२	२
५-५७-६	करिहीं, धरिहीं	२	२	२	२	करिहहिं, धरिहहिं	२	७
५-५८-४	बोए	२	बएं	३	३	२	३	३
५-५८-८	आए	२	आएउ	२	३/२	३	२	२
५-५८	डाटेहिं पै नव	२	डाटेहिं पै नवै	२	२	२	२	भय बिनु नवै
५-५९-४	जस	२	जसि[3]	३	२	२	२	२
५-५९	सुनत बिनीत बचन	२	२	२	२	सुनतहिं बचन बिनीत	२	सुनि बिनती के बचन
५-६०-छं०	सठ	२	२	२	२	सुचि	२	२

१—में पूर्व का पाठ (२) का था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'सरासन' था, उसको 'सरानल' बनाया गया है। ऐसा ही (२) में भी हुआ है।

३—(३) में पूर्व का पाठ (२) का ही था।

लंकाकाण्ड

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं० १)[1]	(८,लं० २)[1]
६-०-श्लोक	श्री शंकरं मन्मथारिं	२	२	२	कंदर्पहं शंकरं/२	५	५	[नहीं है]	शंकरं मन्मथारिं (२)
६-१-७	कछु	२	२	२	२/एक	एक	७	७	७
६-१	गिरि पादप	२	२	२	२	तरु सैलगन	७	७	७
६-१	नीलहिं	२	२	२	२	नील कहं	२	७	२
६-२-४	थापना	२	२	२	२	अस्थपना	२	७	२
६-२-७	भगत	२	२	२	२	दास	२	७	२
६-३-१	मम	२	२	२	२	२	हरि	२	सुर
६-३-५	जिय	२	२	२	२	मन	२	७	७
६-३-७	बांधा	२	२	२	२	बांधेउ	७	७	७
६-४-९	प्रभु आयसु पाई	२	२	२	२	२	कछु बरनि न जाई	६	६
६-५-५	रितु अरु कुरितु	२	२	२	२	ऋतु अनऋतुहिं	ऋतु अरुअऋतु	२	७

१—(८, लं० १) तथा (८, लं० २) में कुछ प्रसंग ऐसे हैं जो प्रति (६) ही नहीं, ऊपर की अन्य किसी प्रति में भी नहीं मिलते। उनका समावेश इस चक्र में नहीं किया गया है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-५	बांध्यो	२	२	२	२	बांधे	२	७	२
६-६-१	निज बिकलता बिचारि	२	२	२	२	व्याकुलता निज समुझि	७	७	७
६-६-६	दिनकरहि	२	२	२	२	दिवाकर	२	७	२
६-७	नयन नीर भरि	२	२	२	२	लोचन बारि भरि	७	७	७
६-७	रघुनाथहि	२	२	२	२	रघुनाथ पद	रघुबीर पद(७)	७	६
६-७	अचल होइ अहिबात	२	२	२	२	मम अहिबात न जात	७	७	२
६-८-६	बस्य	२	२	२	२	बिबस	७	७	७
६-८-७	तेहि	२	२	२	२	सन	२	७	७
६-८-८	पूछहु	२	२	२	२	बूझहु	२	७	२
६-८	सब के बचन	२	२	२	२	२	बचन सबहि के	२	६
६-९-१	सठ	२	२[1]	सब	४/२	२	४	४	४
६-९-१०	सीता	२	२	२	२	२	सीतहि	६	६
६-१०-८	गुनगन	२	२	२	२	गंधव	गंधर्व(७)	२	७

१—(३) में पूर्व का पाठ 'सब' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८,लं०२)
६-१०	तद्यपि सोच न त्रास	२	२[1]	तदपि सोच नहिं त्रास	(२) ४	तदपि न तेहि कछु त्रास	तदपि न कछु मन त्रास	तदपि हृदय नहिं त्रास	६ ७
६-११-२	सिखर एक उतंग अति	२	२	२	२	सैल सृङ्ग एक सुंदर	७	७	७
६-११-२	परम रम्य	२	२	२	२	अति उतंग	७	२	७
६-११-४	ता	२	२	२	२	तेहि	७	७	
६-११/१	कृपा रूप	२	२	२	२	२	करुनासील	करुनासिंधु(६)	करु० (६)
६-११/१	धन्य ते नर एहि ध्यान जे	२	२	२	२	२	ते नर धन्य जे ध्यान एहि	६	६
६-१२/१	हनुमंत	२	२	२	२	मारुतसुत	७	७	७
६-१२/१	प्रिय	२	२	२	२	२	निज	२	२
६-१२/२	दिसि अवलोकि प्रभु	२	२	२	२	२ दिसा बिलोकि पुनि		दिसा बिलोकि प्रभु (६)	दिसा बिलोकि प्रभु (६)
६-१३-४	उपर	२	२	२	२	२	रुचिर	२	६
६-१३-७	मधुर	२	२	२	२	सरिस	सरस (७)	२	६
६-१४-४	परे	२	२	२	२	खसे	७	७	गिरे

१—(३) में पूर्व का पाठ 'तदपि सोच नहिं त्रास' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८,लं०२)
६-१४-८	हठ उर[1]	२	हठ मन	३	३/२	२	मन हठ (३)	६	मन महं
६-१५	सचराचर	२	२	२	२	२	चर अचर मय	२	२
६-१६-२	सब	२	२[2]	कबि	४	४	४	४	४
६-१६-६	बिधि	२	२	२	२	२	मिसि	मिसु(६)	मिसु (६)
६-१६-६	कहहु	२	२	२	२	कहेउ	कहिहि	२	२
६-१६-७	सोचनि	मोचनि	१	१	१	१	२	१	१
६-१६	एहि बिधि करत बिनोद बहुप्रातप्रगट	२	२	२	२	बहु बिधि जल्पेसि सकल निसि प्रात भए	७	७	७
६-१६/१	लंकपति	२	२	२	२	२	सुलंकपति	२	२
६-१६/२	सम[3]	सिव	१	१	१	सत	७	२	१
६-१७-३	उरबासी	२	२	२	२	गुनरासी	७	७	७

१—(१) में पूर्व का पाठ था 'हठ मन', 'मन' पर हरताल लगाकर पाठ 'हठ उर' कर दिया गया और (२) में संशोधित पाठ ही उतर आया।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'कबि' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'सत' था, उसको हरताल लगाकर 'सम' बनाया गया, और उसी से 'सम' (२) पर भी उतर आया; किंतु (१) में इस समय 'सम' का भी 'सिव' बनाया हुआ है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८, लं०२)
६-१७-३	बुधिबल तेज धर्म गुनरासी	२	२	२	२	सत्यसंध प्रभु सब उरबासी	७	७	७
६-१७-८	सन	२	२	२	२	२	सैं	२	२
६-१८-३	होइगै	२	२	सो होइ गइ	२	४	४	४	४
६-१९-४	बैसे, जैसे	२	२[1]	२	बैसा, जैसा/२	५	५	५	५
६-२०-४	सब	२	२	२	२	सुर	७	७	७
६-२०	आरत गिरा सुनत प्रभु	२	२	२	२	सुनतहि आरत गिरा प्रभु	सुनतहि आरत बचन प्रभु	२	६
६-२०	करैगो	२	२	करहिंगे	४	४	२	४	४
६-२१-१	बोलु	२	२[2]	न बोलु	२	२	२	२	२
६-२१-३	ही	२	२	२	रही/२	हौ	२	५	हुय
६-२१-४	रहा बालि[3]	२	२	२	२	हां बाली	७	२	२
६-२१-६	गएउ	२	गएहु	३	३	३	२	३	३
६-२१-७	ब्यर्थ	२	२	२	२	बृथा	२	७	७

१—(३) में पूर्व का पाठ 'बैसा', 'जैसा' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'न बोलु' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'हां बाली' था, 'हा' के पूर्व 'र' बढ़ाकर 'रहा' और 'बाली' को हरताल लगाकर 'बालि' बनाया गया, और (२) में संशोधित पाठ ही उतरा।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८,लं०२)
६-२१	बधिर	२	२	२	२	२	बहिर	२	बहिरौ(७)
६-२१	कहहिं	२	२	२	२	२	कहइ	२	६
६-२२-६	देखी	२	२	२	२	देखे	देखिउं(२)	देखेउं(७)	७
६-२२-८	हमहुं[१]	२[१]	२	२	२	२	महूं	२	६
६-२३-४	बूढ़ा	२	२	२	२	२	मूढ़ा	२	२
६-२३-६	सुनत बचन कह	२	२	२	२	सुनि हंसि बोलेउ	७	७	७
६-२३-८	सुनि अस बचन सत्य	२	२	२	२	२	को अस झूठ सुनै	६	६
६-२३/१	सत्य नगर कपि जारेउ	२	२	२	२	अब जानेउं पुर दहेउ कपि	७	७	७
६-२३/१	सुग्रीव	२	२	२	२	निज नाथ	७	७	रघुनाथ(७)
६-२३/४	छत्र	२	२	२	छत्रि	५	२	५	५
६-२४-२	करै	२	२	२	२	धरै	२	करहि(२)	७
६-२४-१२	कहु	२	२	२	२	२	सुनु	२	६
६-२४-१२	जेते	२	२	२	२/तेते	तेते	२	७	७
६-२४	इन्ह	२	२	२	२	२	तिन्ह	६	२

१—(२) तथा (१) में भी पूर्व का पाठ 'महूं' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८,लं०२)
६-२५-६	जिन्ह	२	२	२	२	तिन्ह	२	२	२
६-२५	अब जाना तब जान	अब जाना तव ज्ञान[1]	१	१	१/२	तब न जान अब जान	२	७	२
६-२६-४	दससीस	२	२	२	२	दसकंठ	२	२	२
६-२७-३	बृथा	२	२	२	२	२	मुधा	मृषा	मृषा
६-२७-५	सम	२	२	२	२	इव	७	७	७
६-२७	अस	२	२	२	२	सम	२	२	२
६-२८-२	सब[2]	२	२[3]	सठ	४	४	जड़	६	६
६-२८-८	निरखु	२	२	२	२/निरखि	निरखि	२	७	७
६-२८	अति हरष बहु, बार साखि गौरीस	२	२	२	२	महुँ बार बहु, हरषित साखि गिरीस	७	७	७
६-२९-१०	इन्द्रजालि	२	२	२	२	बाजीगर	७	७	७
६-२९	मोह	२	२	२	२	बिमोह	७	७	७

१—(१) में भी पूर्व का पाठ 'जान' था। २—(१) में पूर्व का पाठ 'सठ' था 'ठ' का 'ब' बनाया गया, और (२) में वही संशोधित पाठ उतर आया। ३—(३) में भी पूर्व का पाठ 'सठ' था।

	(२)	(१)							
६-२९	कहावहिं	२	२	२	२				
६-३०-३	अस	२	२	२	२	इमि	७	७	७
६-३०-६	आनिहि	२	आनेहि	३	३	३	२	आनेहु	आनेहु
६-३०	तव जुवतिन्ह	२	२	२	तव जुवतीन्ह(२)	मंदोदरी	७	७	७
६-३१-७	अधम	२	२	२	२	२	पोत	६	६
६-३१	जानि	२	२	२	२	२	बिचारि	६	६
६-३१/१	निसि दिन	२	२	२	२	२	अनुदिन	२	६
६-३२-५	गिरत संभारि उठा दसकंधर	२	२	२	२	गिरतदसानन उठा संभारी	७	७	७
६-३२-५	भूतल परे मुकुट अति सुंदर	२	२	२	२	भूतल परे मुकुट षट चारी	७	७	७
६-३२	तरकि	२	२	२	२	कूदि	७	७	७
६-३२/२	[दोहा है]	२	२	२	२	[चौपाई है]	७	७	७
६-३३-२	बधि	२	२	२	विधि	५	२	५	५
६-३३-५	बिहरति	२	२	२	२	२	बिहरी	६	६
६-३३-७	खल	२	२	२	२	सठ	निसि	२	७
६-३४-३	तव	२	२	२	२	२	यह	२	२
६-३४-८	समुझि रामप्रताप	२	२	२	२	रामप्रताप सुमिरि	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-३४/१	[दोहा है]	२	२	२	२	२	[नहीं है]	६	६
६-३५-१	कपि के परचारे[1]	२	२	२	२	जुवराज प्रचारे	७	७	७
६-३५	धरषि	२	२	२	२	२	धरषित	२	दरपित
६-३५	पुलक सरीर नयन जल	२	२	२	२	सजल सुलोचन पुलक तनु	७	७	७
६-३५	दसकंधर,	२	२	२	२	दसकंधर	दसमौलि तब	६	६
६-३५/२	रावनहि	२	२	२	२	तब रावनहि	निसाचरहि	७	६
६-३६-३	येह	२	२	२	२	२	अस	६	६
६-३६-६	सकल पुर	२	२	२	२	२	नगरु सब	६	६
६-३६-८	जनि	२	२	२	२	२	मति	६	२
६-३६-१०	भूपाला	२	भुअपाला(२)	२	२/महिपाला	२	महिपाला	६	६
६-३६-१०	अतुल	२	२	२	२	बिपुल	७	गर्व	७
६-३७	मरे	२	मारेउ	३	३	३	मारे	३	३
६-३७	रघुनाथ	२	२	२	२	२	रघुपतिहि	२	६

१—(१) में पूर्व का पाठ था 'जुवराज प्रचारे' हरताल लगाकर उसे 'कपि के परचारे' बनाया गया, और (२) में वही संशोधित पाठ उतर आया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८, लं०२)
६-३८-९	दान	२	२	२	दाम	२	२	५	५
६-३८	तेहि परिहरि गुन आए	२	२	२	२	आए गुन तजि रावनहि	७	७	७
६-३९-७	[अर्द्धाली है]	२	२	२	२	[नहीं है]	७	२	७
६-३९	जय लछिमन	२	२	२	२	भ्राता सहित	७	७	७
६-३९	सिंघनाद	२	२	२	२	केहरि नाद	७	७	७
६-४०-३	सब निसिचर	२	२	२	२	रजनीचर	७	७	७
६-४१	निसिचर गहि	२	गहि निसिचर(२)	३	३	गहि रजनिचर	७	७	७
६-४२-१	सुभट	२	२	२	२	२	निकर	६	६
६-४२-३	निसाचर	२	२	२	२	२	तमीचर	६	२
६-४२-४	बालक आतुर	२	२	२	२	आरत बालक	७	७	७
६-४२-६	सुनी	२	२	२	२	सुना	२	७	२
६-४२-६	तेहि	२	२	२	२	जब	७	७	जौ (७)
६-४२-७	फिर मैं जाना[1]	२	सुना मैं काना[2]	३	३	२	२	२	२
६-४२-७	सो मैं हतब	२	२	२	२	२	तेहि मारिहौं	६	६

१—(१) में पूर्व का पाठ था 'सुना मैं काना' हरताल लगाकर उसे 'फिरा मैं जाना' बनाया गया, और वही संशोधित पाठ (२) में उतर आया।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'फिरा मैं जाना' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	५/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८, लं०२)
६-४२-८	बल्लभ	२	२	२	२	दुर्लभ	दुल्लभ (७)	७	२
६-४२-९	चले, सुभट	२	२	२	२	२	फिरें, बीर	६	६
६-४२	व्याकुल किए	२	२[1]	व्याकुल कीन्हे	४	४	कीन्हे व्याकुल(४)	६	६
६-४२	त्रिसूलन्हि	२	२	२	२	२	प्रचंडन्हि	६	६
६-४३-३	बिकल	२	२	बिचल	४	४	४	४	४
६-४३-३	सुना	२	२	२	२	२	सुनी	२	६
६-४३-८	दुसरे	२	२	२	२	दूसर	२	२	२
६-४४-२	द्वौ	२	२	२	२	तब	७	७	७
६-४४-७	गर्जि	२	२	२	२	कूदि	७	७	७
६-४४-७	परे	२	२	२	२	परेउ	२	२	२
६-४४	सों मर्दहिं	२	२	२	२	सन मर्दहिं (२)	सन मर्दि करि	६	गहि रजनिचर
६-४५	बिगत स्रम	२	२	२	२	प्रयास बिनु	७	७	७
६-४६-७	महाबीर निसिचर	२	२	२	२	बीर तमीचर सब	७	×	बीर निसाचर
६-४६	देखइ	२	२	२	२	देख सब	७	७	देखहिं (२)

१—(३) में पूर्व का पाठ 'व्याकुल कीन्हे' था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'बिचल' था, 'च' को हरताल लगाकर 'क' बनाया गया, और वही संशोधित पाठ (२) में उतर आया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८,लं०२)
६-४७-१	सकल मरम रघुनायक	२	२	२	२	यह सब मरम राम बिभु	७	७	७
६-४७-४	संसय	२	२	२	२	२	दुख सब	६	२
६-४७-५	हरषि	२	२	२	२	२	कोपि	६	६
६-४७	मारे कछु घायल	२	२	२	२	घायल कछु रन परे	७	७	७
६-४७	भालु बलीमुख	२	२	२	२	मर्कट भालु भट	७	७	७
६-४८-३	सचिव	२	२	२	२	२	सुभट	२	६
६-४८-८	गायो, पायो	२	२	२	२	गावा, पावा	७	७	७
६-४८	सिव बिरंचि जेहि सेवहिं	२	२	२	२	जेहि सेवहिं सिव कमलभव	७	७	७
६-४९-२	मुँह	२	मुख	३	३/२	२	३	३	३
६-४९-४	कृपानिधाना	२	२	२	२	२	श्री भगवाना	२	६
६-४९	उतर्‍यो बीर दुर्ग ते	२	२	२	२/उतरि बीर-बर दुर्ग ते	उतरि बीर-बर दुर्ग ते	उतरि दुर्ग ते बीर बर(७)	६ उतरि बीर तब दुर्ग ते (७)	
६-५०-३	सबहि	२	२	२	२/सबहि	सठहि	७	७	७
६-५०-४	क्रोध	२	२	२	२	२	कोप	६	६
६-५०-७	जहँ तहँ भागि चले	२	२	२	२	भागे भय व्याकुल	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८,लं०२)
६-५०	दस दस सर सब मारेसि	२	२	२	२	मारेसि दस दस बिसिख सब	७	७	७
६-५०	करि गर्जा मेघनाद बलबीर	२	२	२	२	गर्जत भएउ मेघनाद रनधीर	७	७	७
६-५१-२	महा सैल एक तुरत	२	२	२	२	महा महीधर तमकि	७	७	७
६-५१-५	रघुपति निकट	२	२	२	२	राम समीप	७	७	७
६-५१-७	प्रताप	२	२	२	२	२	प्रभाउ	२	६
६-५२	माँगि	२	२	२	२	माँगी	माँगेउ	६	६
६-५२	क्रुद्ध होइ	२	२	क्रुद्ध ह्वै(२)	४/२	सकोप अति	७	७	सरोष तब
६-५४	सेष	२	२	२	२	अनंत	७	७	७
६-५५	राम पदार-बिंद	२	२	२	२	रघुपति चरन सरोज	७	७	७
६-५६-४	रोकनपारा	२	२	रोकनिहारा	४	४	४	४	४
६-५६-५	मृषा	२	२	२	२/बृथा	बृथा	७	७	२
६-५६-७	मैं तैं मोर मूढ़ता	२	२	२	२	अहङ्कार ममता मद	७	७	७
६-५६-७	सूतत	२	२	२	२	सोवत	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८, लं०२)
६-५८-२	कपि	२	२	२	२	२	प्रभु	२	६
६-५८-३	कपि	२	२	२	२	सो	७	७	७
६-५८	सायक	२	२	२	२	२	सर तकि	६	६
६-५९-२	तब	२	२	२	२	२	उठि	६	६
६-६०-२	समास	२	२	२	२	२	संछेप	समस्त (२)	६
६-६०/१	[दोहा है]	२	२	२	२	[चौपाई है]	७	७	७
६-६०	मन महँ जात सराहत	२	२	२	२	२	जात सराहत मनहि मन	६	६
६-६१-११	मुँह	२	२	२	२	२	मुख	६	६
६-६१	प्रलाप	२	२	२	२	विलाप	७	७	७
६-६२-६	आवा	२	२	२	२	गयऊ	७	७	७
६-६२-६	बिबिध जतन करि ताहि जगावा	२	२	२	२	करि बहु जतन जगावत भयऊ	७	७	७
६-६२-८	कहु	२	२	२	२	२	सुनु	६	६
६-६३-६	कहा, निर्बहा	२	२	२	२	कहेऊ, निर्बहेऊ	७	७	७
६-६३-७	मैं	२	२	२	२	२	निज	६	२
६-६३	सुमिरत	२	२	२	२	सुमिरि मन	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८,लं०२)
६-६४-३	आएउ	२	२	२	२	२	गएऊ	६	६
६-६४-३	परेउ चरन निज नाम सुनाएउ	२	२	२	२	२	पद गहि नाम कहत निज भएऊ	६	६
६-६५-१	चला	२	२	२	२	२	फिरा	६	२
६-६५-४	उठाइ	२	२	२	२	उपारि	७	७	७
६-६५-५	एक एक	२	२	एकहि	४/२	४	२	४	४
६-६५-६	मुर्‌यौ, टर्‌यौ	२	२	२	२	मुरै, टरै	७	७	७
६-६५-६	टार्‌यौ, मार्‌यौ	२	२	२	२	टारे, मारे	टारा, मारा	६	६
६-६५	मुरुछित	२	मुर्छित (२)	२	२	घाय बस	७	७	७
६-६६-५	सुग्रीवहु	२	२	२	२	कपिराजहु	७	७	७
६-६६-७	गहेउ चरन गहि भूमि पछारा	२	२	२	२	गहेसि चरन गहि धरनि पछारा	७	७	७
६-६६-८	जयति जयति जय कृपा-निधाना	२	२	२	२	जय जय कारुनीक भगवाना	७	२	७
६-६६-९	जिअ	२	२	२	२	रं	सोइ	सो (६)	सो (६)
६-६६	तासु	२	२	२	२	जो तासु	७	जो ताहि(७)	ते तासु(७)

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-६६	छांड़ेन्हि	२	डारेन्हि	३	३/२	३	२	डारहिं(३)	छांड़ेसि (२)
६-६७-६	सब	२	२	२	२	२	रन	६	२
६-६७-७	बिडारी	२	२	२	२	२	बितारी	२	बिदारी(२)
६-६७	सुनु सुग्रीव बिभीषन	२	२	२	२	सुनु सौमित्र कपीस तुम्ह	७	७	७
६-६७	अनुज	२	२	२	२	सकल	७	७	७
६-६८-१	साजि	२	२	२	२	बिसिख	७	७	कठिन
६-६८-१	अरि दल दलन	२	२	२	२	मृगपति ठवनि	७	७	७
६-६८-४	जहं तहं चले बिपुल	२	२	२	२	अति जब चले निसित	७	७	७
६-६८-७	जलद	२	२	२	२	२	बनद	२	मेघ
६-६८	रघुबीर निषंग	२	२	२	२	रघुपति के त्रोन	७	७	७
६-६९-१	हति छन मांझ निसाचर	२	२	२	२	हनी निमिष महं निसिचर	७	७	७
६-६९-२	भा अति क्रुद्ध महा	२	२	२	२	२	भएउ क्रुद्ध दारुन	६	६
६-६९-८	कपि	२	२	२	२	चलि	भट	६	६

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-६९	महानाद करि गर्जा	२	२	२	२	गर्जत धाएउ बेग अति	७	७	७
६-७०	करि चिक्का' घोर अति	२	२	२	२	करि चिकार अति घोरतर	७ करि चिकार अति घोर रव		करि चिकार अति घोर रव
६-७१-३	मुख सन्मुख	२	२	२	२	२	सनमुख सो	२	२
६-७१-७	[अर्द्धाली है]	२	२	२	२	[नहीं है]	७	२	७
६-७१-९	सुर	२	२	२	२	२	नभ	६	६
६-७१-९	अस्तुति करहिं सुमन बहु	२	२	२	२	जय जय करहिं सुमन सुर	जय जय करि प्रसून भुर	७	६
६-७१ छं०	अरुन	२	२	२	२	रुचिर	७	७	७
६-७१	मलाकर	२	२	२	२	मलायतन	७	७	७
६-७२-३	सुकृत	२	२	२	२	धर्म	७	७	७
६-७२	मायामय	२	२	२	२	२	माया रचित	माया रची(७)	सुनि स्रवन अस
६-७२	अट्टहास करि	२	२	२	२	प्रलय पयोद जिमि	७	७	७
६-७३-३	दस दिसि रहे बान नभ	२	२	२	२	रहे दसहु दिसि सायक	७	७	७
६-७३-४	सुनिअ धुनि	२	२	२	२	सुनहिं कपि	७	मारु सुनि	मारु सुनि
६-७३-१३	प्रभुहि	२	२	२	२	आपु	२	७	२

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८,लं०२)
६-७३-१३	बंधायो	२	२	२	२	बंधावा	७	७	७
६-७३-१३	नागपास देवन्ह भय पायो	२	नागपास देवन्ह दुख पायो	३	३/२	देखि दसा देवन्हि भय पावा	७	७	देखि दसा देवन्हि दुख पावा (७)
६-७३	गिरिजा	२	२	२	२	२	खगपति	६	६
६-७३	सो कि बंध तर आवै	२	२	२	२	सो प्रभु आव कि बंध तर	७	७	७
६-७४-५	अधम	२	२	२	२	पतित	७	२	७
६-७४-६	तरल	२	२	२	२	२	तीव्र	६	६
६-७४-७	भूमि	२	२	२	२	२	धरनि	६	६
६-७४	खगपति सब धरि खाए	२	२	२	२	पन्नगारि खाए सकल	७	७	७
६-७४/१	माया नाग बरूथ	२	२	२		छन महं व्याल बरूथ	७	७	७
६-७४	माया बिगत भए सब	२	२	२	२	भए विगत माया तुरत	७	७	७
६-७५-३	इहां बिभीषन मंत्र बिचारा	२	२	२	२	सो सुधि पाइ विभीषन कहइ	७	७	७
६-७५-३	सुनहु नाथ बल अतुल उदारा	२	२	२	२	सुनु प्रभु समाचार अस अहइ	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-७५-५	पुनि	२	२	२	२	रिपु	७	७	सो
६-७५-८अ	[अर्द्धाली है]	२	२	२	२	[नहीं है]	७	७	७
६-७५-९	सुग्रीव	२	२	२	२	२	कपिराज	६	६
६-७५	रघुपति चरन नाइ सिर	२	२	२	२	रघुपति चरनहि नाइ सिर	बंदि राम पद कमल जुग	६	६
६-७५	सुभट	२	२	२	२	२	रिषभ	२	२
६-६६-१	[अर्द्धाली है]	२	२	२	२	२	[नहीं है]	२	२
६-७६-२	कीन्ह कपिन्ह सब	२	२	२	२	२	तब कीसन्ह कृत	६	६
६-७६-१४	लछिमन मन असं मंत्र दृढ़ावा	२	२	२	२	अब बध उचित कपिन्ह भय पावा	७	२	७
६-७६	धन्य धन्य तव जननी	२	२	२	२	धन्य सक्रजित मातु तव	७	७	२
६-७७-३	रघुनाथ	२	२	२	२	रघुबीर	७	×	२
६-७७	दसकंठ बिबिध बिधि	२	२	२	२	लंकेस अनेक बिधि	७	७	७
६-७७	जगत	२	२	२	२	प्रपंच	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-७८-१	अति पावन	२	२	२	२/सुभ पावन	२	सुभ भावन	२	२
६-७८ छं०	बोलहिं	२	२	२	रोवहिं/२	५	५	५	५
६-७९-८	प्रलय समय	२	२	२	२	महाप्रलय	७	प्रलय काल	७
६-७९	राम हित	२	२	२	राम कहि/२	रघुपतिहि	७	५	७
६-८०	सुनि प्रभु बचन बिभीषन	२	२	२	२	सुनत बिभीषन प्रभु बचन	७	७	७
६-८०	एहि मिस मोहि उपदेसे	२	२	२	२	एहि बिधि मोहि उपदेसे	एहि मिस मोहि उपदेस दिअ	६	६
६-८०	दसकंधर	२	२	२	२	२	दसकंठ भट	६	६
६-८१-६	उपारहिं, डारहिं	२	२	२	२	२	उपाटहिं, डाटहिं	२	२
६-८१-७	ढारि[1]	२	डारि	३	३	३	टारि	३	६
६-८१	बिचलत देखिसि	२	२	२	२	बिकल बिलोकि तेहिं	बिचल बिलोकि तेहिं	६	६
६-८१	रथ चढ़ि चलेउ दसानन	२	२	२	२	चलेउ दसानन कोपि तब	७	७	७

१—(१) में पूर्व का पाठ 'डारि' था, उसको हरताल लगाकर 'ढारि' बनाया गया, उसी से 'ढारि' (२) में भी उतर आया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८, लं०२)
६-८२-४	रहा	२	२	२	२	२	महा	२	६
६-८२	निज दल बिकल देखि कटि, कसि	२	२	२	२	निज दल बिकल बिलोकि तेहिं, कटि	बिचलत देखि अनीक निज, कटि	६	६
६-८२	क्रुद्ध होइ	२	२	२	२	सरोष तब	७	७	७
६-८३-४	डारे	२	२	२	२	मारे	२	२	२
६-८३-७	धरनि	२	२	२	२	अवनि	७	७	७
६-८३	भवन	२	भुवन	३	२	३	२	३	२
६-८३	देखि पवन सुत धाएउ	२	२	२	२	देखत धाएउ पवनसुत	७	७	७
६-८३	आवत कपिहि हन्यो तेहिं	२	२	२	२	आवत तेहिं उर महं हतेउ	७	७	७
६-८४-८	पुनि कोदंड बान गहि धाए	२	२	२	२	२	धरि सर चाप चलत पुनि भए	६	६
६८-४-८	रिपु सनमुख अति आतुर आए	२	२	२	२	२	रिपु समीप अति आतुर गए	६	६
६-८४	राम बिरोध बिजय चह	२	२	२	२/राम बिरोधी बिजय चह(२)	बिजय चहत रघुपति बिमुख	जय चाहत रघुपति बिमुख	६	६
६-८५-३	नाथ	२	२	२	२	देव	७	७	दूत

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, ल०१)	(८, लं०२)
६-८५-८	मारा	२	२	२	२/मारेउ	मारेउ	७	७	७
६-८५ छं०	करि कोप कपि	२	२	२	२	कपि कोपि तब	७	७	७
६-८५	जज्ञ बिधंसि कुसल कपि	२	२	२	२	जगि बिधंसि करि कुसल सब	मख बिधंसि कपि कुसल सब	६	६
६-८५	निसाचर	२	२	२	२	लंकपति	७	७	७
६-८६-५	अस्तुति	२	२	२	२	२	बिनती	६	६
६-८६	सोभा देखि हरषि सुर	२	२	२	२	हरषे देव बिलोकि छबि	७	७	७
६-८६	जय जय जय करुनानिधि	२	२	२	२	जय जय प्रभु गुन ज्ञान बल	७	७	७
६-८६	छबि बल गुन आगार	२	२	२	२	धाम हरन महिभार	७	७	७
६-८७-३	जनु दह दिसि	२	२	२	२	जनु दस दिसि	२	जनु चहुंदिसि(२)	मानहुं घन
६-८७-४	गर्जहिं	२	२	२	२	गर्जत	७	७	७
६-८७-१०	भारी	२	२	बारी	२	४	२	४	४
६-८७ छं०	चली	२	२	२	२	बढ़ी	७	चलेहु	७
६-८७	देखि डरहिं तहं	२	२	२	२	देखत डरहिं तेहि	७	देखत अपडरहिं	७
६-८८-१०	चल्लहिं	२	डोल्लहिं	डोलहिं(३)	३	३	२	३	३
६-८८ छं०	भटन्ह ढहावहीं	२	२	२	२ सुरपुर पावहीं	सुरपुर पावहीं	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८,लं०२)
६-८८ छं०	बानर निसाचर निकर मर्दहिं	२	२	२	२	निसिचर बरूथ बिमर्दि गर्जहिं	७	७	७
६-८८ छं०	रामबल दर्पित भए	२	२	२	२	भालु कपि दर्पित भए	७	७	७
६-८८	रावन हृदय बिचारा	२	२	२	२	हृदय बिचारेउ दसबदन	७	७	७
६-८९-३	हरषि	२	२	२	२	बिहंसि	७	७	७
६-८९-३अ	[अर्द्धाली है]	२	२	२	२	[नहीं है]	७	२	७
६-८९-६	लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची	२	२	२	२	सब काहू मानी करि साँची	७	७	७
६-८९ छं०	बहु राम लछिमन देखि मर्कट	२	२	२	२	बहु बालिसुत लछिमन कपीस	७	७	७
६-८९ छं०	भालु मन अति अपडरे	२	२	२	२	बिलोकि मर्कट अपडरे	७	७	७
६-८९ छं०	मर्कट	२	२	२	२	बानर	७	७	७
६-९०-२	धावा	२	२	२	आवा	५	५	५	५

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८, लं०२)
६-९०-५	बिराध	२	२	२	२	२	कबंध	६	६
६-९०-९	बिहंसि बचन कह	२	२	२	२	बिहंसि कहेउ तब	७	७	×
६-९०	बिहंसा	२	२	२	२	बिहंसेउ	बिहंसि कह	६	६
६-९०	डरे	२	२	२	२	२	डरेहु	६	२
६-९१-३	पावक सर	२	२	२	२	अनल बान	७	७	७
६-९१-४	चलाई	२	२	२	२	पठाई	७	७	२
६-९१	तानेउ चाप	२	२	२	२	तानि सरासन	७	७	७
६-९२-१३	बीसा	२	सीसा	३	३	३	३	३	३
६-९३-४	परेऊ, दिनकर दुरेऊ	२	२	२	२	२	परा, दिनमनि दुरा	२	६
६-९३-८	सुग्रीव	२	२	२	२	हनुमान	७	७	७
६-९३ छं०	कर कालिका गहि	२	२	२	२	२	गहि कालिका कर (२)	६	६
६-९३	पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ	२	२	२	२	पुनि रावन अति कोप करि	७	७	७
६-९३	छांड़ी	२	२	२	२	छांड़िसि	७	७	७
६-९४-१	अति घोरा	२	२	२	२	खर धारा	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-९४-१	प्रनतारति- भंजन पन मोरा	२	२	२	२	प्रनतार/तिहर बिरिदु संभारा	७	७	७
६-९४ छं०	दर्पित	२	२	२	२	गर्बित	७	७	७
६-९४	सो अब भिरत काल ज्यों	२	२	२	२	२	भिरत सो। काल समान अब	लरत— (६)	६
६-९५-४	कपि	२	२	२	२	तेहि	७	७	७
६-९५	तब रघुबीर प्रचारे	२	२	२	२	राम प्रचारे बीर तब	७	७	७
६-९५	देखि	२	२	२	२	बिलोकि	७	७	७
६-९६-३	जहँ तहँ भगे भालु अरु कीसा	२	२	२	२	भागे भालु बिकल भट कीसा	७	७	७
६-९६-४	भागे बानर	२	२	२	२	चले बलीमुख	७	७	७
६-९६	सजि सारंग एक सर	२	२	२	२	सजि बिसि खासन एक सर	७	खैंचि सरासन स्रवन लगि	७
६-९७-५	अस्तुति करत देवतन्ह	२	अस्तुति करत देव तेहिं	३	३/२	करत प्रसंसा सुर तेहिं	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-९७-६	पर	२	पथ	३	३/२	२	३	३	३
६-९७	रावन	२	२	२	२	लंकेस	७	७	७
६-९७	काटे बहुत बढ़े पुनि	२	२	२	२	काटे भए बहोरि तेइ	काटे भए बहोरि जिमि	६	६
६-९७	जिमि तीरथ कर	२	२	२	२	२	कर्म मूढ़ कर	६	६
६-९८-३	बानरराज दुबिद	२	२	२	२	२	दुबिद कपीस पनस	६	६
६-९८-७	रुधिर देखि विषाद उर भारी	२	२	२	२	रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी	७	७	७
६-९८ छं०	गहे	२	गहि	३	३/२	३	२	३	३
६-९८	मुरुछा बिगत	२	२	२	२	गै मुरुछा तब	७	७	७
६-९९-११	कर	२	२[1]	करत	करति/४	४	४	४	२
६-९९	रावनहि	२	२	२	२	२	रावन कहुं	६	रावन के
६-१००-३	सिराति न राती	२	न राति सिराती	३	३/२	२	बिहाति न राती	२	६

१—(३) में पूर्व का पाठ 'करत' है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं०१)	(८, लं०२)
६-१०१	ताके गुन-गन कछु कहे	२	२	२	२	कहे तासु गुनगन कछुक	७	७	७
६-१०१	जिमि निज बल अनुरूप ते	२	२	२	२	निज पौरुष अनुसार जिमि	७	७	७
६-१०१	माछी उड़ै अकास	२	२	२	२	मसक उड़ाहिं अकास	७	७	७
६-१०२-५	नाभिकुंड पियूष	२	२	२	२	नाभीकुंड सुधा	७	७	७
६-१०२-७	असुभ होन लागे	२	२	२	२	२	असगुन होन लगे	६	६
६-१०२ छं०	रुदहिं	२	२	२	२	स्रवहिं	७	७	७
६-१०२ छं०	नभ सुर	२	२	२	२	मुनि सुर	सुर मुनि (७)	६	६
६-१०२	खैंचि सरा-सन स्रवन लगि	२	२	२	२	आकरषेउ धनु कान लगि	७	२	७
६-१०३-३	दुइ	२	२	जुग	४/२	४	४	४	४
६-१०३-६	धरनि परेउ	२	२	२	२	परेउ बीर	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं०२)
६-१०३-८	जाई	२	२	२	आई/२	५	५	५	५
६-१०३ छं०	सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल	२	२	२	२	सुर सिद्ध मुनिगंधब हरषे	७	७	७
६-१०३	भालु कीस सब हरषे	२	२	२	२	हरषे बानर भालु सब	७	७	७
६-१०४-३	छूटे कच नहिं बपुष संभारा	२	२	२	२	छूटे चिकुरन चीर संभारा	छुटे चिकुरन सरीर संभारा	६	७
६-१०४	नहिं	२	२	२	२	को	७	७	७
६-१०४	जोगिबृंद दुर्लभ गति	२	२	२	२	२	मुनि दुर्लभ जो परम गति	६	६
६-१०५-४	देखी	२	२	२	२	बिलोकि	७	७	७
६-१०५-५	तब प्रभु अनुजहिं	२	२	२	२	२	राम अनुज कहुं	६	६
६-१०५-६	तेहि बहु बिधि	२	२	२	२	जाइ ताहि	७	७	७
६-१०५-६	समुझायो, आयो	२	२	२	२	समुझायउ, आयउ	७	७	७

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं० १)	(८,लं० २)
६-१०५	मंदोदरी आदि सब	२	२	२	२	मयतन-यादिक नारि सब	७	७	७
६-१०५	रघुपति	२	२	२	२	रघुबीर	७	७	७
६-१०६-६	सारि	२	२	२	२	२	कीन्ह	६	६
६-१०६	प्रभु कें बचन स्रवन सुनि	२	२	२	२	सुनत राम कें बचन मृदु	७	७	७
६-१०६	बार बार सिर नावहिं	२	२	२	२	बारहिं बार बिलोकि मुख	७	७	७
६-१०७-४	पुनि	२	२	२	२	२	तिन्ह	६	६
६-१०७	कोसलपति	२	२	२	२	रघुबंसमनि	७	७	७
६-१०८-३	सुनि संदेस भानुकुल भूषन	२	२	२	२	सुनि बानी पतंग कुलभूषन	७	७	७
६-१०८-६	सिखायो	२	२	२	२	सिखाए	सिखावा	६	६
६-१०८-६	तिन्ह बहु बिधि	२	२	२	२	सादर तिन्ह	७	७	७
६-१०८-६	मज्जन करवायो	२	२	२	२	सीतहि अन्हवाए	सीतहि अन्हवावा	६	६

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८, लं०२)
६-१०८-७	बहु प्रकार	२	२	२	२	२	दिव्य बसन	६	६
६-१०८-१२	देखहुँ	२	२	२	२	देखहिं	७	७	७
६-१०८	करुनानिधि	२	२	२	२	करुनायतन	७	७	७
६-१०८	सब	२	२	२	२/सकल	सकल	७	७	७
६-१०९-३	नीति	२	नुति	जुति	३/जुत	नय	३	३	३
६-१०९-५	पावक प्रगटि	२	२	२	२	२	प्रगटि कृसानु	६	६
६-१०९-६	पावक प्रबल देखि	२	२	२	२	प्रबल अनल बिलोकि	७	७	७
६-१०९ छं०	धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग	२	२	२	२	तब अनल भूसुर रूप कर गहि सत्य श्री श्रुति	७	७	७
६-१०९	बरषहिं सुमन हरषि सुर	२	२	२	२	हरषि सुमन बरषहिं बिबुध	७	७	७
६-१०९	सुरबधू	२	२	२	२	अपछरा	७	७	७
६-१०९	जनकसुता	२	२	२	२	श्री जानकी	७	७	७
६-१०९	देखि भालु कपि हरषे	२	२	२	२	देखत हरषे भालु कपि	७	७	७
६-११०-९	यह खल मलिन सदा	२	२	२	२	२	रावन पाप मूल	६	६

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-११०-१०	अधम सिरोमनि तव पद पावा	२	२	२	२	२	सोउ कृपाल तव धाम सिधावा	६	६
६-११०-११	प्रभु	२	२	२	२	२	तव	६	६
६-११०	अति सप्रेम तनु पुलक बिधि	२	२	२	२	अतिसय प्रेम सरोजभव	७	७	७
६-१११-१४	मुधा	२	२	२	२	महा	७	७	७
६-१११-१५	न गो	२	२	न सो	४	४	४	४	४
६-१११	चतुरानन	२	२	२	२	बिधि भाँति बहु	७	७	७
६-१११	सोभा सिंधु बिलोकत	२	२	२	२	बदन बिलोकत राम कर	७	७	७
६-११२-२	अनुज सहित प्रभु बंदन कीन्हा	२	२	२	२	सहित अनुज प्रनाम प्रभु कीन्हा	७	७	७
६-११२	सोभा देखि हरषि मन	२	२	२	२	छबि बिलोकि मन हरष अति	७	७	७
६-११४-३	खगेस	२	२	२	२	खगपति	७	७	७
६-११४-७	मुक्त भए छूटे भव बंधन	२	२	२	२	गए परम पद तजि सरीर रन	गए ब्रह्म पद तजि सरीर रन	६	६

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,लं० १)	(८,लं० २)
६-११४	प्रभु	२	२	२	२	२	राम	६	६
६-११५	कृपासिन्धु मैं आउब	२	२	२	२	२	तब मैं आउब सुनहु प्रभु	६	×
६-११६-७	पुर	२	२	२	२	२	प्रभु	२	×
६-११६	भरत दसा सुमिरत मोहिं	२	२	२	२	दसा भरत कै सुमिरि मोहिं	७	७	×
६-११६	गात	२	२	२	२	सरीर	७	७	×
६-११६	बीते अवधि जाहुँ जौ	२	२	२	२	२	जौ जैहौं बीते अवधि	६	×
६-११६	सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु	२	२	२	२	प्रीति भरत कै समुझि प्रभु	७	७	×
६-११६	पाइहहु	२	२	२	२	सिधाइहहु	७	७	×
६-११७	मुनि जेहि ध्यान न पावहिं	२	२	२	२	ध्यान न पावहिं जाहि मुनि	७	७	×
६-११८-२	देखि सब	२	२	२	२	देखि प्रभु	७	भालु कपि	×
६-११८-५	डरपहु	२	२	डरेहु	डरपेहु/२	४	डरहु	६	×
६-११८-९	कहूँ	२	२	२	२	२	कबहुँ	६	×

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं०१)	(८, लं०२)
६-११८	सहित चले, बिनय बिबिध बिधि भाखि	२	२	२	२	समेत तब चले बिनय बहु-भाखि	७	७	×
६-११८/२	कपिपति नील रीछपति	२	२	२	२	जामवंत कपि-राज नल	७	७	×
६-११८	अंगद नल हनुमान	२	२	२	२	अंगदादि हनुमान	७	७	×
६-११९-७	चलि	२	२	२	२	बह	२	२	×
६-११९	इहां सेतु बाँध्यों अरु	२	२	२	२	२	यह देखु सुंदर सेतु जहं	देखहु सुंदरि सेतु एह (६)	×
६-११९/१	कृपानिधि	२	२	२	२	कृपायतन	७	७	×
६-११९/२	कृपासिन्धु	२	२	२	२	[दोहा नहीं है]	करुनासिंधु	७	×
६-१२०-१	तुरत	२	२	२	२	सपदि	७	७	×
६-१२०-७	निरखत	२	२	२	२	देखत	७	७	×
६-१२०-९	पुनि देखु	२	२	२	२	देखेउ	२	देखा (७)	×
६-१२०	सीता सहित अवध कहँ	२	२	२	२	तब रघुनायक श्री सहित	७	७	×
६-१२०	कीन्ह कृपालु प्रनाम	२	२	२	२	अवधहि कीन्ह प्रनाम	७	७	×

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, लं० १)	(८, लं० २)
६-१२०	सजल नयन पुलकित तन	२	२	२	२	सजल बिलोचन पुलकि तन	७	७	×
६-१२१-६	सुना प्रभु	२	२	सुन्यौ प्रभु	४/२	२	सुना हरि	२	×
६-१२१-७	तब	२	जब	२	२	३	३	३	३
६-१२१	रघुबीर के चरित जे सुनहिं	२	२	२	२	रघुपति चरित सुनहिं जे, सदा	७	७	७
६-१२१/२	श्री रघुनाथ	२	२	२	२	श्री रघुनायक	७	७	७
६-१२१/२	नाहिं न	२	२	२	२	नहिं कछु	७	७	७

उत्तर कांड

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-०/४	करन	२	२	२	२	२	करैं	२
७-१-१	रहा	रहेउ	१	१	१	२	१	रहे(१)
७-२-४	सुजन	२	२	२	२	२	सो जन	६
७-२-५	सहित अनुज	२	२	२	अनुज सहित	५	५	५
७-२-५	प्रभु	२	२	२	२	२	पुर	६
७-२-६	पाइ	२	२	२	२	पाव	७	७
७-२-१३	एह	२	२	२	२/एहि	यहि	एहि(७)	२
७-२ छं०	सिंधु	२	२	२	२	२	२[1]	पाथ
७-२	चलेउ	२	चले	३	३/२	३	२	३
७-३-६	चलिं	२	चलीं(२)	२	२/३	चलिं सब	२	३
७-३-१०	सरऊ	२	सरजू	३	३	३	२	३
७-४-१	सुधाकर[2]	१	मनोहर	३	३/२	३	३	३

१—यह पाठ-संशोधन (६) में मिलता है, जो स्वतः प्रतिलिपिकार की लिखावट में है। पूर्व का पाठ स्पष्ट नहीं है।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'मनोहर' था, उसको हरताल लगाकर 'सुधाकर' बनाया गया, और यही संशोधित पाठ (२) में उतर आया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८,उ०)
७-४-४	अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ	२	२	२	२	अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ	७	७
७-५-३	धरे	२	२	२	२	गरे	७	२
७-५ छं०	सुषमा	२	परमा	२	२	३	३	३
७-५	लछिमन भरत मिले तब	२	२	२	२	लछिमन भेंटे भरत पुनि	२	२
७-६-७	महिं	२	२	महं	४	२	४	४
७-६	कैकइ कहं पुनि पुनि	२	कैकेई कहुं पुनि	३	२	२	३	२
७-७-२	होइ	२	होहु	होउ	४/२	४	४	४
७-८-५	लागहु सकल	२	२	२	२	२	लागन कुसल	२
७-८	बर	२	२	नर	४	४	२	४
७-९	गगन	२	२	२	२	नाक	७	२
७-१०-३	तब	२	जब	२	२	३	३	२
७-१०-३	गए, भए	२	गयऊ, भयऊ	२	२	३	२	२
७-१०-४	समुदाई	२	२[1]	सुभदाई	४	४	४	सुखदाई

१—(३) में पूर्व का पाठ 'सुभदाई' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-१०	हरषाइ	२	२	२	२	सिरनाइ	७	७
७-११-१	झर	२	झरि	३	३	३	३	३
७-११-८	देखि सत लाजे	२	२[1]	२	२	कोटि छबि छाजे	७	कोटि छबि राजे (७)
७-१२ छं०	सुर	२	२	२	२	मुनि	७	७
७-१२	गए	२	२	२	२	गे	२	२
७-१३ छं०	भ्रमत अमित दिवस निसि	२	२	भ्रमत स्रमित दिवस निसि	२	४	४	भर्मित देवस निसि प्रभु
७-१३ छं०	नवल नित	२	२	नव ललित	२	२	२	२
७-१४-७	मनजात	२	२[2]	मनुजात	२	४	२	जमुजाद
७-१४-१८	गद	२	२	मद	४/२	४	४	४
७-१५-१	भय	२	२	२	२	दाप	२	७
७-१५-५	नई	२	२	२	२	नितई	२	७
७-१५	देवस तिन्ह	२	२	२	२	दिवस निसि	२	७
७-१६-१	मन नाहीं	२	२	मन माहीं	४	४	४	४
७-१८-६	नाथ	२	२[3]	जानि	४/२	४	२	४

१—(३) में पूर्व का पाठ 'कोटि छबि लाजे' था। ३—(३) में पूर्व का पाठ 'जानि' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'मनुजात' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-१९	सैं	२	२	२	२	सन	२	७
७-१९	चित्त खगेस राम कर	२	२	२	२	चित खगेस अस राम कर	२ चित खगेस राम कर	सुनि (७)
७-२०	सुखहि	२	सुख	३	३/२	२	३	३
७-२१-२	नीती	२	२	२	२	२	रीती	६
७-२१-७	धृनी[1]	२	पुनी	३	३/२	३	२	२
७-२२-५	मुनि बरद सुसीला	मुनि बर दमसीला[2]	१	२	१/२	२	१	मुनि बार सुसीला
७-२२	सुनिअ अस	२	२	२	२	२	अस सुनिअ जग	अससुनिअ(६)
७-२३-५	बहहीं[3]	२	चवहीं	३	३	३	३	३
७-२४-९	ब्रह्मानि बंदिता	ब्रह्मादि बंदिता[4]	१	१	१	२	१	ब्रह्मादिक बंदित
७-२६-१	सरऊ	२	सरजू	३	३	३	२	३

१—(१) में पूर्व का पाठ 'पुनी' था, उसको हरताल लगाकर 'धृनी' बनाया गया, और (२) में यही संशोधित पाठ उत्तर आया।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ 'बरद सुसीला' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'चवहीं' था, उसको हरताल लगाकर 'बहहीं' बनाया गया, और उसी से (२) में भी 'बहहीं' पाठ उतर आया।

४—(१) में भी पूर्व का पाठ 'ब्रह्मानि बंदिता' था।'

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-२६-७	गृह गृह होहिं	२	२	२	२	२	होहिं बेद	२
७-२७ छं०	खचे	२	२	२	२	पचे	२	७
७-२७	जे निरख मुनि ते मन	२	२	जे निरखत मुनि मन	२	४	४	निरखत मन मुनिमन(४)
७-२८-६	देखहिं	२	२	२	२/देखत (२)	२	निरखहिं	२
७-२८ छं०	रुचिर	२	२[1]	चारु	२	२	४	४
७-२९-४	तिन्हकी	तिन्हके[2]	१	१	१/२	१	जिन्हकी	१
७-२९-५	बसहिं	२	२	२	२	२	सबहिं	२
७-३०-५,६	[हैं]	२	२	२	२	२	[नहीं हैं]	२
७-३०	रहहिं	२	२	२	२	२	रह	२
७-३१-२	बहुतेन्ह सुख बहुतन्ह	२	२[3]	बहुतेहु सुख बहुतन्ह	बहुतन्ह सुख बहुतन्ह/२	५	बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह	६
७-३३-८	पाइब	२	२	पाइअ	४	४	४	४
७-३३	संग	२	२	२	२	पंथ	२	७
७-३३	सदग्रंथ	२	२	२	२	२	सब ग्रंथ	६

१—(३) में पूर्व का पाठ 'चारु' था।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ 'तिन्हकी' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'बहुतेहु सुख बहुतेन्ह' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-३४-३	जय जय गुन सागर	२	२	२	२	२	जयगुननिधि सागर	२
७-३४-४	अति अनुपम	२	२[1]	अज अनुपम	अनुपम अज(४)	५	५	४
७-३४	मन परिपूरन	२	२	२	२	२	मनपर पूरन	२
७-३५-२	सुरधेनु	२	२	२	२	२	धुकधेनु	×
७-३७-२	पुरानन्ह	२	२	२	२	२	पुरानन्हि	२
७-३७	घनहि	२	२	२	२	२	घनन्हि	६
७-३८-६	जनयित्री	२	२	२	२	जनजंत्री	२	७
७-४०-८	परद्रोह	२	२	२	२	सुरद्रोह	७	७
७-४१-८	परहिं	२	२	२	२	२	परिहिं	२
७-४२-६	अतिसय	२	२	२	२	२	सुर अति	अति सो(२)
७-४३-२	गुरु मुनि अरु द्विज	२	२	२	२	सदसि अनुज मुनि	७	२
७-४३-२	तव	२	२	भय	२	४	४	४
७-४४-३	ग्रहै	२	२[2]	गहै	४/२	४	२	४
७-४४	आत्माहन	२	२[3]	आतमहन	४	४	आत्महन(४)	४

१—(३) में पूर्व का पाठ 'अनुपम अज' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'गहै' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'आत्महन' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-४५-४	मोहिं प्रिय नहिं	२	२	२	२	२	प्रिय मोहिं न	६
७-४७-८	निज निज गृह गए	२	२	२	२	२	निज गृह गए सु	२
७-४८-२	पादोदक	२	२	२	२	२	चरनोदक	६
७-४८-६	उपरोहित	उपरोहित्य[1]	१[2]	उपरोहिती	१/४	४	४	४
७-४९-५	कोइ	२	२	कोउ	४/२	४	४	४
७-५०-४	तेइ	२	जेइ	३	३/२	३	३	३
७-५०-८	सम नहिं	२	२	२	२	२	समान	६
७-५१-१	सोच	२	२	२	२	२	सोक	२
७-५१-८	ब्यलीक	२	२	२	२	बालिक	७	७
७-५२	कृपायतन	२	२	२	२	२	कृपालमइ	२
७-५३-६	निजात्मक	२	२[3]	निजातम	४/२	४	२	निलज कुल
७-५३-७	हरिचरित्र	२	२	२	२	रामचरित	२	२
७-५३	रामचरन	२	२	२	२	२	रामचरित	२
७-५५	करिहौं	२	२	२	२	कहउं मैं	२	२
७-५६-६	फिरौं बैरागा	२	२[4]	फिरौं बिरागा(२)	४	फिरौं बिभागा	फिरै बिरागा	२

१—(१) में पूर्व का पाठ 'उपरोहित' था।
२—(३) में पूर्व का पाठ 'उपरोहिती' था।
३—(३) में पूर्व का पाठ 'निजातम' था।
४—(३) में पूर्व का पाठ 'बिरागा' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-५७-७	सुनहिं	२	२	२	२	२	सुनै	२
७-५९-८	सोइ करहु जेहिं होइ निदेसा	२	२	२	२	सोइ करहु जो देहिं निदेसा	७	रहै न मोह निसा लवलेसा
७-६०-२	अति	२	२	२	२	उर	७	७
७-६०-५	मय जन	२	२	२	२	मय सब	२	माया
७-६१-२	बिनती	२	२	२	२	२	बिनीत	२
७-६२-१	तप	२	२[1]	जप	४/२	४	४	४
७-६२	मोहै	२	२	२	२	मोह है	२	७
७-६३-१	भुसुंडा, अखंडा	२	२[2]	२	भुसुंडी, अखंडी	५	५	५
७-६३	जेहि कै	२	२[3]	जिन्ह कै	४/२	जेहि की	२	७
७-६४-१	कारन	२	२	२	२	२	कारज	२
७-६४-३	पूग	पुंज[4]	१	१	१	१	२	१
७-६५	जेहि	२	२	२	२	जाहि	२	२
७-६५	सन संग	२	२	२	२	सतसंग	२	२
७-६६	मिताई	२	२	२	२	मिताइ कहि	२	२

१—(३) में पूर्व का पाठ 'जप' था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'भुसुंडी, अखंडी' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'जिन्ह कै' था।

४—(१) में भी पूर्व का पाठ 'पूग' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-६६	करि प्रभु कृत	२	२	२	२	करि प्रभु जु कृत	२	करी प्रभु
७-६६	बरनन	२	२	२	२/बरनत	बरने	बरनत	२
७-६६	ऋतु	२	अरु	३	३/२	२	कर	२
७-६७	लराई	२	२	२	२	लराइ पुनि	२	२
७-६८-६	बरनन	२	२	२	२	२	बरनत(२)	बरना
७-६८	संदोह	२	२	२	२	२	सो मोह	२
७-६९-२	सोइ	२	२	२	२	सो	२	७
७-६९-८	सब	२	२	२	२	मम	७	७
५-६९	बानी	२	२	२	२	बानि बर	२	२
७-६९	गोप्यमपि	२	२	२	२/७	गोप्य मत	२	गुप्त मत
७-७०-८	बौरहा, दहा[१]	२	बौराहा, दाहा	३	३	३	बौरहा, दाहा	३
७-७०	मृगलोचनि के नैन[२]	२	मृगलोचनि लोचन	३	३/२	मृगनैनी के नयन	२	२
७-७१-४	को नहिं	२	२	२	२	केहि नहिं	काहि न	६

१—(१) में पूर्व का पाठ 'बौराहा' और 'दाहा' था, 'रा' और 'दा' की पाइयाँ हरताल से निकाल दी गईं, और (२) में यही संशोधित पाठ उतर आया।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'मृगलोचनि लोचन सर' था, उसको हरताल लगाकर 'मृगलोचनि के नैन सर' बनाया गया, और (२) में यही संशोधित पाठ उतर आया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-७१-६	लोक	२	२[1]	नारि	सोक/२	४	२	४
७-७१-७	परिवारा	२	२	२	२	२	परिचारा	२
७-७२-३	बल	२	२	२	२	गुन	७	७
७-७२-५	अगुन अदर्भ	अगुन अदभ्र	१	१	१	अगुन अदंभ	२	गुन अद-भाग्य
७-७२-६	निर्मम	२	२	२	२	२	निर्मल	६
७-७२	अनेक	२	२	२	२	अनेकन	२	२
७-७२	सोइ सोइ	२	२	२	२	जो जो	२	२
७-७३-४	दिसि भ्रम	२	२	२	२	भ्रम दिसि	२	२
७-७३	जान नहिं	२	न जानहिं	३	३/२	२	२	३
७-७४	गनइ	२	गनत	३	३/२	२	२	३
७-७४	भजहु	२	२	२	२	२	भजसि	भजहि
७-७५	अतिसैसवं	२	२	अतिसय सब	४	अतिसय सुखद	२	७
७-७६	चीर	२	२	२	२	२	बीर	२
७-७७-९	मोहिं होति अति	२	२	२	२	चरित होति मोहिं	७	७
७-७८	उअहिं	२	२	२	२	उगहिं	२	७

१—(३) में पूर्व का पाठ 'नारि था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-७९-१	हरि बिनु	२	२	२	बिनु हरि/२	५	५	२
७-७९-८	भुज हरि	२	२	२	२	हरि भुज	७	७
७-७९	चितएउं	२	२	२	२	चितवत	२	७
७-७९	जहाँ लागि गति	जहाँ लगें गति[1]	१	१	१/जहँ लगि-गति रहि	जहँ लगि गति रहि	१	७
७-८०	रहौं	२	२	रह्यों	२	रहे	२	७
७-८१-५	जिनस	२	२	२	२	जिनिस(२)	२	जीव
७-८१-६	निनारी, सरऊ	२	२[2]	निहारी, सरजू	४/निनारी, सरजू	४	२	निनारी, सरजू
७-८१-७	कौसल्या सुनु ताता	२	२	२	२	कौशिल्यादिक माता	२	२
७-८१-८	अपारा	२	२	२	२	२	उदारा	६
७-८१	मैं दीख सब	२	२	२	२	२	सबु दीख म(२)	सब देखेउँ
७-८१	सोइ	२	२	२	२	सो	×	२
७-८१	समीर	२	२	२	२	२	×	सरीर
७-८२-४	देखौं	२	२	२	२	देखेउं	×	७

१—(१) में भी पूर्व का पाठ 'जहाँ लागि गति' था। २—(३) में पूर्व का पाठ 'निनारी, सरजू' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-८३	मम बानी	२	२	२	२	मम बैन बर	×	२
७-८४-६	अैसे	२	२	कैसे	४	४	×	४
७-८४	जेहि	२	२	२	२	जो	×	२
७-८६-६	पुनि	२	२	२	२	अरु	×	२
७-८६-७	जेहि भगति मोरि न	जेहि गति मोरि न[1]	१	१	१	१	×	१
७-८६-९	जीवहु	२	२[2]	जीवन	४/२	२	×	४
७-८७-८	भजइ	२	२	२	२	भजहि	×	७
७-८८-१	सुमिरेसु भजेसु	२	सुमिरेहु भजेहु	३	३/२	२	×	३
७-८८	जेहि	२	२	२	२	जो	×	२
७-८८	सोई सुख	२	२	२	२	सो सुखकर	×	२
७-८८	ते नहिं गनहिं	२	२	२	२	सो नहिं गनै	×	२
७-९०-१	काम न	२	२	न काम	४/२	४	×	४
७-९०	जीव न लह	२	२	२	२	जिव कि लहै	×	जीव कि लहु(७)
७-९२-२	सम	२	२	२	२	सत	×	७
७-९२-२	पूग	२	पुंज	३	३	३	×	३

१—(१) में भी पूर्व का पाठ 'जेहि भगति मोरि न' था। २—(३) में पूर्व का पाठ 'जीवन' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-९२-६	सम पालन	२	२	२	२/सत पालन	सत पालन	×	७
७-९२-८	धरा[1]	२	भार[2]	३	३/२	३	×	३
७-९३-२	प्रताप	२	२[3]	प्रभाव	४/२	२	×	२
७-९३-३	माना	२	२	२	२	जाना	×	७
७-९३	प्रसंसि	२	२	२	२	प्रसंसे	×	२
७-९४-६	मुधा	२	२	२	२	मृषा	×	७
७-९४	आए	२	२[4]	२	२	आयउ	×	७
७-९५-१	परम	२	२	सहित	४/२	४	×	४
७-९५	तेहितें	२	२	२	२	तातें	×	७
७-९६-२	भजै	२	भजिअ	३	३/२	२	×	२
७-९७	ग्रसे	२	२	२	२	ग्रासे	×	२
७-९७	लुप्त	२	२	२	गुप्त/२	लुपुत(२)	×	५
७-९८-१	रत सब नर	२	२	२	२	ब्रत रत नर	×	बस नर औ
७-९८-२	बेचक	२	२[5]	बंचक	२/४	४	×	४

१—(१) में पूर्व का पाठ 'भार' था, उसको हरताल लगाकर 'धरा' बनाया गया, और (२) में यही संशोधित पाठ उतर आया।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'धरा' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'प्रभाव' था।

४—(३) में पूर्व का पाठ 'आएउ' था।

५—(३) में पूर्व का पाठ 'बंचक' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-९८-७	ज्ञान बैरागी	ज्ञानी सो बिरागी[१]	१	१	१/ज्ञानी बैरागी	ज्ञानी बैरागी	×	७
७-९८	पूजिति	२	पूज्य ते	३	३/२	पूजित(२)	×	३
७-९८	मान्य तेइ	२	२	२	२	मान्यता	×	२
७-९९-३	श्रुति	२	२	२	२	गुरु	×	२
७-९९-६	क	का[२]	१	१	१/कर	१	×	कर
७-१००-३	जे कहुँ सत	२	२	२	२	जे कछु सत	×	निज कृत दोष
७-१००-९	नाना	२[३]	२	दाना	२	४	×	४
७-१००	कलि	२	२	२	२	कली	×	२
७-१०१-१	न रही	रही[४]	१	१	१/२	१	×	१
७-१०१-३	कुलवंति	२	कुलवंत	३	३/२	२	×	२
७-१०१-९	दूषक	२	२	दूषन	२	२	×	दोष के
७-१०१	बरषै[५]	२	२	२	२	बरषहिं	×	७
७-१०२	काल	२	२	२	२	कराल	×	२

१—(१) में भी पूर्व का पाठ 'ज्ञान बैरागी' ही था।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ 'क' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'दाना' था।

४—(१) में भी पूर्व का पाठ था 'न रही'।

५—(१) में पूर्व का पाठ 'बरषहिं' था उसको हरताल लगाकर 'बरषै' बनाया गया, और (२) में यही संशोधित पाठ उतर आया।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-१०२	द्वापरहुं	२	द्वापर	३	३/२	२	×	द्वापर महं
७-१०४-१	नित	२	कृत	२	२/३	३	×	३
७-१०४-७	काल धर्म	२	२	२	२	काल कर्म	×	प्रभु प्रभाव
७-१०६	मंदिर	२	२	२	२	मंदिरहु	×	२
७-१०७	स्वर	२	२	२	गिरा	५	×	५
७-१०८-७	भ्रू सुनेत्रं	२	२	२	२/भ्रू त्रिनेत्रं(२)	शुभ्र नेत्रं	×	७
७-१०८	प्रभु मोपर	२	२	२	२/प्रभु मोहिं पर (२)	अति मोहि पर	×	२
७-१०८	भगति	२	२	२	२	भगती	×	२
७-१०८	तेहि	२	२	२	२	ता	×	२
७-१०९-५	मोहि प्रिय	२	२	२	२	मम प्रिय	×	प्रिय मम (७)
७-१०९-६	सहस अवस्य	२	सहस्र अवसि	३	३	२	×	३
७-१०९	बिंधि	२	२	२	२	सुबिंध	×	२
७-१०९	सो	२	२	२	२	सोउ	×	×
७-११०-३	चर्म	२	२	धर्म	२/४	चरम(२)	×	४
७-११०-४	तहं	तहूँ	१	१	१	तहां	×	७
७-११०-१३	ईषना	२	२	ईर्षना	४/२	४	×	न इरषा
७-११०	कृपानिधि	२	२	२	२	कृपायतन	×	२

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-११७	अवराधन	२	२	२	२	अवराधना	×	२
७-१११-७	मम	२	२	२	२	मोहिं	×	२
७-१११-१५	कीए, हीए	किए, हिए[१]	२	२	१	किएऊ, हिएऊ	×	१
७-१११-१५	ज्ञानिन्ह	२	२	ज्ञानिहुँ	४	ज्ञानी	×	४
७-११२-२	की होहिं	२	२[२]	की होइ	४/२	४	×	किमि होइ
७-११२-५	परमात्मा	२	२	२	२/परमारथ	परमातम(२)	×	परमारथ
७-११२-१७	बिनु तामस	पिसुनता सम[३]	१	१	१/२	२	×	२
७-११२	केहि	२	२	२	२	का	×	२
७-११३-४	सहन	महत[४]	१	१	१/सहज(२)	२	×	सहज(२)
७-११३	जेहि	२	२	२	२	जो	×	२
७-११३	बसब	२	२	२	२	बसहु	×	७
७-११४-४	हरि	२	२	२	२	प्रभु	×	७
७-११५	विषयाबस	२	२	२	२	बिषया बिबस	×	जो विषय बस
७-११५	बिबस	२	२	२	२	बिकल	×	७
७-११६-२	रीति	२	२	२	२	नीति	×	७

१—(१) में पूर्व का पाठ 'कीए, हीए' ही था।

२—(३) में पूर्व का पाठ 'कि होइ' था।

३—(१) में भी पूर्व का पाठ 'बिनु तामस' ही था।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'सहन' है।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-११६	जो जानै	२	२	२	२	जाने ते	×	७
७-११६	सु प्रवीन	२	२	२	२	परबीन	×	सो प्रवीन (२)
७-११६	अविछीन	२	२	२	२/अवछीन	अवछीन	×	७
७-११७-१	जाइ	२	२	२	२	जात	×	७
७-११७	रूपिनी	२	२	२	२	निरूपिनी	×	निरूपन(७)
७-११७	तासु	जासु[1]	१	१	१/२	२	×	१
७-११८-४	उजियारा, निरुवारा	२	२	२	२	उजियारी, निरुवारी	×	७
७-११८-८	जाहिं	२	२	जाइ	४/२	४	×	२
७-११८	साधत	२	साधन	३	२/३	३	×	३
७-११९-१	ज्ञान पंथ	२	२	२	२	ज्ञान क पंथ	×	४
७-११९-४	भजत	२	भजन	२	२	भगति	×	२
७-१२०-१९	जोइ	२	२	२	२	जेइ	×	जो (२)
७-१२१-१०	सुभ	२	सुख	३	२	३	×	३
७-१२१-१२	बदले जे	बदले ते[2]	१	१	१/२	१	×	गहि सो नर
७-१२१-१३	जग नाहीं	२	२	२	२	कछु नाहीं	×	७

१—(१) में भी पूर्व का पाठ 'तासु' था।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ 'बदले जे' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-१२१-१६	निति	२	नित	२	२	निज	×	२
७-१२१-२०	उद्‌य	२	२	हृदय	२	२	×	२
७-१२१-२०	अनरथ[1]	२	आरति	३	३/२	२	×	आरत (३)
७-१२१-२९	तिन्हते	२	२	२	२	जाते	×	जेहिते
७-१२१-३५	डमरुआ	२	२	२	२	डहरुआ	×	७
७-१२१	ज्ञान	२	२	२	२	जोग	×	७
७-१२१	कोटिन्ह	२	२	२	२	कोटिन्हहु	×	२
७-१२२-२	गाए, पाए	२	२	२	२	गाई, पाई	×	गावा, पावा
७-१२२-२	हहिं	२	२	२	२	हैं	×	७
७-१२२-७	मतिपूरी	२	२	२	२	अतिरूरी	×	७
७-१२२ ८	भलेहि रोग	भलेहि सो रोग[2]	१[3]	भलेही रोग (२)	४/ भलेहि कुरोग	भलेहि कुरोग	×	७
७-१२३-३	मोहि से	२	२	२	२	मोहिते	×	२
७-१२३	रघुनायक	२	२	२	२/रघुनाथ कर	रघुनाथ कर	×	७
७-१२४-१	के	२	२	२	२	कर	×	७

१—(१) में पूर्व का पाठ 'आरति' था, हरताल लगाकर उसको 'अनरथ' बनाया गया, और यही संशोधित पाठ (२) में उतर आया।

२—(१) में भी पूर्व का पाठ 'भलेहि रोग' था।

३—(३) में पूर्व का पाठ 'भलेही रोग' था।

	(२)	(१)	(३)	(४)	(५)/(५अ)	(७)	(६)	(८, उ०)
७-१२४	मोपर सदा रहहु राम	२	मोहि तोहि पर सदा रहहु	३	३/२	मो तो पर सदा रहैं (३)	×	मम तुम पर सदा रहहु
७-१२५-३	भए, दए	२	२	२	२	भएऊ, दएऊ	×	७
७-१२५-७	परि	२	२[1]	पै	४/२	४	×	४
७-१२५-८	संत सुपुनीता	२	सुसंत पुनीता	३	३/२	२	×	३
७-१२७-४	सोइ, सोइ	२	सो, सो	३	३	३	×	२
७-१२७-५	देस सो जहं	२	२	२	२/सो देस जहां	सो देस जहां	×	७
७-१२७-७	जाकी[2]	२	पाकी	३	३	३	×	३
७-१२८-६	तेइ	२	ते	२	२	३	×	तुम्ह
७-१२८	चह	२	२	२	२/चहै	चहै	×	७
७-१२८	करौ	२	२	२	२	करै	×	७
७-१२९-१	समान	२	२	२	२	सम न	×	२
७-१२९-३	पंथाना	२	२	२	२	पथ नाना	×	७
७-१२९-५	पावा, गावा	२	२	२	२	पावै, गावै	×	७
७-१३७-८	भजिअ	२	भजहि[3]	२	२	२	×	३
७-१३७ छं०	रघुबर	२	२	२	२	रघुपति	×	७

१—(३) में पूर्व का पाठ 'पै' था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'पाकी' था, उसका 'जाकी' बनाया गया, और यही (२) में उतरा।

३—(३) में भी पूर्व का पाठ 'भजिअ' था।

परिशिष्ट (क)

अतिरिक्त पाठ-चक्र

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
१-०-६ श्लो०	एकमेवहि	२	२	एवभातिहि	२	२
१-२-१०	सुलभ	स (क) ल[१]	१	१	१	१
१-४-७	गलहीं	२[२]	गरहीं	५अ	५अ	५अ
१-१० छं०	रघुबीर	रघुनाथ[३]	१	१	१	१
१-१४-६	सबनि	२	२	२	सबहिं	६
१-१४-११अ	[नहीं है]	२	[है]	५अ	२	२
१-२१-७	गुन	२	२	गति	७	७
१-२३-२	निहबूते	निज बूते	१	१	१	१
१-२८-१०	जानि सिरोमनि	जान सिरोमनि	१	१	१	१
१-२९-३	श्रुति	सुनि[४]	१	१	१	१
१-३०-१	सुनाई, सुहाई	२	सुनाई, सुनाई	सुहाई, सुनाई	७	७
१-३६-८	सकल	सकिलि[५]	१	१	१	१
१-३६	रुचि	बर[६]	१	१	१	१

१—(१) में 'क' पहले छूटा था, बाद में बढ़ाया गया है।

२—(१) में पहले 'गरहीं' था, उसको 'गलहीं' बनाया गया, और यही पाठ (२) में उतरा।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'रघुबीर' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'श्रुति' था।

५—(१) में पूर्व का पाठ 'सकल' था।

६—(१) में पूर्व का पाठ 'रुचि' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
१-३६	बिचारु, चारु	२	२	बिचारि, चारि	७	७
१-४३-६	मिटिह	मिटिहि (२)	मिटहिं	५अ	५अ	५अ
१-४५	अस	२	२	२	असि	६
१-४७-२	मुसकाई	मुसुकाई[1]	१	१	१	१
१-४७	अब	२	सो	जेहि	७	७
१-४७	मिटहि	२	२	मिटै (२)	मिटिहि	२
१-५२-७	कै	२	करि	५अ	५अ	५अ
१-६०-४	जोइ	जाइ	१	१	१	१
१-६५-२	सुरन्हि	२	सुरन्ह	५अ	५अ	५अ
१-६७-७	जो	२	२	जे	७	७
१-६८-६	सखी उछंग बैठि	२	२	२	सखि उछंग बैठी	६
१-६९-४	समान	सम कह[2]	१	१	१	१
१-७५-४	जानिहु	२	जानेहु	५अ	५अ	५अ
१-७८-१	मूरतिवंत	२	२	२	मूरतिमंत	६
१-७९-१	दच्छसुतन्हि	२	दच्छसुतन्ह	५अ	५अ	५अ
१-८६ छं०	अनिल	अनल[3]	१	१	१	१
१-९०-६	कहा	२	२	२	कहेहु	२
१-९०-६	सो	२	सोइ	५अ	५अ	५अ
१-९३ छं०	असुर	सुअर[4]	२	१	१	१

१—(१) में पूर्व का पाठ 'मुसकाई' था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'समान' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'अनल' था, तदनंतर 'न' में इकार की मात्रा लगाकर पाठ 'अनिल' बनाया गया, और (२) में यही पाठ उतरा, किन्तु (१) में पुनः वह मात्रा निकाल दी गई है।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'असुर' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
१-९४ छं०	सुर	पुर[१]	१	१	१	१
१-९५ छं०	देखहि	२	देखिहि	५अ	५अ	५अ
१-९५ छं०	लरिकन्हि	२	२	लरिकन्ह	७	७
१-९६-७	भरि	भरे	२	२	१	२
१-९७-८	जिनि	जनि[२]	१	१	१	१
१-९८-३	संग	संभु[३]	१	१	१	१
१-९९-४	किछु	२	कछु	५अ	५अ	जग
१-१००-५ / १-१०२-२	लै	२	२	२	लेइ	२
१-१०० छं०	कोटि बहु	कोटिहु[४]	१	१	१	१
१-१०३-८	षटमुख[५]	२	षन्मुख	२	५अ	५अ
१-१०७-२	भलि	भल	१	१	१	१
१-१०८	भ्रमत	२	२	भ्रमति	७	७
१-११६-८	पुरुष	परेस[६]	१	१	१	१
१-१२१-६	अधरम	२	अधम	५अ	२	५अ
१-१२३-३	महा	तहाँ[७]	१	१	१	१
१-१२८-६	दिनन	२	दिनन्हि	५अ	२	२
१-१३०-३	सील	२	नीति	२	५अ	५अ

१—(१) में पूर्व का पाठ 'सुर' था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'जिनि' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'संग' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'कोटिबहु' था।

५—(१) में पूर्व का पाठ 'षन्मुख' था, उसका 'षटमुख' बनाया गया, और यही (२) में भी उतर आया।

६—(१) में पूर्व का पाठ 'पुरुष' था।

७—(१) में पूर्व का पाठ 'महा' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
१-१३८	अंतर्ध्यान	अंतरधान[१]	२	१	१	२
१-१४१-२	केहि	२	जेहि	५अ	५अ	५अ
१-१४३-१	तब	बन[२]	१	१	१	१
१-१४६	नीरनिधि	नीरधर[३]	१	१	१	१
१-१४९-६	जान हिअ	न जानहि[४]	१	१	१[५]	न जानत
१-१४९	सत भाउ	सति भाउ	१	१	१	१
१-१५१	बिलास	बिसाल[६]	१	१	१	१
१-१५२-५	जे	२	२	२	जेहि	जो
१-१५७-४	रिस भूप	रिस बस भूप	१	१	१	१
१-१६२-१	बन	जग[७]	१	२	१	१
१-१६४	जनि	२	जिनि	२	५अ	५अ
१-१६७-८	जल	जलधि[८]	२	१	१	१
१-१७३-४	पद	२	२	२	पग	२
१-१७५-२	तेहीं	जेहीं[९]	१	१	१	१
१-१७७-२	बल समेत	बल दल समेत	१	१	१	१
१-१८३ छं०	[ह्रस्वतुकांत]	२	[दीर्घतुकांत]	५अ	२	२
१-१८४-३	जानहु	२	२	२	जानेहु	२

१—(१) में पूर्व का पाठ 'अंतर्ध्यान' था।
२—(१) में पूर्व का पाठ 'तब' था।
३—(१) में पूर्व का पाठ 'नीरनिधि' था।
४—(१) में पूर्व का पाठ 'जान हिअ' था।
५—(६अ) में पूर्व का पाठ 'जानहि' था।
६—(१) में पूर्व का पाठ 'बिलास' था।
७—(१) में पूर्व का पाठ 'बन' था।
८—(१) में पूर्व का पाठ 'जल' था।
९—(१) में पूर्व का पाठ 'तेहीं' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
१-१८४ छंद	बसाई, सहाई	२	२	२	बसाइ, सहाइ	२
१-१८६ छं०	न कोउ दूजा	२	न दूजा	५अ	५अ	५अ
१-१८६ छं०	न पूजा	२	२	२	न कछु पूजा	२
१-१८७-८	फिरेउ	२	फिरे	५अ	२	५अ
१-१९२ छं०२,४	[ह्रस्व तुकांत]	२	[दीर्घ तुकांत]	५अ	२	५अ
१-१९५-२	सारद[1]	२	२	२	सादर	६
१-१९९-५	अति सोभा	२	२	सोभा अति	२	२
१-२०९	भगति	२	भगत	५अ	२	५अ
१-२१०-३	क्रोही	२	कोही	५अ	२	५अ
१-२१४-३	नृत	नृप	१	१	१	१
१-२१७-१	सुनि	मुनि[2]	१	१	१	१
१-२१७-१	चरित	चरन[3]	१	१	१	१
१-२२३	जहां जहं	२	२	२	जहं जहं	२
१-२३९-१०	आइ	२	आनि	२	५अ	५अ
१-२४०-६	जठर	जरठ[4]	२	२	१	२
१-२४१-२	सागर	सागर नागर	१	१	१	१
१-२४५	के	को[5]	१	१	१	१
१-२४९-३	हमारि	२	२	२	हमार	२
१-२५६-२	असि	२	अस	२	५अ	५अ
१-२६१-३	को	का	१	२	१	१
१-२६७-१	सिसु	ससु	१	१	१	१

१—(१) में पूर्व का पाठ 'सादर' था, जिसका 'सारद' बनाया गया, और (२) में यही पाठ उतरा।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'सुनि' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'चरित' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'जठर' था।

५—(१) में पूर्व का पाठ 'के' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
१-२६८-५-६	रिस	२	रिसि	२	५अ	५अ
१-२७०-४	लहि	लगि[१]	१	१	२	१
१-२७८-५	अति	२	२	२	बड	२
१-२८४-३	डेराना	सकाना[२]	१	१	१	१
१-२८४-३	आना	२	२	जाना	७	७
१-२८६-४	भय	भइ	२	१	१	१
१-२९२-३	तिन्ह कहं	२	२	२	तिन्ह	२
१-२९६-६	प्रीति कै	प्रीति कै	१	१	१	१
१-२९८-८	प्रीति बहु	रीति सब[३]	१	१	१	१
१-३०८-६	बंदेहु	२	बंदे	५अ	२	५अ
१-३३३-१	बूझत	२	२	२	पूंछत	६
१-३५६-३	बरनि	बर बरनि[४]	१	१	१	१
२-१०-४	बिसमउ	×	बिसमय	५अ	५अ	२
२-११	काजु	×	आजु	५अ	२	५अ
२-२०-६	फुरि	×	फुर	२	५अ	२
२-२१-७	तें	×	तिन्ह	५अ	५अ	५अ
२-२६-८	परिहरहु	×	परिहरहि	५अ	५अ	५अ
२-२७-४	हृदउ	×	हृदय	५अ	५अ	५अ
२-२८-३	भूठहु	×	भूठेहु	५अ	५अ	५अ
२-३१-१	जरत	×	२	२	जरति	२
२-३१६२	कुबरि पर सान	×	कूबरीसान	५अ	५अ	५अ

१—(१) में पूर्व का पाठ 'लहि' था।
२—(१) में पूर्व का पाठ 'डेराना' था।
३—(१) में पूर्व का पाठ 'बहु' था।
४—(१) में पूर्व का पाठ 'बरनि' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
२-३३-३	प्रिय	×	जिय	५अ	२	५अ
२-४६	कटक लेइ	×	कटक (२)	कटकई	७	७
२-५५	भूपति	×	भूपतिहि	५अ	५अ	५अ
२-६८-८	[नहीं है]	×	[है]	५अ	५अ	५अ
२-१२२-६	सोइ	×	२	सो	७	२
२-१२५-७	बिसु	×	बिस्व	५अ	५अ	५अ
२-१२६-३	जेहि	×	जिन्ह	५अ	५अ	५अ
२-१३४-१	दिगपाला	×	२	दिसिपाला	७	७
२-१३४	जाप	×	जाग	५अ	५अ	५अ
२-१३६-४	भलि	×	२	भल	७	७
२-१४२	भएउ	×	भए	२	५अ	५अ
२-१४४-७	कृपन	×	कृपिन	५अ	५अ	२
२-१४८-५	तन	×	तल	५अ	५अ	५अ
२-१५३-२	देखउ	×	देखेउ	५अ	५अ	५अ
२-१७४-४	बचनेहि	×	बचनहिं	५अ	५अ	५अ
२-१७७-३	[एक पाठ है]	×	[अन्य पाठ है]	५अ	५अ	५अ
२-१८४-७	सबु	×	सठु	५अ	५अ	५अ
२-१८९-२	बिषाद	×	बिचार	५अ	५अ	२
२-१९२	मध्य	×	मध्य गति	५अ	५अ	५अ
२-१९५	मोरि	×	२	२	मोर	२
२-२०३-८	करहिं	×	२	गरहिं	७	७
२-२०७-८	तो	×	तौ(२)	२	त	६
२-२०८-६	सुखु	×	सुखु	५अ	५अ	५अ
२-२११-४	जानिहि	×	जानहि	२	५अ	५अ
२-२१९-५	भरत भगत	×	रघुपति भगत	भगत अभगत	७	५अ
२-२२१	सब	×	२	२	बस	२

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
२-२३४	गुन	×	गुनि	५अ	५अ	५अ
२-२३५-३	मारी	×	२	२	भारी	२
२-२३६-३	बृक	×	२	बृष	७	७
२-२४१-३	मतिहि अनुहरई	×	मति अनुसरई	५अ	५अ	५अ
२-२४३-६	लुटत	×	२	२	लुठत	६
२-२४३-७	बरषहिं	×	२	२	बरिसहिं	६
२-२४६-४	दीख	×	सीय	५अ	५अ	५अ
२-२४८-८	सब	×	२	२	बस	२
२-३७२-८	मघवा निजु जानू	×	२	मघवान-जुवानू	७	७
३-५-१अ	[नहीं है]	२[1]	[है]	२	५अ	५अ
३-१६-५	कि	२	के	५अ	५अ	५अ
३-१७-६अ	[नहीं है]	२	२	२	[है][2]	६
३-१८-९ ३-३४-८	दोउ	द्वौ	२	२	१	१
३-१९-६	देहु, जाहु	२	देहिं, जाहु	२	देहिं, जाहिं	२
३-२६-५	देखी	देखा	१	१	१	देखेसि
३-२७	सुर[3]	२	प्रभु	५अ	५अ	५अ
३-२९-४	करति	२	करत	२	५अ	२

१—(१) में यहाँ पर दो अर्द्धालियाँ बढ़ाई थीं, किन्तु अब मिटा दी गई हैं।

२—(६) के अरण्य कांड में अन्य प्रक्षिप्त पंक्तियाँ भी हैं, किन्तु वे अन्य किसी प्रति में नहीं मिलतीं, इसलिए यहाँ नहीं रक्खी गई हैं, परिशिष्ट (ख) में दी गई हैं।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'प्रभु' था, उसको 'सुर' बनाया गया था, और यही (२) में भी उतर आया।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
३-३१	कहहु	२	२	२	कहेहु	६
३-३२छं०	बसेउ	बसउ	१	१	१	१
३-३४-२ अ, २ आ, २ इ	[हैं][1]	[नहीं हैं]	१	१	१	२
३-३८	ये	अति	१	१	१	२
३-३८	अति	ये	खल	५अ	५अ	२
४-६-७	तहं	२	२	२	सत	×
४-७	मोहि	भीरु	१	१	१	×
४-८-२	उभै	उभौ	२	१	१	×
४-८-६	सबे गै[2]	२	गई सब	५अ	५अ	×
५-५-७	दीखि	२	दीख	२	५अ	५अ
५-१३-८	फिरि	२	२	२	फिर	६
५-१४-१	गाढ़ी[3]	२	बाढ़ी	५अ	५अ	२
५-१४-१	बाढ़ी[4]	२	ठाढ़ी	५अ	५अ	२
५-३८	भज भजहीं जेहि संत	भजहु भजहिं जेहि संत[5]	१	१	१	१
५-४६ ६	तुम्हारि	२	२	२	तुम्हार	२

१—(१) में यहाँ पर तीन अर्द्धालियाँ बढ़ाई गई थीं, वे (२) में भी उतर आईं, यद्यपि उन पर अब (१) में हरताल लगा हुआ है।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'गई सब' था, उसके स्थान पर पाठ 'सबे गै' बनाया गया, और यही (२) पर भी उतर आया।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'बाढ़ी' था, उसको 'गाढ़ी' बनाया गया, और यही (२) में भी उतर आया।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'ठाढ़ी' था, उसको 'बाढ़ी' बनाया गया, और यही (२) में भी उतर आया।

५—(१) में पूर्व का पाठ 'भज भजहीं जेहि संत' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
५-५६	सरासन	सरानल[१]	१	[चरण ३ तथा ४ का पाठ भिन्न है]	१	१
६-३-९	कपिन्ह	२	२	२	कपि	६
६-४-५	अति[२]	२	तनु	५अ	५अ	५अ
६-६-१	गएउ	२	२	२	चला	६
६-६	सौंपि	२	सौंपहु	५अ	५अ	५अ
६-७-६	[है]	२	२	२	[नहीं है]	२
६-१५-४	मरुत	मारुत	१	१	१	१
६-१५/२	[है]	२	२	२	[नहीं है]	२
६-१६-४	बिलास	बिसाल[३]	१	१	१	१
६-१९	सुमिरि मन	२	२	२	संभारि उर	६
६-२४-१३	राखेउ	२	२	राखा	७	७
६-३०	जनकसुतहिं	२	२	२	जनकसुता	२
६-३१-१	न कछू	नहिं कछु[४]	कछु नहिं (१)	५अ	५अ	५अ
६-३२-१	कीन्ह	२	२	२	कीन्हि	२
६-३२-६	तेहि लै	२	२	२	बहु कर	६
६-३३-३	मकटहीन करहुँ महि जाई	२	२	महि अकीस करि फेरि दोहाई	७	७
६-३३	तिष्ठिति	तृषित[५]	१	१	१	१

१—(१) में पूर्व का पाठ 'सरासन' था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'तन' था, उसको 'अति' बनाया गया, और यही (२) में भी उतर आया।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'बिलास' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ था 'न कछू' था।

५—(१) में पूर्व का पाठ 'तिष्ठिति' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
६-३७-८	आवत	२	२	आवइ	७	२
६-४०-१	सुना	२	२	२	सुनेउ	२
६-४१-८	चलावहिं[1]	२	ढहावहिं	५अ	५अ	५अ
६-४१-छं०	मंदिरन्ह	२	२	२	मंदिरन्हि	६
६-४३	सुना	२	२	सुने कि	सुनेउ कि	६
६-४३	रन	२	२	समर	७	७
६-४५	दलमलि[2]	२	२	२	दलमलेउ	६
६-४६-६	लरत	२	२	२	लरहिं	२
६-४६-६	मानहिं	२	२	२	मानत	२
६-४८	तासों	२	×	२	तेहि सन	६
६-५३	जनु	२	२	२	जिमि	६
६-५३	रह्यो	२	२	२	रह	६
६-६४-९	तैं	२	२	२	तुम्ह	६
६-६९-२	कियो	२	२	करि	७	७
६-७३-१०	सैं	२	२	सन	७	२
६-७३-१२	एक	२	२	रामु	७	७
६-७३	जासु	२	२	जाकर	७	७
६-७४-८	फिरायो, देखरायो	२	२	फिरावा, देखरावा	७	७
६-७६-१५	अति	करि	१	१	१	१
६-७७-१	उठायो, आयो	२	२	उठावा, आवा	७	×
६-७७-१	पुनि	२	२	२	तेहि	६

१—(१) में पूर्व का पाठ 'ढहावहिं' था, उसको 'चलावहिं' बनाया गया, और यही (२) में भी उतर आया।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'दलमले' था उसको 'दलमलि' बनाया गया, और यही (२) में भी उतर आया।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
६-७९-७	मरुत	२	२	२	पवनु	२
६-८५-८	मारा	२	मारेउ	५अ	५अ	५अ
६-८५-छं०	क्रुद्ध	२	२	कोपि	७	×
६-८९-८	अनुज सहित बहु कोसल-धनी	२	२	बहु अंगद लछिमन कपिधनी	७	७
६-९३	चली बिभीषन सनमुख	२	२	सनमुख चली बिभीषनहि	७	७
६-९८-६	ठएऊ, भएऊ	गएऊ, भएऊ[1]	१	१	गए, भए	६
६-९८-६	नखन्हि	२	२	२	नखन्ह	६
६-९८-१५	भालु कपि	भालु पति[2]	१	१	१	१
६-९९-४	कहा	२	२	काह	७	७
६-१०८-१०	कीस भालु	भालु कीस[3]	२	१	१	१
६-११५-६	मंथन पर मंदर	मंदर पर मंदर[4]	१	१	१	१
६-१२०	पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी	२	२	बहुरि त्रिबेनी आइ प्रभु	७	७
६-१२७	सहित बिप्रन्ह कहँ	२	२	सहित महि-सुरन्ह कहुँ	समेत मही सुरन्ह	७
७-५-छं०	आरति	२	२	आरत	७	७
७-२७	गृह प्रति लिखे	२	२	२	प्रति रचि लिखे	प्रतिमा रचे

१—(१) में पूर्व का पाठ 'ठएऊ', 'भएऊ' था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'भालु कपि' था।

३—(१) में पूर्व का पाठ 'कीस भालु' था।

४—(१) में पूर्व का पाठ 'मंथर पर मंदर' था।

	(२)	(१)	(५अ)	(७)	(६)	(८)
७-३२-८	ज्ञान जोति	ज्ञान जोति[1]	१	१	१	ज्ञान जोग
७-३५-१	की	अति[2]	१	१	१	१
७-६०	मो	२	मोहिं	५अ	५अ	५अ
७-६७-१	खोज सकल दिसि धाए	२	२	२	खोजन सकल सिधाए	२
७-७९-७	चलिउं	चलेउं	१	१	१	१

१—(१) में पूर्व का पाठ 'ज्ञान जोति' था।

२—(१) में पूर्व का पाठ 'की' था।

परिशिष्ट (ख)

सं० १७०४ की प्रति के प्रक्षिप्त अंश

(१) ३-१-१ के बाद अधिक :—

बिनु पराध प्रभु हतै न काहू। अवसर परे ग्रसै ससि राहू।
जब प्रभु लीन्ह सींक धनुबाना। क्रोध जानि भा अनल समाना।

(२) ३-२-८ के बाद अधिक :—

जिमि जिमि भाजत सक्रसुत ब्याकुल अति दुखदीन।
तिमि तिमि धावत रामसर पाछे परम प्रबीन॥

बचहि उरग बरु ग्रसे खगेसा। रघुबर सर छुटि बचब अँदेसा।

(३) ३-२-९ के बाद अधिक :—

दूरिहि ते कहि प्रभु प्रभुताई। भजे जात बहु बिधि समुझाई।

(४) ३-४-४ के बाद अधिक :—

जनम जनम तव पद सुखकंदा। बढ़ै प्रेम चकोर जिमि चंदा।
देखि राम मुनि बिनय प्रनामा। बिबिध भाँति पाएउ बिस्रामा।

(५) ३-५-१ के बाद अधिक :—

जो सिय सकल लोक सुखदाता। अखिल लोक ब्रह्मांड कि माता।
तेउ पाइ मुनिबर मुनिभामिनि। सुखी भई कुमुदिनि जिमि जामिनि।

(६) ३-५-३ के बाद अधिक :—

जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं। गरुड़ जानि जिमि पन्नग जाहीं।
ऐसे बसन बिचित्र सुठि दिए सीय कहं आनि।
सनमानो प्रिय बचन कहि प्रीति न जाइ बखानि॥

(७) ३-५-११ के बाद अधिक :—

उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहौं समुझाइ।
आगे सुनहिं ते भव तरहिं सुनहु सीय चितु लाइ॥

(८) ३-६ के बाद अधिक :—

मुनिहु कि अस्तुति कीन्ह प्रभु दीन्ह सुभग बरदान।
सुमन वृष्टि नभ संकुल जय जय कृपानिधान॥

(९) ३-७-५ के बाद अधिक :—

आश्रम बिपुल देखि मग माहीं। देव सदन तेहि पटतर नाहीं।

बहु तड़ाग सुंदरि अवँराई। भाँति भाँति सब मुनिन्ह लगाई।
तेहि दिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा। सकल मुनिन्ह मिलि कीन्ह सुपासा।
आनि सुआसन मुदित मन पूजि पहुनई कीन्ह।
कंद मूल फल अमिय सम आनि राम कहँ दीन्ह॥
अनुज सीय सह भोजन कीन्हा। जो जेहि भाव सुभग बर दीन्हा।
होत प्रभात मुनिहु सिरु नावा। आसिरबाद सबन्हि सन पावा।
सुमिरि उमा सिव सिद्धि गनेसा। पुनि प्रभु चले सुनहु उरगेसा।
बन अनेक सुन्दर गिरि नाना। नावत चले जाहिं भगवाना।

(१०) ३-७-६ के दूसरे चरण तथा ३-६-७ के स्थान पर :—

गरजत घोर कठोर रिसाला।
रूप भयंकर मानहु काला। बेगवंत धायउ जिमि ब्याला।
गगन देव मुनि किन्नर नाना। तेहि छन हृदय हारि कछु माना।
तुरतहि सो सीतहि लै चलेऊ। राम हृदय कछु बिसमय भएऊ।
समुझा हृदय केकई करनी। कहा अनुज सन बहु बिधि बरनी।
बहुरि लखन रघुबरहि प्रबोधा। पाँच बान छाँड़े कर क्रोधा।
भए क्रुद्ध लखन संधानि धनु मारि तेहि ब्याकुल कियो।
पुनि उठा निसिचर राखि सीतहि सूल लै छाँड़त भयो॥
जनु काल दंड कराल धावा बिकल सब खग मृग भए।
धनु तानि श्री रघुबंसमनि पुनि मारि तन जर्जर किए॥
बहुरि एक सर मारा परा धरनि धुनि माथ।
उठेउ प्रबल पुनि गरजेउ चलेउ जहाँ रघुनाथ॥
ऐसै कहत निसाचर धावा। अब नहिं बचहु तुम्हहि मैं खावा।
आव प्रबल एहि बिधि जनु भूधर। होइहि काह कहहिं ब्याकुल सुर।
तासु तेज सत मरुत समाना। टूटहिं तरु उड़ाहिं पाषाना।
जीव जन्तु जहँ लगि रहे जेते। ब्याकुल मानि चले तहँ लेते।
उरग समान जोरि सर साता। आवत ही रघुबीर निपाता।
तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा। देखि दुखी निज धाम पठावा।
तासु अस्थि गाड़ेउ प्रभु खनी। देवन्ह मुदित दुन्दुभी हनी।

सीता आइ चरन लपटानी। अनुज सहित तब चले भवानी।

(११) ३-१०-८ के बाद अधिक :—

सोउ प्रिय अति पातकी जिन्ह कबहुँ प्रभु सुमिरन कर्‍यो।
ते आजु मैं जिन नयन देखिहौं पुरित पुलकित हिय भर्‍यो॥
जे पद सरोज अनेक मुनि कर ध्यान कबहुँ न आवहीं।
ते राम श्री रघुबंसमनि प्रभु प्रेम तें सुख पावहीं॥
पन्नगारि सुनु प्रेम सम भजन न दूसर आन।
यह बिचारि मुनि पुनि पुनि करत राम गुनगान॥

(१२) ३-१०-१६ के बाद अधिक :—

राम सु साहेब संत प्रिय सेवक दुख दारिद दवन।
मुनि सन प्रभु कह आइ उठु उठु द्विज मम प्रान सम॥

(१३) ३-११-२० के बाद अधिक :—

माया बस जग जीव रहहिं बिबस संतत मगन।
तिमि लागहु मोहिं प्रीय करुनाकर सुंदर सुखद॥

(१४) ३-११-२१ के बाद अधिक :—

राम भगति तजि चह कल्याना। सो नर अधम सृगाल समाना।

(१५) ३-१२-१ के बाद अधिक :—

मुनि प्रनाम करि कह कर जोरी। सुनहु नाथ कछु बिनती मोरी।

(१६) ३-१२-३ के बाद अधिक :—

चले जात मग तव पद कंजा। देखिहौं जो बिराध मद गंजा।

(१७) ३-१२-५ के बाद अधिक :—

आश्रम देखि महा सुचि सुंदर। सरित सरोवर हरषित भूधर।
बनचर जलचर जीव जहीं ते। बैर न करहिं प्रीति सबहीं ते।
तरुबर बिबिध बिहंगमय बोलत बिबिध प्रकार।
बसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं महिमा गुन आगार॥

(१८) ३-१२ के बाद अधिक :—

पाइ सुथल जल हरषित मीना। पारसु पाइ सुखी जिमि दीना।

(१९) ३-१३-३ के बाद अधिक :—

निसिचर अब न बसहिं मुनिराई। जिमि पंकज बन हिम रितु आई।
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी। पूछेउ नाथ मोहिं का जानी।

(२०) ३-१३-५ के बाद अधिक :—

भृकुटी निरखत नाथ तव रहत सदा पद कमल तर।
जिन डारे निज उदर महँ बिबिध बिधाता सिद्ध हर॥
अति कराल सब पर जगु जाना। औरो कहा सुनिअ भगवाना।

(२१) ३-१३-१३ के बाद अधिक :—

जेहि जीव पर तव मया रहत तुम्हहिं संतत बिबस।
तिन्हहुँ कि महिम न जान सेवक तुम्ह कहँ प्रान प्रिय॥

(२२) ३-१३-१५ के बाद अधिक :—

गोदावरि पुनीत तहँ बहई। चारिउ जुग प्रसिद्ध सो अहई।

(२३) ३-१३-१८ के बाद अधिक :—

दिव्य लता द्रुम प्रभु मन भाए। निरखि राम तेउ भए सुहाए।
लखन राम सिय चरन निहारी। कानन अघ धा भा सुखकारी।

(२४) ३-१७-१ के बाद अधिक :—

नाथ सुने गत मम संदेहा। भएउ ज्ञान उपजेउ नव नेहा।
अनुज बचन सुनि प्रभु मन भाए। हरषि राम निज हृदय लगाए।

(२५) ३-१७-६ के बाद अधिक :—

अधम निसाचर कुटिल अति चली करन उपहास।
सुनु खगेस भावी प्रबल भा चह निसिचर नास॥

(२६) ३-१७-१९ के बाद अधिक :—

बिथुरे केस रदन बिकराला। भृकुटी कुटिल करन लगि गाला।

(२७) ३-१८-३ के बाद अधिक :—

चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे। जिन्ह सपनेहु रन पीठि न दीन्हे।

(२८) ३-१८-६ के बाद अधिक :—

निज निज बल सब मिलि कहहिं एकहिं एक सुनाइ।
बाजन लाग जुझाऊ हरष न हृदय समाइ॥

(२९) ३-१८-९ के बाद अधिक :—

कोउ कह सुनहु सत्य हम कहहीं। कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं।
एकै कहा मष्ट भै रहहू। खर के आगे अस जनि कहहू।
बहु बिधि कहत बचन रनधीरा। आए सकल जहाँ रघुबीरा।

(३०) ३-१९-७ के बाद अधिक :—

भए काल बस मूढ़ सब जानहिं नहिं रघुबीर।
मसक फूँकि की मेरु उड़ सुनहु गरुड़ मतिधीर॥

(३१) ३-२२-८ के बाद अधिक :—

अति सुकुमारि पियारि पटतर जो गुन आहि कोउ।
मैं मन दीख बिचारि जहाँ रहै तेहि सम न कोउ॥
अजहुँ जाइ देखब तुम्ह तबहीं। होइहौ बिकल तासु बस तबहीं।
जीवनमुक्त लोक बस ताके। दसमुख सुनु सुंदरि असि ताके।

(३२) ३-२२-१० के बाद अधिक :—

बिनु अपराध असि हाल हमारी। अपराधी किमि बचहि सुरारी।

(३३) ३-२२-१२ के बाद अधिक :—

भएउ सोच मन नहिं बिश्रामा। बीतहिं पल मानहुं सत जामा।

(३४) ३-२३-७ के बाद अधिक :—

रथ अनूप जोरे खर चारी। बेगवंत इमि बिधि उरगारी।
उरगारि सम अति बेगु बरनत जाइ नहिं उपमा कही।
सिर छत्र सोभित स्याम धन जनु चँवर सेत बिराजही॥
एहि भाँति नाँघत सरित सैल अनेक बापी सोहहीं।
बन बाग उपबन बाटिका सुचि नगर मुनिमन मोहहीं॥
बहु तड़ाग सुचि बिहग मृग बोलत बिबिध प्रकार।
एहि बिधि आएउ सिंधु तट सत जोजन बिस्तार॥
सुंदर जीव बिबिध बिधि जाती। करहिं कोलाहल दिनु अरु राती।
कूदहिं ते गर्जहिं घन नाईं। महाबली बल बरनि न जाई।
कनक बालु सुंदर सुखदाई। बैठहिं सकल जंतु तहँ जाई।
तेहि पर दिब्य लता द्रुम लागे। जेहि देखत मुनि मनु अनुरागे।

गुहा बिबिध बिधि रहहिं बनाई। बरनत सारद मति सकुचाई।
चाहिय जहाँ रिषिन्ह कर बासा। तहाँ निसाचर करहिं निवासा।
दसमुख देखि सकल सकुचाने। जे जड़ जीव सजीव पराने।

(३५) ३-३-५ के बाद अधिक :—

रा अस नाम सुनत दसकंधर। रहत प्रान नहिं मम उर अंतर।

(३६) ३-२७-९ के बाद अधिक :—

अस कहि चले तहाँ प्रभु जहाँ कपट मृग नीच।
देव हरष बिस्मउ बिबस चातक बरषा बीच॥

(३७) ३-२८-५ के बाद अधिक :—

चहुं दिसि रेख खचाइ अहीसा। बारहिं बार नाइ पद सीसा।

(३८) ३-२८-६ के बाद अधिक :—

चितवहिं लखन सीय फिरि कैसे। तजत बच्छ निज मातुहिं जैसे।
एक डर डरपत राम के दूसरि सीय अकेलि।
लखन तेज तन हत भयो जिमि डाढ़ी दव बेलि॥

(३९) ३-२८-१० के बाद अधिक :—

करि अनेक बिधि छल चतुराई। माँगेउ भीख दसानन जाई।
अतिथि जानि सिय कन्द मूल फल। देन लगी तेहि कीन्ह बहुरि छल।
कह दसमुख सुनु सुंदरि बानी। बाँधी भीख न लेहुं सयानी।
बिधि गति बाम काल कठिनाई। रेख नाँघि सिय बाहर आई।
बिस्वभरनि अघ दल दलनि करनि सकल सुरकाज।
समुझि परी नहिं समय तेहि बंचक सती समाज॥

(४०) ३-२८-१५ के बाद अधिक :—

बायस कर चह खगपति समता। सिंधु समान होहिं किमि सरिता।
खरि कि होइ सुरधेनु समाना। जाहि भवन निज सुनु अज्ञाना।

(४१) ३-२९-३ के बाद अधिक :—

कैकेइ के मन जो कछु रहेऊ। सो बिधि आनु मोहिं दुख दएऊ।
पंचवटी के खग मृग जाती। दुखी भए जलचर बहु भांती।

(४२) ३-२९-१४ के बाद अधिक :—

मम भुज बल नहिं जानत आवत तपिन सहाइ।
समर चढ़ै तो एहि हतौं जियत न निज थल जाइ॥

(४३) ३-२९-२० के बाद अधिक :—

दसमुख उठि कृत सर संधाना। गीध आइ काटेउ धनुबाना।
जेहि रावन निज बस किए मुनि गन सिद्ध सुरेस।
तेहि रावन सन समर कर धीर बीर गिद्धेस॥
सुस्त भए पुनि उठि सो धावा। मरै गीध सनमुख नहिं आवा।
कीन्हेसि बहु जब जुद्ध खगेसा। थकित भएउ तब जरठ गिधेसा।

(४४) ३-२९-१ के बाद अधिक :—

उहाँ बिधाता मन अनुमाना। सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना।
तात जनक तनया पहिं जाहू। सुधि न पाव जिमि निसिचर नाहू।
अस कहि बिधि सुंदर हबि आनी। सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी।
एहि भछन कृत छुधा न प्यासा। बरष सहस एह संसय नासा।
सो प्रसाद तेइ आयसु पाई। चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई।
कछु बासव निज माया मोई। रच्छक रहे गए तहं सोई।
तदपि डरत सीता पहिं आएउ। करि प्रनाम निज नाम सुनाएउ।
निसचय जानि सुरेस सुजाना। पिता जनक दसरथ सम माना।
करि परितोष दूरि करि सोका। हबिय खवाइ गएउ निज लोका।

(४५) ३-३०-३ के बाद अधिक :—

अहह तात भल कीन्हेहु नाहीं। सीय बिना मम जीवनु नाहीं।
एहि तें कवनि बिपति बड़ि भाई। छांड़ेहु सीय काननहिं आई।

(४६) ३-३०-६ के बाद अधिक :—

कानन रहेउ तड़ाग इव चक चकई सिय राम।
रावन निसि बिछुरन भएउ सुख बीते चहुँ जाम॥
पर दुख हरन सो कस दुख ताही। भा बिषाद तिन्हहूँ मन माहीं।

(४७) ३-३०-१५ के बाद अधिक :—

फनि मनि हीन मीन जिमि त्यागत सीतल बारि।
तिमि ब्याकुल भए लखन तहं रघुबर दसा निहारि॥

धरि उर धीर बुझावहिं रामहिं। तजहिं न सोक अधिक सुख धामहिं।

(४८) ३-३०-१७ के बाद अधिक :—

सरवर अमित नदी गिरि खोहा। बहु बिधि लखन राम तहँ जोहा।
सोच हृदय कछु कहि नहिं आवा। टूट धनुष सर आगे पावा।
कहुँ कहुँ सोनित देखिअ कैसे। सावन जल भर डाबर जैसे।
कहत राम लछिमनहिं बुझाई। काहू कीन्ह जुद्ध एहि ठाँई।

(४९) ३-३६-९ के बाद अधिक :—

सब प्रकार तव भाग बड़ मम चरनन्हि अनुराग।
तव महिमा जेहि उर बसिहि तासु परम जग भाग॥

बचन सुनत सबरी हरषाई। पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई।

(५०) ३-३६-११ के बाद अधिक :—

रिषि मतंग महिमा गुन भारी। जीव चराचर रहत सुखारी।
बैर न कर काहू सन कोऊ। जा सनु बैर प्रीति कर सोऊ।
सिखर सुहावन कानन फूले। खग मृग जीव जंतु अनुकूले।
करहु सफल श्रम सब कर जाई। तहं होइहिं सुग्रीव मिताई।

(५१) ४-८-१ के बाद अधिक :—

बालि दीख सुग्रीवहि ठाढ़ा। हृदय क्रोध बहु बिधि पुनि बाढ़ा।

(५२) ४-११-२ के बाद अधिक :—

पुनि पुनि तासु सीस उर धरई। बदन बिलोकि हृदय मो हनई।
मैं पति तुम्हहि बहुत समुझावा। कालबस्य कछु मनहिं न भावा।
अंगद कहं कछु कहइ न पाएहु। बीचहि सुरपुर प्रान पठाएहु।

(५३) ४-२७-५ के बाद अधिक :—

जो रघुपति चरनन चित लावै। तेहि सम आन न धन्य कहावै।

(५४) ४-२७-६ के बाद अधिक :—

तेहि देखि सब चले पराई। ठाढ़े कीन्ह ते संपथ देवाई।

(५५) ४-२८-१ के बाद अधिक :—

जो कछु करै राम कर काजू। तेहि सम धन्य आन नहिं आजू।